अकटा मिसिया

(मैथिली कथा संग्रह)

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

प्रकाशक

योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’
ब्लॉक 8 फ्लैट 2बी
डायमन्ड सिटी नॉर्थ
कोलकाता 700055

ISBN

First e-book Edition

अकटा मिसिया

Acta Misiya : A collection of short stories in Maithili
By Yogendra Pathak Viyogi
e-mail : viyogi@gmail.com
mobile : +91.9831037532

Price ₹ 70 (India) / $0.95 (Abroad)

इंटरनेट संस्करणक भूमिका

अकटा मिसिया कथा संग्रह 2016 मे प्रकाशित भेल छलैक। किछु बिलहि देल आ किछु बिकाइयो गेल। किछु प्रति हमरा लग बचल अछि तकरा दूर दराजक पाठक तक पहुँचाएब कठिन। पाठक इंटरनेट पर तकैत छथि से नहि भेटतनि तऽ निरास होइत छथि। एकरे पूर्ति लेल फेर एहि संग्रह कें प्रकाशित करा रहल छी जे पेपरबैक सेहो इंटरनेट पर भेटि जाएत। आशा करैत छी जे एहि विधि सँ बेसी पाठक लाभान्वित होएताह।

योगेन्द्र पाठक वियोगी

फाल्गुन पूर्णिमा, 2022

सूची

1. प्रशिक्षु 5

2. नारी विजय (एक) 14

3. नारी विजय (दू) 17

4. स्वयंवर 20

5. कुहेस 29

6. चार्वाक 40

7. जनम अवधि हम रूप निहारल 50

8. देववाणी 63

9. कतेक जोकर 72

10. दश हाथक दलान 112

11. बाँझ 118

12. हमहूँ जेबै गाम 131

प्रशिक्षु

आइ हमर परीक्षाक दिन छी। पछिला तीन मास सँ हम खखन गुरुजी सँ टरेनिंग लऽ रहल छी। ऐ तीन मास मे अन्हरिया राति कें कहियो ठीक सँ सुतलौं नै। ई काजे एहन जे एकर टरेनिंग रातिए मे होइ छै। आब हमरा रतिचर बनबाक अछि। एसगर तँ हम दिनो देखार सरपतिया चऽर मे कने मने हाथ साफ करैक कोशिश करिते रहै छी। सरपतिया चऽर छैहो टोल परोस सँ दूर आ ओतए कएकटा आरि धूर उँचगर। दुपहरिया मे ओमहर आब कियो नै जाइ छै तें एकान्त रहै छै आ हम कने मने प्रैक्टिस कऽ लै छी। मुदा गुरुजीक संग तँ अन्हरिये राति टा अवसर भेटैए।

सुनै छिऐ बच्चा मे खखन गुरूजी संसकिरीत इसकूल जाइ छलै पढ़ै लए। आ से कहाँदन पंडितजीक ओ बेस प्रियगर चटिया भऽ गेलै। बाभनक बच्चा सब सँ नीक पढ़बा मे। बुढ़बा सब खिस्सा कहै छै जे एक बेर पंडितजी कें सुना कए कियो अपने दियादबाद हँसी केने छलखिन जे आब एइ गाम मे राड़ो बोनिहार सब पंडिताइ करतै। तै पर पंडितजी खिसिया कए ओकरा डँटने छलखिन जे अपने तँ ब्राह्मणक कुल मे जन्म लऽ कए भट्ठो नहि धेलहुँ तँ अहाँ की बुझबै जे मंडन मिसरक दरवज्जा पर सूगा सेहो संस्कृत बजैत छलनि। हमरा गाम मे राड़ बोनिहार आ कि डोम चमार सब संस्कृत पढ़ए एहि सँ गामक नाम बढ़बे करतैक छोट नहि हेतैक।

से खखन गुरूजी दू तीन बरख ओहि इसकूल गेलैक। मुदा धीरे धीरे ओकरा ज्ञान होअए लगलैक जे संसकिरीतो पढ़त तैयो काज तँ हरबाहिए के करऽ पड़तैक आ कि गामे गामे भार उठाओत। फेर एक दिन छोड़ि देलकै इसकूल जाएब। पंडितजी कतबो बुझेलखिन मुदा ओ अपन जिद नहि छोड़लक। आ फेर ओ हमरा जे विद्या सिखबै अछि तै मे कोना पारंगत भेल से ककरो नै बुझल छै।

खखन गुरुजी जेहने काबिल तेहने कड़गर। ओकरा एको रत्ती दया माया नै छै। एकटा गलती भेल कि चट दऽ गट्टे पर चोट करत। हाड़क चोट, सर्वांग शरीर झनझना जाइए। लेकिन बरदास करै छी। आखिर ओ हमरे सिखबै लए ने अपनौ सूतब छोड़ि निशाभाग राति

मे हमरा संग रहैए। भोरबा सँ पहिने तऽ हम सब कहियो ने घुरै छी। ओ जखन एते कष्ट सहैए तऽ हम तऽ विद्यार्थिए भेलौं।

खखन गुरुजी प्रैक्टिसक टाइम मे हमरा पर नजरि गड़ौनै रहैए। कनियो हाथ उछटलै कि चट सँ हमर गट्टा झनझ्ना जाइए। एको रत्ती शबद भेलै आ कि कनपट्टी पर सोंटल थापड़।

ओकर नाक, कान आ आँखि बड़ तेज छै। साओनक अन्हरिया होउ कि बैसाखक दुपहरिया, ओकरा एके रंग सुझै छै। आ की मजाल ओकरा लग किओ ठोरो हिला दिअए। दश लग्गा हटल नवकनियाँक फुसफुसी कान सटौने ओकर घरबाला नै सूनौ मुदा खखन सूनि लै छै। आ तहिना नाक। बिलाड़ियो सँ तेज। मनुक्खक गंध ओकरा बेसी लगै छै। आ पएर की साधल ? लगै छै जेना तूर के गद्दा बन्हने होइ। कतबो झटकि कए चलौ एको रत्ती शबद नै।

हमरा बराबरि ओ सिखबैए ऐ गुण सबहक नकल करए। कोशिश तऽ हम कैए रहल छी तखन गुरु जकाँ एत्ते जल्दी कोना हेबै?

एक दिन हमरा ओ 'एक' अंकक गुण सिखबै लागल। हम कहलियै गुरु हौ एत्ते अकिल रहितै तऽ नेङरा मास्टरक इसकूल सँ किए भगितियै? ओतए तऽ मासे मास पनरह टाका सेहो भेटै छलै।

खखन गुरुजी एक चमेटा लगेलक आ कहलक जे रे बुड़बक चुपचाप सुन, ई बड़का गुड़ छियै। जोड़, घटाव, गुणा, भाग किच्छो तऽ पढ़ने हेबही ने रे। आब देखही। दूटा 'एक' लीख दही। बीच मे जोड़ देबही तऽ दू हेतै, घटाव देबही तऽ हेतै शुन्ना। गुणा दहिक की भाग एक एके रहतै। एना दूटा एक सँ बेसी सँ बेसी भेटलौ दू। आब देख - दूटा 'एक' के बीच मे किच्छो नै दही। भऽ गेलौ ने एगारह। आब बता दू मे कत्ते जोड़बही जे हेतै एगारह ? हमरा की एते बूझल अइ? तोंही कहि दहक ने। खखन गुरुजी कने हँसऽ लगैए हमरा अज्ञान पर। फेर बुझबैए। दू मे नौ जोड़बही तऽ एगारह हेतै। दू मे नौ जोड़ही कि नौ मे दू जोड़ही बात एके। से खियाल राख। हमरा सँ जे विद्या सिखै छें तै मे नौ दू एगारह के

गुणक बड़ काज छै। आँखि किछु देखलकौ, कान किछु सुनलकौ कि चट सँ नौ दू एगारह। से कखनौ सोझ रस्ते नै। बाड़ी झाड़ी तड़पब जरूरी। सोझ रस्ते गेनाइ कें तऽ बुड़बकहा सब 'जौगिंग' कहै छै।

हम कने मने बुझै छिऐ। कखनौ कए सोचौ छी बेकारे ऐ विद्या मे एलौं। भने तँ नेङरा मास्टरक इसकूल छलै। अनेरे मासे मासे टको भेटै छलै। पढ़ै मे मोन तऽ लगै छलै मुदा की कहू ओतऽ हाथ पएर चलबै के कोनो उदोगे नै छलै। बैसल बैसल अकच्छ भऽ जाइ छलौं। आ फेर उकठ करैके मोन भऽ जाइ छल। एही उकठ मे जे एक दिन गुलेती चलौलियै से बभनटोलीक चन्नर के आँखिए मे लगलै। चन्नर नेङरा मास्टरक मुहलग्गू विद्यार्थी। खूब पिटाइ लागल छल। एक बेर अपने टोल के करियाक टाँग बेंच मे फँसा देलियै से ओकरा तेहन मोच पड़लै जे मास दिन तक नेङराइते रहलै। लेकिन जहिया नेङरा मास्टर अपनै कुर्सी सँ उनटि गेलै तहिया छूटि गेल हमर इसकूल।

खखन गुरुजी एक दिन हमरा सिखबऽ लगैए कौआ सन चेष्टा आ बगुला सन ध्यानबला बात सब। ओ संसकिरीत के एकटा फकरा पढ़ै छै।

गुरुजी पुछैए एकर माने बुझलही ? हम बौक भेल रहै छी। नेङरा मास्टर सेहो कहियो कहियो ई पढ़बै छलै जे विद्यार्थी कें बगुला सन ध्यान आ कुकुर सन नीन हेबाक चाही। मुदा हमरा विद्या मे एकर कोन काज ? से खखन गुरुजी कें ने बूझल छै। ओ हमरा दुलार सँ बुझबैए जे तोरा विद्या मे इसकुलिया विद्यार्थी सँ बेसी ऐ गुणक काज छै। देह मे कत्तौ कखनौ माटि नहि लागऽ दहीक। माने जे लोक सुँघियो कए नहि बूझि पाबए जे टुनमा राति कए कोन काज करै छै। रे बुरिबक देखै नै छिही मुखियाजी आ नन्हकूबाबू ठिकेदार कत्ते उज्जर दपदप कपड़ा पहिरै छै। आ बलौक सँ गामक काज लेल जे टाका अबै छै से चोरबै मे कत्ते माहिर छै। टाका भेटतै एक लाख एक नम्मर पक्का ईंटाक खरंजा बनबै लए आ खर्च करतै दश हजार जै मे टुटलाहा झरलाहा ईंटाक खरंजा बना दै छै आ बाकी टाका दूनू गोटे बाँटि लै छै। ई भेलै दिन देखारक डकैती आ तकरा झँपै लए उज्जर दपदप पोशाक।

ध्यान तोरा बगुला सन चाही, तखने काज मे फल भेटतौ। आ निन्न तऽ कुकुरो सँ पातर। तोरा काज पर जाए पड़तौ निशाभाग राति मे। जँ निन्ने नै टुटलौ तखन तऽ फेर अगिले रातिक आशा। दिन मे तऽ तोहर कोनो काज हेतौ नै। स्वल्पहारी बनऽ पड़तौ। जै राति काज पर बहरेमे से कमे खा कए। तखन मोन हल्लुक रहतौ आ नौ दू एगारह के बेर फुर्ती रहतौ। गृहत्यागी तऽ बुझिए गेलही। जखन काज मे गाम गमाइत जेबही तखन कहिया घूरि कए एबही से के कहए। अनेरे कहै छै रजबुधि सँ चोरबुधि बड़ भारी।

आइ हमर पहिल परीक्षाक दिन छी। खखन गुरुजीक ठीक कएल दिन - पूसक अमावस्या। दुर जो, दिन किए कहबै, परीक्षाक राति छी। हम तीन चारि दिन सँ सौंसे गाम मे टहलि आएल छी। सब तरहक बात विचारि हम एकटा घर टेबल : लूटन पंडितक उतरबरिया एकचारी। ऐ घर मे एखनौ झाँझनक टाट लागल छै। आब तऽ सब भितघर बनबैए। गुरुजीक कहब छैन टटघर बेसी नीक खास कए नवसिखुआ लए। कात मे आलूक बारी छै। आलू खूब लतरल आ तै मे सरिसो छीटल। सरिसो सेहो बेस झमटगर भऽ गेल छै। गुरुजी बड़डे खुसी छै जे चेला नीक जगह टेबलें। सबसँ नीक बात जे एकरा घर मे कुकुर नै छै। ओना खखन गुरुजी कहने छथिन कुकुर सधबाक टोना अगिला बेर सिखा देथिन।

मचान पर सँ बेर बेर उठि कए हम अकास दिस तकै छी। निन्न तऽ आँखि सँ पड़ाएले ऐ स्वान निद्राक कोन काज। डंडी तराजू ठीक माथक ऊपर आबि गेलैए। हम काली थान दिस मुह कऽ कए मैया कें गोर लगै छी आ विदा भऽ जाइ छी परीक्षा दै लए। नेङरा मास्टरक इसकूल मे परीक्षा दै लए जाइ छलौं तऽ संग मे एकटा पेन रहै छल। ऐ परीक्षाक लेल खाली बीत भरिक खंती।

डेगो दैत आ पएरो मारैत हम आलूक बाड़ी मे पहुँचि जाइ छी। एक बेर चारू कात ताकि लै छी। सत्ते अन्हार मे हमरो आब खूब सूझऽ लागलए। कत्तौ कोनो टोह नै। पूरा गाम निसबद्द। जय माँ काली।

हम चूकीमाली बैसि कए टाट मे कान सटा दै छिऐ। ई की ? एकटा फाँक सँ डिबियाक इजोत अबै छै। .... आरो आश्चर्य। ई तऽ लूटन पंडित के बेटा चुनमुनमाक आवाज छिऐ “ए

चोर एबऽ तऽ आबऽ, ए चोर एबऽ तऽ आबऽ, ए चोर एबऽ तऽ आबऽ....''। बाप रे ई तँ जेना चौलेंज करैए। एकरा कोना पता लगलै ?

हम थकमका जाइ छी। हे माँ काली, की पहिल परीक्षाक राति हमरा घुरिये कए जाए पड़त ? हम कने काल निसास बंद केने बैसल रहै छी। फेर रहल नै जाइए। खंती बहार कऽ कए आस्ते आस्ते दावा मे भूर करए लगै छी। ई की चमत्कार ? डिबियो मिझा गेलै आ आवाजो बन्न। एकर तऽ दुइए टा माने भऽ सकै छै - आ तऽ ओ बच्चा सत्ते सूति रहल डिबिया मिझा कए आ नै तऽ ओकरा हमर किरिया कलापक भान भऽ गेलैए आ ओ जानि कए डिबिया मिझा देलकै आ घात लगा कए बैसलए। भऽ सकैए खंतीक शबद ओ सूनि लेलक। कान हमरे टा तँ नै तेज ऐ, अनको तँ भऽ सकै छै।

हम इतस्ततः मे पड़ि जाइ छी। परीक्षाक घड़ी मे लोक एकदम एसगर भए जाइए। नीक की बेजाए सबटा फैसला अपने करबाक छै। आगू पाछू कियो नै। नेङरा मास्टरक इसकूल मे तऽ परीक्षोक दिन कोठरी भरल रहै छलै बच्चा सब सँ। सब एक दोसरा सँ फुसफुसा कए पूछैत रहै छलै। चीट सेहो एमहर ओमहर फेकाइते रहै छलै। एत्तऽ तऽ हम एसगरे छी। मझधार मे फँसल एकदम अकेला।

जय माँ काली। हम निश्चय करै छी ऐ राति पहिल परीक्षाक राति घूरि कए नै जाएब। पकड़ा जाएब, मारि खाएब, गाम मे बदनाम हैब, सब बरदास मुदा घूरि कए नै जाएब। खखन गुरुजी कें कोन मुह देखेबै ? ओ कहत - चललें चोरि करए आ हिम्मत छौहे नै। मोन पड़ैए नेङरा मास्टर एक दिन पढ़बै छलै ''सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं''। रे चुनमुनमा तोहर चौलेंज हमरा स्वीकार।

हम जल्दी जल्दी खंती चलबऽ लगै छी। जत्ते इलिम खखन गुरुजी सिखौने छै से सबटा लगा दै छिऐ। बेर बेर ओ सिखाबए टाटक घर मे दाबा मे सेन्ह कटै काल सबसँ बेसी ध्यान राखऽ पड़ै छै जे खंती टाट मे नै अभरए नै तऽ खटखट के आवाज हेतै। किछुए काल मे सेन्ह भऽ गेल तैयार।

वाह! सेन्ह तऽ खूब बढ़ियाँ बनि गेलै। हम अपने कला पर कने कालक लेल मुग्ध भऽ जाइ छी। एखन जँ खखन गुरुजी एत्तऽ रहितै तखन ने बुझितै जे चेला कत्ते काबिल भऽ गेलए। ऐ विद्याक इएह गड़बड़ी छै जे गुरुजी कें कियो अपन कला देखा नै सकै छै। खाली की भेटल ततबे बूझत। तहू मे खखन गुरुजी निरलोभी लोक। पहिनै कहि देलक ओकरा कोनो हिस्सा बखरा नै चाहियै। ओकरा एही मे खुसी जे हम किच्छो लऽ कए सकुशल घर घुरि आबी।

देखू हमहूँ केहन बकलेल छी। अनेरे भावना मे बहैत समय नष्ट करै छी। नै, आगू बढ़ी। आब अगिला चरण - हम पहिने पएर भीतर ढुकबै छी। कोनो तरहक व्यवधान नै। जँ ओ बच्चा जगले छै तऽ किच्छो केलकै किए नै ? ओकरा लग मे जे कियो सूतल हेतै तकरा उठबितै तऽ। एहन तऽ नै जे ओ हमरा सँ कुश्ती लड़ए चाहैए। से कोन फिकिर ? आमने सामने रहत तऽ ओएह की हमहीं। जखन निश्चय कैए लेने छी जे मरि जाएब नीक, घूरब नै नीक, तऽ आगू बढ़ी।

हम पएर बहार कऽ लै छी। आब सोझ भऽ कए मूरी ढुका कए भीतर जेबाक चेष्टा करै छी। धक धक धुक धुक धक धक धुक धुक। बाप रे छाती एत्ते धक धक किए करैए ? खखन गुरुजीक संग प्रैक्टिस करै काल तऽ हम सट सट सेन्ह बाटे अन्दर जाइ छलौं आ चट चट बहराइ छलौं। गुरुजी हँसऽ लगै छलैथ - वाह रे टुनमा तों तऽ मूसो के कान कटबही। एना धकधकी तऽ कहियो नै भेल। जेना जेना भीतर घुसैत जाइ छी धकधकी बढ़िते जाइए जेना टरेनक इन्जन होइ। लगैए जेना हमर छाती आब बहार भऽ जाएत आ एही धकधकी के शबद सँ सुतलाहा लोक जागि जेतै। बहुत जोड़ लगा कए दूनू हाथ सँ छाती कें दाबि हम भीतर प्रवेश करै छी। आ छाती दबनहि हम ठाढ़ हेबाक कोशिश करै छी।

घर मे अन्हार नीक छै आ जतेक बेसी अन्हार, हमरा ओतबे बेसी सुझैए। हम सब किच्छो स्पष्ट देखि रहल छिऐ जेना एखन अन्हार राति के अन्हार घर मे नै, बूझू दुपहरिया मे दलान पर होइ। बाहर तऽ तरेगणोक इजोत रहै छै मुदा घर मे तऽ सेहो नै। हम ठीके उल्लू भऽ गेल छी, असली रतिचर। हम देखै छी चुनमुन बच्चा गाढ़ निन्न मे सूतलए। ओ एकटा पुरना

सीड़क ओढ़नेए आ ओकरा बगल मे एकटा पुरना सलगी ओढ़ने ओकर दादी सूतल छै। चुनमुन के सिरमा लग दू तीन टा किताब राखल छै आ दादीक बगल मे एकटा चरखा। भऽ सकैए ओकर माय लूटन पंडित लग दोसर कोठरी मे सूतल होइ। नीके ने। कने सुगबुगेबो करतै बुढ़िया तऽ एके चाट मे शान्त कऽ देबै।

हम चुनमुन बच्चा कें ठीक सँ देखए लगै छी। किए ई बजै छलै ए चोर एबऽ तऽ आबऽ। हमरा कहै छलै आ कि एकरा किताब मे लिखल छै। जँ किताबक लिखलाहा पढ़ै छल तऽ घबरेबाक काज नै। भऽ सकै छै कालि एकरो परीक्षा होइ। थाकि कए आब सुतलैए। अहा ! केहन सुन्नर बच्चा छै। किछु दिन बाद इएह ने लूटन पंडितक बदला अङने अङने पूजा करौतै। बाभनक बच्चा सन्सकारी बच्चा।

अरे एकरा ठोर पर ई मुस्की किए छै ? बाप रे, कतौ कनडेरियें ईहो तऽ ने हमरा देखैए। ईहो भऽ सकै छै जे कोनो नीक सपना देखैत हो। पहिल निन्न मे लोक सपना देखिते छै। ओ तऽ भागमन्त ऐ जे दुपहरिया राति मे सूतलए आ सपना देखैए। अभागल तऽ हम छी जे अपन मरैया छोड़ि राति बिराति बौआ रहल छी।

फेर हम भासल जा रहल छी। हम किए बिसरै छिऐ जे हम एतऽ एकटा खास काज सँ आएल छी। हम सौंसे कोठरी मे नजरि दौड़बै छी। कोन मे एकटा डोरी पर बुढ़ियाक एक खंड सारी आ बच्चाक एक खंड धोती आ एकटा गंजी। ओकरे नीचा एकटा छोट चटुआ पर किछु किताब राखल। पुबरिया कोन मे भगवतीक पीड़ी। चरखा छोड़ि मात्र एकटा टिनही पेटी। ने कोनो कोठी ने भरली। अन्न पानि किच्छो नै। लगैए ई तऽ हमरो सँ दरिद्दर ऐ। बेकारे एहि घर कें टेबलौं। खैर आब पछताइए कए की हैत ? पहिल परीक्षाक राति किछु तऽ लैए जेबाके ऐछ - टाका पैसा होइ आकि आन चीज। हम टिनही पेटी कें पएर सँ ससारि कए सेन्हक मुह पर लऽ जाइ छी। पेटी भरिगर लगैए। बुढ़िया करौट लेलकए। हम कने ठमकि जाइ छी। आब सब शान्त भऽ गेल। चुनमुन बच्चा ओहिना सपना मे मगन छैथ आ मुसकी दऽ रहल छथिन। की जानि कल्हुका परीक्षाक बारे मे सपनाइत होथि।

हम पएर सँ पेटी कें धकिया दै छिऐ। पेटी ससरि कए ओइ कात नीचा खसि पड़ै छै। कने धप्प के आवाज भेलैए। घर मे कियो नै सुगबुगेलै। जय माँ काली। आब हम पएर नीचा करैत बहरा जाइ छी। छातीक धुकधुकी आब बन्न भऽ गेलए। हम चारू कात एक बेर देखै छी। सब शान्त। ऊपर अकास दिश तकै छी। डंडी तराजू दू लग्गा नीचा उतरि गेलैए। बाप रे एत्ते समय लागि गेलै।

हम पेटी लऽ कए सोझे पड़ाइ छी सरपतिया चऽर। ओतए एकान्त मे पेटी खोलै छी। खाली किताबे ठूसल छै ओइमे। सेहो सब किताब मे नाम लिखल। हम अन्हारो मे नाम पढ़ि लै छी - चुनमुन मिसर, महामाया संस्कृत विद्यालय माहीपुर। एकरा तऽ रद्दियो मे नै बेचि सकब, तुरत्ते पकड़ा जाएब। हमर मोन कोनादन करऽ लगैए। आजुक राति एकोटा पैसा हाथ नहि आएल। लगैए हम अपने तऽ परीक्षा मे फेल भेबे केलौं ओहि बच्चा कें सेहो फेल करा देलियै। आब ओ पढ़त कथी।

राति बीतल जा रहल छै। हम पेटी कें बन्न कऽ कए चऽर मे ओहिना छोड़ि गाम अबै छी। मचान पर जा कए पड़ि रहै छी। ठेहिआएल एत्ते जेना लगैए पचीस कोस सँ भार उठौने आएल होइ। सुजनी ओढ़ि लै छी। आँखि लागि जाइए।

बेर भेला पर खखन गुरुजी बजबैए। हम जाइ छी आ ओकर दूनू पएर पकड़ि कए कानए लगै छी - गुरु हौ हम फेल भऽ गेलियौ परीक्षा मे। आ सविस्तर हुनका सब टा खिस्सा सुना दै छी। गुरुजी आशीष दैत कहै छथि - टुनमा तों फेल नै भेलें, नीक जकाँ पास केलें। पहिल खेप मे तों सकुशल घर ढुकि किछु लऽ कए बहरा गेलें आ कियो नै बुझलकौ, ऐ सँ बेसी तोरा की चाही ?

से तऽ सत्ते मुदा ओ बच्चा किऐ रटै छलै ''ए चोर एबऽ तऽ आबऽ''। तै पर खखन गुरुजी पैघ ठहाका लगबैए- ''रे टुनमा ओ संसकिरीतक एकटा पद रटै छलै लेकिन तोरा मोन मे तऽ चोर पैसल छलौ तें तों सुनलही ए चोर एबऽ तऽ आबऽ''। हम लाजें कठुआ जाइ छी।

सुधी पाठक बूझि गेल हेताह जे चुनमुन मिसर “एचोऽयवायावः” रटैत छलाह जे अयादि सन्धिक सूत्र थिकैक। एकरा बेर बेर जल्दी जल्दी बजैक चेष्टा करबैक अपने सब तऽ बुझा जाएत जे हमर कथाक नायकक भ्रम ठीके छलनि।

नारी विजय -- एक

झुमकी हृष्ट पुष्ट शरीरबाली युवती छल। लुरिगर आ होशियार, खूब काज करैत। छोट परिवार, घरबाला कुसमाक अतिरिक्त मात्र दूटा बेटा, आठ आ छऽ बरखक। दूनू बेकती कमाइत छल आ गुजर बसर करैत छल। मुदा ओकरा एकेटा चिन्ता रहैक - सब दिन साँझ कें घरबाला ताड़ी पीबैक आ घर आबि झुमकी कें अनेरे डेंगा दैक। झुमकी गम खा लैत छल। एहिना ओ देखने छल माय आ पितिआइन कें सेहो बाबू ओ काका सँ मारि खाइत आ सहि लैत। ओकरो सिखाएले गेल छलैक जे घरबाला अपन पौरुष देखबै लेल मौगी कें कने मने मारबे पीटबे करतैक, से सहि लेबाक चाही।

झुमकी जतेक सहैत जाइत छल, कुसमाक डेंगाएब ओतबे बढ़ि जाइ। एक दिन तऽ सब सीमा पार कऽ देलक। ओहि राति झुमकीक देह पर कुसमा अपन हरबाही पेना तोड़िये कए छोड़लक। कारण एतबे जे झुमकी टोकि देलकै एतेक ताड़ी किएक पीबैत अछि ओ। सौंसे पीठ पर चेन्ह भऽ गेलैक आ कतेक ठाम सँ खून सेहो निकलि गेलैक। चोट तऽ झुमकी अंगेजि लेने छल मुदा पीठ फुटि गेला सँ छनछनाए सेहो लगलैक आ दर्द बहुत बेसी बढ़ि गेलैक।

झुमकी कें लगलैक आब बर्दास्त सँ बहार भऽ गेल ई। ओ राति भरि सोचौत रहल एना किएक होइत छैक। की ओकर शारीरिक ताकति कुसमा सँ कम छैक ? खोराक एके रंग छैक। काजो ओ बेसिए करैत अछि। कुसमा हरबाहि करैत अछि तऽ ओहो जाँत ढेकी सँ लऽ कए जाड़नि तक फाड़िए लैत अछि। धनरोपनी रहौ कि धनकटनी, कोनो पुरुख सँ ओ कम नहि रहैत अछि। धानक बोझ रहौक की नारक बोझ, जतेकटा बोझ कुसमा उठबैत अछि ततबेटा तऽ ओहो उठबैत अछि। ओकरा जनानी बुझि कोनो छोट बोझ तऽ बान्हल नहि जाइत छैक। खेत पथार सँ घर आँगन तक के कोनो काज मे एहन ओकरा नहि बुझेलैक जे ओकर मात्र जनानी भेला सँ किछु न्यून भेल होइक। ओतबे नहि, पुरुख कें जँ बच्चा बिआए पड़ितैक तऽ सब आत्महत्ये कऽ लितए।

एक बेर अपना बाँहि कें पहलमान जकाँ उठा कए देखलक, ओकरा विश्वास भऽ गेलैक जे यदि कुसमाक संग कुश्ती लड़ए पड़ै तऽ ओकरा पछारि सकत। तखन फेर एना किएक ? किएक पुस्त दर पुस्त मौगी सब अपन घरबाला सँ देह पिटबैत रहल अछि आ अपन बेटी सब कें बर्दास्त करए लेल सिखबैत रहल अछि ? की पुरुख सब पेना बजारिए कए अपन पुरुषार्थ देखबैत रहतैक ? ओकरा एकटा विचार एलैक दिमाग मे।

अगिला दिन कुसमा कें नवका पेना बनबए पड़लैक हरबाही करै लेल। दिन ओहिना बीतल। साँझ खन कुसमा अपन कोटाक ताड़ी पीब कए आँगन आएल आ गेल पेना ताकए जेना ई एकटा रुटीन होइक। पेना ओकरा नहि भेटलैक। ताबत पाछू सँ झुमकी आबि ओही पेना सँ कुसमा कें तरतरबै लागल। कुसमा अवाक। जाबत ओ सम्हरए सम्हरए ताबत झुमकी ओकरा खसा कए ओकरा देह पर चढ़ि गेल छल आ एकदम दुर्गा भवानीबला रौद्र रूप मे कुसमा कें कहलक जे आइ राति सँ नित्य प्रति ओकरा झुमकी ओहिना डेंगौतैक जहिना एतेक दिन ओ झुमकी कें डेंगबैत रहलैक अछि। ई कहि ओकरा देह पर सँ ओ उठि गेल, पेना कात कए रखलक आ गेल अपन भानस भातक काज मे।

कुसमाक दिमाग चक्कर काटए लगलैक। किछु बुझिए मे नहि अबैक जे ई परिवर्तन कोना भेलैक। बात एहन छलैक जे ककरो कहियो नहि सकैत छल। अपन हारल आ बहुक मारल कियो नहि बजैत अछि। ओकरा मोनो नहि छैक जे कहिया मारि खेने छल। धीया पूता मे एक दू चाट माय कि बाबू मारने होथिन सएह टा। जहिया सँ ज्ञान भेलैक आ मालिक ओतए महींसक चरबाह बनल तहिया सँ एखन तक, जखन ओ चरबाह सँ हरबाह भऽ गेल, ओकरा कहियो ककरो कथो सुनबाक अवसर नहि भेटल छलैक। अपना तुरियाक छौंड़ा सब कें देखने छैक चरबाही मे मालिक सब सँ मारि खाइत आ हरबाही मे फज्जति सुनैत मुदा ओकर काज सँ ओकर मालिक सब दिन खुशिए नहि रहलखिन, ओकर प्रशंसो करैत छलखिन।

अजुका चोट ओकरा सोचबा पर बाध्य कऽ देलकै जे ओ झुमकी कें किएक मारैत छल। झुमकी सँ ओकरा कोनो तेहन शिकाइति नहिए छलैक। ओ कोनो अलूरि अबूझ मौगी नहिए छल, अपितु होशियार मौगी छल। मुदा पसीखाना मे सबहक मुह सँ सुनै ओ जे सब अपना

मौगी कें पीटैत छैक से ओकरो अनेरे लत लागि गेलैक। आ झुमकीओ कहाँ कहियो प्रतिवाद केलकै ? चोट खाइओ कए ओ अपन काज मे लागल रहैत छल से आइ तक ओकरा बुझबे मे नहि एलैक जे ओ कोनो गलती काज कऽ रहल अछि।

ओकरा आश्चर्य लगलैक झुमकीक ताकति पर। कोना ओकरा बजारि कए छाती पर चढ़ि गेलैक ? ओकरा पहिल बेर भान भेलैक जे सत्ते यदि ओकरा झुमकी सँ कुश्ती लड़ए पड़ैक तऽ ओ हारियो सकैत अछि। एही गुनधुन मे जखन झुमकी खाए लेल कहलकै तऽ ओ मना नहि कऽ सकलै। एकदम आज्ञाकारी बच्चा जकाँ खा लेलक आ गोठुल्ला मे जा कए पड़ि रहल।

पहिल बेर भरि पोख ताड़ी पीबिओ कए ओकर निन्न निपत्ता भऽ गेल छलैक। सोचिते सोचिते ओ पड़ल छल कि देखलक झुमकी आबि कए ओकर पीठ पर तेल मालिस कऽ रहल छैक। कुसमा साहस कऽ कए झुमकी कें पुछलक ‘‘सत्ते तों कालि फेर हमरा मारबें’’। झुमकी कें अपना पुरुख पर दया तऽ एलैक आ अपना केलहा पर कने लज्जित सेहो भेल मुदा अपन दुर्गति कें ध्यान करैत ओ फेर कठोर भऽ गेल। कुसमा कें ओ एतबे कहलक ‘‘दूटा शर्त करतैक तखन हम किछु नहि करबैक - पहिल जे ताड़ी पीनाइ बन्द करतैक आ दोसर हमरा पर फेर कहियो हाथ नहि उठेतैक’’।

कुसमा कें मारिक चोट मोन पड़लैक। ओ झुमकीक दूनू शर्त मानि लेलक। झुमकी अपना विजय पर हर्षित होइत ओही गोठुल्लाक अन्हार मे कुसमा सँ लिपटि गेल।

नारी विजय -- दू

प्रिया अपन परिवारक बहुत विरोध सहैत सोमेश सँ बियाह केलक। दूनू इंजिनियरिंग कॉलेज मे सहपाठी छल। प्रियाक मम्मी पापाक कहब छलनि जे सोमेश पढ़बा लिखबा मे प्रिया सँ सब दिन कमजोर रहलैक अछि आ आगुओक जीवन मे ओ ढीले ढाल रहत। मुदा प्रिया की कोनो चुनि कए आ रिजल्ट देखि कए प्रेम केने छल ? प्रेम एना कतहु कएल गेलैक अछि ? प्रेम तऽ अनायास भऽ जाइत छैक, बस एतबे।

अन्तर देखेलैक करीब दू सालक बाद जखन दूनू पहिल प्लेसमेंट छोड़ि दोसर जॉब पकड़लक। प्रिया कें भेटलैक पचीस लाख के पैकेज आ सोमेश कें बीस के। मुदा एहि अन्तर सँ दूनूक बीच प्रेम मे कहियो कोनो खटास नहि एलैक। अपितु अपना संगी साथी लोकनिक बीच ई जोड़ी आदर्शे मानल जाइत रहल।

तकर किछु दिनक बाद सोमेश एक दिन प्रिया कें कहलकै जे हमरा सब कें आब बच्चाक प्लानिंग करबाक चाही आ ओहि हेतु प्रिया किछु दिनक लेल जॉब सँ ब्रेक लऽ लिअए। प्रिया कें पहिल बेर सोमेशक कोनो बात अनसोहाँत लगलैक। ओ बच्चा तऽ चाहैत छल मुदा एहि लेल ओकरे किएक जॉब सँ ब्रेक लेबए पड़तैक ? ओ सोमेश कें पुछलक ‘‘सोमेश, अहाँ कें जॉबक पैकेज अछि बीस लाखक, ठीक’’। सोमेश सपाट उत्तर देलक ‘‘ठीक’’। ‘‘आ हमर जॉबक पैकेज अछि पचीस लाखक, ठीक ?’’ फेर सोमेश ओहने उत्तर देलक ‘‘ठीक’’। फेर प्रिया ओकरा मोन पारि देलकै ‘‘यद्यपि हम दूनू गोटे अलग अलग कम्पनी मे काज करैत छी, अहाँक पोजीसन सँ हमर पोजीसन इंडस्ट्री हिसाबें सीनियर सेहो अछि आ वर्कलोड बेसी सेहो, ठीक’’। एहि पर ओ कने लजाइते कहलक ‘‘ठीक मुदा एहि बातक की माने एखन?’’ प्रिया ओकरा स्पष्ट कहलकै ‘‘तऽ अहीं किएक ने जॉब छोड़ि दैत छिऐक ?’’ एहि बात पर ओ हँसए लागल ‘‘लेकिन हमरा जॉब छोड़ला सँ बच्चा कोना आबि जेतैक ?’’ प्रिया ओकरा शान्त भावें बुझा देलक ‘‘बच्चा हम जनमा देब, ओहि लेल सब कम्पनी मैटर्निटी लीव दैते छैक।

तकर बाद ओकरा सम्हारैक काज अहाँ करू आ जॉब छोड़ि दियौक। अमेरिका मे आब बहुत पुरुष एना कऽ रहल छैक''।

सोमेश एकरा हँसी मे टारि देलक। मुदा प्रिया कें लगलैक जे ओ कोनो अनुचित प्रस्ताव नहि देलकै। समय बीतैत गेलैक। अगिला साल सोमेश कें दश प्रतिशत इन्क्रीमेंट भेटलैक, प्रियाक कम्पनी मे ओकरा बीस प्रतिशत भेटलैक। सोमेशक पैकेज रहलैक बाइस लाख के, प्रिया पहुँचि गेल तीस पर। तकर छऽ मासक भीतरे प्रिया फेर जॉब चेन्ज केलक जतए नवका पैकेज छल चालीस के। नवका पोजीसन मे ओ सीधे वी.पी. कें रिपोर्ट करैत छल। ओ फेर सोमेश कें पुछलक ''की विचार केलहुँ ? यदि परिवार मे बच्चा चाहैत छी तऽ हमर प्रस्ताव मानि लिअऽ''। सोमेश किछु उत्तर नहि देलकै, ओकर पुरुषबला अहं जागि जाइत छलैक। एखन तक ओ पूरा बंगलोर मे एहन नहि सुनने छल जे बच्चा पोसैक लेल पतिए जॉब सँ ब्रेक लेलकै आ पत्नी काज करिते रहलैक। अमेरिकन सब सनकी होइत अछि, ओकर नकल करबाक कोन काज ?

दिन बीतैत गेलैक, प्रिया आ सोमेशक पोजीसन आ पैकेज मे अन्तर बढ़िते रहलैक। बच्चाक लेल प्रिया अपना दिस सँ कोनो हड़बड़ी नहि देखा रहल छल। मुदा सोमेश कें ई जरूरी बुझाइत छलैक। ओ जखन प्रिया कें एहि बातक कोनो हिन्ट दैक, ओ अपन प्रस्ताव दोहरा दैक। एक बेर तऽ सोमेश सोचए लागल जे प्रिया जिद्दी अछि आ आब ओकरा संग बेसी दिन नहि रहि सकत।

ई एहन समस्या छलैक जकरा ओ कोनो कलीग अथवा पुरना संगी साथीक बीच सेहो डिस्कस नहि कऽ सकैत छल। प्रिया सँ अलग भेने ओकरा की भेटतैक ? फेर नव तरीका सँ जीवन संगिनी चुनबा लेल प्रयास करू। आ की गारंटी जे ओहो लड़की बाद मे कोनो दोसरे बखेरा ने ठाढ़ करए ? प्रियाक संग ओ आठ नौ साल बिता लेलक अछि, एकटा एहि जिद्दक अतिरिक्त प्रिया सँ ओकरा कोनो शिकाइति नहि छलैक। संगी साथीक बीच अपना दूनूक प्रशंसा आ ''आइडियल कपुल''क उदाहरण आ प्रियाक तेज बढ़ैत कैरियर ग्राफ ओकरा सोचबाक लेल बाध्य केलकै।

ओ सोचए लागल पहिलुका कथन जे ‘‘हरेक सफल व्यक्तिक पाछू एकटा स्त्रीक हाथ रहैत छैक’’। की एकरा उनटाओल नहि जा सकैत छैक ? यदि ओ मदति करैक तऽ प्रियाक सफलताक ओहने श्रेय ओकरो भेटि सकैत छैक। फेर जॉब तऽ घर बैसल सेहो कएल जा सकैत छैक। बहुत रास कम्पनी मे लोक कें एहन विकल्प भेटि रहलैक अछि। रहल बात बेबी सिटिंग के। से तऽ जेहने ओ अनाड़ी अछि तेहने प्रिया सेहो अनाड़ी। आइ कालि बंगलोर मे काज केनिहार सब कपुल अनाड़ी रहैत अछि। तखन फेर लोक किताब पढ़ि आ इंटरनेट सँ सीखि किछु दिन काज चलबैत अछि। बहुत कमे लोक कें मम्मी पापा सम्हारि दैत छथिन। ओ फ्लिपकार्ट सँ बेबी सिटिंग सम्बन्धी एकटा अमेरिकन किताब आर्डर केलक आ प्रिया सँ नुका कए पूरा पढ़ि गेल। ओकरा मे किछु आत्मविश्वास जगलै जे ओ बच्चा कें सम्हारि सकत। आ फेर कोनो इमर्जेन्सी भेला पर बहुत रस्ता छैक, प्रिया अपना बच्चा कें छोड़ि थोड़बे देतैक ? ओ तऽ मात्र ई आश्वासन चाहैत अछि जे ओकरा जॉब छोड़ए नहि पड़ैक।

एही सोच विचार मे आ जॉब फ्रोम होम तकबा मे आर छऽ मास लागि गेलैक। तकर बाद एक दिन सोमेश बेडरूम पहुँचौत घोषणा केलक ‘‘प्रिया, हम अहाँक प्रस्ताव मानि लेल अछि। ओतबे नहि हम दूनू गोटाक लेल एकटा एग्रीमेंटो बना लेलहुँ अछि’’। ई कहैत ओ कागत प्रियाक सामने बढ़ा देलक जाहि मे ओ अपन सिग्नेचर पहिनहि कऽ देने छल। प्रिया कें तऽ विश्वासे नहि भेलैक। एहि विजयक खुसी मे ओ कागत कें फाड़ि देलक, घरक सबटा कन्डोमक पैकेट उठा कए फेकि देलक आ सोमेश सँ लिपटि गेल।

स्वयंवर

फोन बन्द नहि भऽ रहल अछि। अकच्छ भऽ गेलहुँ। कोनो काज ठीक सँ नहि कऽ पाबि रहल छी। शनि रवि तऽ सबसँ बेसी खराप। ताहि पर सँ बेटा बेटीक जोर। न्यूयार्क सँ रिंकी बजैत छथि - पापा हम तीन टा ईमेल पठौलहुँ तै पर ठीक सँ विचार करियौक, अहाँक जमायबाबूक सेहो जोर छनि। ओमहर सिडनी सँ पप्पूक आग्रह - पापा हरबरेबैक नहि। सब बात ठीक सँ पता लगा लेबैक। आइ कालि अधिकतर लड़की सब कें कोनो ने कोनो अफेयर रहितँहि छैक। एहन ने होअए जे अहाँ तऽ ठीक कऽ ली आ हम सब जखन बरियाती जाइ तऽ पता चलए '*धीया गेली अपनहि पराए*'। हमरा हँसी लागि जाइत अछि - ई भेलैक ने नवका नचारीक पाँती: '*धीया लए जाएब पराए*' के बदला मे '*धीया गेली अपनहि पराए*'। ई सोचि कने गौरवान्वित होइत छी जे पप्पू मे मिथिलाक संस्कार एखनहु बाँचल छनि।

रिंकी आ पप्पू तँ भेलथि जेठ जिनकर बियाह भऽ गेल छनि। आ जिनकर बियाह करबाक अछि से भेलाह मुन्नू। ओ चुप्पी सधने छथि। जेठ भाइ बहिन कतबो चेष्टा केलखिन ओ किछु बाजिये नहि रहल छथि। ओ दूनू बेर बेर बुझेलखिन जे मोन मे यदि किछु अछि तँ बाजू, हम सब मिल कए पापा मम्मी कें मना लेब। मुदा मुन्नू मौन। हँ हूँ किछु नहि। ने सहयोगे ने विरोधे। माय कहलखिन मुन्नू फोटो पठा दिअऽ, इंटरनेट पर अहाँक बियाहक विज्ञापन देबैक। ओ चुपचाप एकटा नीक फोटो पठा देलनि संगहि जॉब प्रोफाइलक किछु पाँती सेहो लिख पठौलनि। मुदा जीवन संगिनी केहन करब ताहि पर फेर मुन्नू मौन।

आइ.आइ.टी. खड़गपुर मे केमिकल इंजिनियरिंग मे नीक सफलता। एक बेर चर्चा केलनि मुन्नू जे एटोमिक इनर्जी प्रोग्राम मे केमिकल इंजिनियरिंग मे बहुत चौलेंजिंग जॉब छैक, मोन होइछ ओही मे कोशिश करितियैक। मुदा हमहीं मना कऽ देलिएनि जे आब सरकारी नोकरी सँ की होएत ? एम.बी.ए. कऽ लिअऽ आ नहि तऽ ओहुना इंडस्ट्री मे चलि जाउ। ओ किछु नहि बजलाह। फेर आइ.आइ.एम. कलकत्ता मे एडमिसन लऽ लेलनि। ओतहु नीक सफलता। फेर बी.एन.पी. परिबा सन कम्पनी मे तीस लाखक स्टार्टिंग पैकेजक संग मुम्बइ मे नोकरी। अंधेरी

ब्राँच मे पोस्टिंग आ वरसोवा मे कम्पनीक दू रूमक फ्लैट। ने लोकल ट्रेनक धक्कामुक्की ने बसक झंझट। ऑटो सँ जाउ नहि तऽ गाड़ी सँ जाउ। पछिला दिवाली मे मुन्नू टाटा इंडिका कीन लेलनि। हमरा सबहक बुझने एहि सँ नीक आर की हेतैक ?

मुदा मुन्नू मौन रहए लगलाहे। कलकत्ता गेलाक बादे सँ किछु परिवर्तन बुझाए लागल रहए मुदा कारण ने तखने किछु बुझलियैक आ ने एखने बूझि पबैत छी। मोन मे एकेटा कचोट होइत अछि जे हमरे कारण ओ अपना मोनक नोकरी एटोमिक इनर्जी मे नहि कऽ सकलाह।

मुन्नू सन चंचल बच्चा। घर सँ स्कूल तक कें माथ पर उठौने रहएबला बच्चा। जेठ भाइ बहिन कें हरदम तंग करैत पढ़ै सँ लऽ कए खेल तक मे। आ नकल करबा मे केहन होशियार! हेडमास्टर साहेबक नकल एतेक सुन्दर करैत छल जे कतरास मे दशमी मे जखन ओकर प्रोग्राम रहैक तऽ हेडमास्टर साहेब नुका कए देखए आएल छलखिन। हमरो सब कें नहि बूझल भेल। आ जखन प्रोग्राम खतम भेलैक तखन ओ स्टेज पर जाकए कोरा मे उठा लेने छलखिन मुन्नू कें। पूरा कॉलोनीक लोक अकचकाएले रहि गेल छल। आइ.आइ.टी. तक मे केरिकेचर के ओकर प्रोग्राम होइत रहलैक।

मुन्नूक चुप्पी हमरा सब कें बहुत दुविधा मे दऽ देलक अछि। केहन कनियाँ ताकी ? आब नब्बे प्रतिशत लोक कें तऽ नोकरिआहे जीवन संगिनी चाहिऐक मुदा दश प्रतिशत एखनहु अछि जे जीवन संगिनीक संग गृहिणी सेहो तकैछ।

हम सब बहुत कष्टें बच्चा सब मे मैथिल संस्कार जगौने छी। झींगपानी, बरबिल, रामगढ़, तिलैया, कतरास आदि छोट छीन जगह मे घुमैत नोकरी करैत आ मिथिलाक माटि पानि सँ दूर रहैत ई काज कम कठिनाह नै छल। कतेको मैथिल सहयोगी सब तऽ भसियाइए गेलाह। धीयापूता हिन्दी बाजए लगलनि। संगी सब सँ बंगला उड़िया ओ सब सिखलक मुदा माय बापक संग मैथिली नहि सीख पाओल। हम अपन बच्चा सब कें एहि कुप्रभाव सँ दूर राखल आ संगहि ईहो निर्णय लेल जे हिनका लोकनिक बियाहक समय सेहो एहि बातक खियाल राखी। हमर जमाय आ कि पुतोहु हमरा सब सँ हिन्दी मे बाजथि से कोना होएत ? एकरा

हमर हठधर्मिता कहू किंवा मूर्खता, मुदा हमरा गर्व अछि जे एखन तक एहि व्रतक पालन कएल अछि।

मोन पड़ैत अछि रिंकी लेल वर तकबाक क्रम मे सरिसो पाही लगहक एकटा गामक रमाशंकर मिश्रक डेरा पर दिल्ली गेल रही तऽ हुनकर बेटा हमरा सँ हिन्दीए मे गप करए लागल छलाह। हम मद्धिमे स्वर मे विरोध करैत पुछने रहिएनि जे बच्चा मैथिली नहि बजैत छथि की ? रमाशंकरजी गर्व सँ हँसि कए कटाक्ष केने रहथि "अरे ठाकुरजी, कब तक मैथिली मैथिली रटते रहियेगा ? विद्यापति को मरे हुए कई सौ साल हो गए और आप हैं कि अभी भी उनका ही गीत गा रहे हैं।" हम चोट्टहि ओतए सँ घूरि गेल रही। आश्चर्य लागल रहए जे सरिसो पाही सन ठेठ मिथिलाक गाम आ तकर पड़ोसक बेटाक ई हाल। दरभंगा मे कॉलेज मे रमाशंकर हमरा सँ एक किलास सीनियर रहथि आ होस्टल मे हम सब अगले बगलेक कोठरी मे रहैत छलहुँ। तखनुका हुनकर विचार आ दिल्ली मे तीस साल अफसरी करैत रहलाक बादक विचार - कतेक परिवर्तन भऽ गेलैक अछि?

फोनो पर कतेक कन्यागत हिन्दीए मे बाजए लगैत छथि। किछु तँ मैथिली बिसरिए गेल छथि, किछु बिसरबाक ढोंग रचौत छथि आ किछु गोटे चरिओने सँ लाइन पर आबि जाइत छथि। किछु तऽ ईहो बहन्ना बनबैत छथि जे श्रीमान हमरा नहि बूझल छल जे अपने मैथिली बजैत हेबैक, आब समय बहुत बदलि गेलैक अछि। बेजाए बहन्ना नहि।

मुदा मुश्किल जे बेसी काज हमर टुटिये जाइत अछि जखन पुछैत छिएनि जे हुनक बेटी मैथिली बजैत छथिन की नहि। हम सब कें स्पष्ट बता दैत छिएनि जे देखू हमर ई शर्त अछि जे हमर होइबाली पुतोहु मैथिली बजतीह।

हमरा ई जानि खुसी होइत अछि जे आब लोक बहुत स्पष्टवादी भऽ गेल छथि आ फोने पर टाका पैसाक गप सेहो करए चाहैत छथि। किएक लोक अनेरे दिल्ली, मुम्बइ, चेन्नइ, बंगलोर सँ धनबाद अबैक कष्ट उठाओत जँ फोने पर पता लागि जाइक जे ई कथा ओकर साध्यक बाहर छैक। मुदा समस्या ई छैक जे लोक कें विश्वासे नहि होइत छैक जखन हम कहैत छिऐक जे एहि बियाह मे टाका पैसाक कोनो गप नहि छैक। किछु गोटे तऽ ईहो ऑफर दऽ

चुकल छथि जे श्रीमान चिन्ता नहि करिऔक, हम एकसरे आबि खानगी मे लेन देन सबटा ठीक कऽ लेब, हमरा दू गोटे कें छोड़ि तेसर कियो नहि बूझत, वर कनियाँक माइयो तक नहि।

हम एहन लोक कें दोष नहि दैत छिएनि। ओ तऽ समाज मे व्याप्त वातावरणक प्रतिनिधित्व करैत छथि। हम तऽ स्वयं भुक्तभोगी छी। राँचीबला चौधरीजी जखन रिंकी कें देखबाक प्रस्ताव पठौने रहथि तऽ हमरा सब कें लागल जे सत्ते ई बियाह आदर्श होएत कारण जतेक जे सूनल छल ताहि अनुसार कनियाँ देखब तऽ अन्तिम चरण बूझल जाइत छलैक आ सेहो मात्र औपचारिकता। कनियाँ देखलाक बाद कतहु बियाह टूटब नहि सुनने छलियैक। राँची हम तीन बेर गेल रही। एहि यात्रा मे हमरा संग एक बेर हमर अनुज रहथि आ दू बेर हमर सार। ओहि समय हम रामगढ़ मे पोस्टेड रही। चौधरीजीक मादे जे किछु सुनने रही ताहि सँ आश्वस्त रही जे ई बेटाक आदर्शे बियाह करौथिन। हुनक मित्रमंडली मे दू गोटे हमर परिचित छलाह जनिका माध्यमे हम ओतए जाइत छलहुँ। ओहो लोकनि एही तरहक संकेत देने छलथि। स्वयं चौधरीजी तऽ कहियो किछु बजबे नहि केलनि।

रिंकी कें देखि राँची फिरला पर चौधरीजी समाद पठौलनि जे कनियाँ हमरा सब कें पसिन्न भेलीह। आगूक कार्यक्रम तय करबा लेल हम एकसरे शीघ्र हुनकर भेंट करिएनि। एकर अर्थ हम नहि बूझि सकलियैक। अनुभवहीन जे छलहुँ आ पहिले बेटीक बियाह छल ने। अस्तु, हुनकर निर्देशानुसार हम एकसरे राँची पहुँचलहुँ। आश्चर्य जे ओहि दिन हुनका घरो मे कियो लोक नहि। अपनहि ओ एक प्लेट मे किछु मधुर आ एक गिलास मे जल आनि हमरा लग राखि देलनि। आ एकदम शान्त रूपें हमरा सुनबए लगलाह ‘‘देखू ठाकुरजी, अपनेक कन्या हमरा सब कें पसिन्न छथि। तखन अपने एकटा प्रण केने छी जे अपनेक होइबला जमाय मैथिली बजबे करथि। नीक बात। ई तँ नीक मैथिल संस्कारक द्योतक अछि। जखन अपने ठेठ मैथिल परिवार मे कुटमैती करबैक तँ ओकर अन्यान्यो व्यवहार सब तँ करहि पड़त ने। गाम घरक हाल चाल तँ बुझले होएत।’’ हम एहि भूमिकाक अर्थ नहि बूझि सकलहुँ। एक घोंट जल पीबि हुनका उत्तर देलिएनि ‘‘मैथिल बियाहक जे उचित विध व्यवहार हेतैक से

जरूरे कएल जेतैक। हम सब गाम घर सँ नीक रूपें जुड़ल छी। सब व्यवस्था हमर अनुज गामे सँ कऽ कए अनताह। आम महु बियाहक व्यवस्था पर्यन्त रहतैक।'' हाय रे बकलेल, ओ कहलनि आम अहाँ बुझलहुँ लताम।

चौधरीजी कें हमर अनभिज्ञता पर कनेक आश्चर्य जरूर भेल हेतनि मुदा छलाह ओ स्थिर आ धीरजबला लोक। शिक्षक छलाह ने। आब ओ सोझे रूपें हमरा कहलनि ''देखू हमर बालक छथि कम्प्यूटर इंजीनियर। नीक कम्पनी मे नोकरी छनि आ नीक पैकेज भेटैत छनि। हिनका लऽ जेबा लेल अपने कें नकदी सात लाख टाका लागत। गाड़ी हम अपनहि पर छोड़ि दैत छी। ओना एहन जमायक लेल बिनु गाड़ी गाम मे कि रामगढ़ मे लोक की कहत से अपनहि बुझबैक। बरियाती किछु राँची सँ रहताह, किछु हमरा गाम सँ अओताह आ किछु हमरा बालकक कालेजबला आ किछु कम्पनीक संगी सब सेहो रहथिन। सब मिला कए हमरा सब करीब एक सौ भैए जाएब। हिनका सब कें लऽ जेबाक आ फेर राँची पठेबाक व्यवस्था अपनहि करबैक। भोजन भातक इन्तजाम जे एखनुक रीति मे उचित होइक सएह करब। वर आ कन्या कें अहाँ की देबनि से अपनहि सोचू, हम की देबनि से हमरा पर छोड़ि दिअऽ। आर सब सँ मुख्य बात ई जे हम दूनू गोटे की निर्णय लेलहुँ से हमरा दूनू कें छोड़ि कियो नहि बूझथि।''

हम हतप्रभ भऽ गेलहुँ। एक एक टा वाक्य पर हमरा आँखिक आगाँ अंधकार भेल जा रहल छल। माथ पर पसीना से आबि गेल। हम कहुना कए अपना कें सम्हारैत गिलासक बचल पानि एके साँस मे पीबि गेलहुँ। चौधरीजी चलाक लोक। तुरत्ते दोसर गिलास भरि कए जल आनि देलनि। हुनका हमर घबराहटिक भान तऽ भैए गेलनि। शिकारी जखन तीर चला दैत छैक तऽ ओकरा बूझऽ मे आबिए जाइत छैक ने जे असहाय शिकार घायल भेल वा नहि। ओ हमरा परतारैत कहए लगलाह ''देखू ठाकुरजी, लेन देन बियाह दानक जरूरी अंग थिकैक से तऽ अपनहुँ मानबैक कि ने। भगवान रामक बियाह मे सेहो भेल छलनि। तखन हमर उद्देश्य इएह जे अपनेक बेटी जमाय आ कि हमर बेटा पुतोहु सुखी रहथि। पहिने सँ सब किछु सोझराएल रहला सँ बाद मे कोनो तरहक विवाद नहि होएत। किएक अपने बेटी सँ सूनब जे

सासुर मे हमरा पर बेर बेर कटाक्ष होइत अछि आ प्रताड़ना देल जाइत अछि आ कि किएक अपनेक जमाय कोनो बात पर रुसताह।”

हम चौधरीजीक बात कोना कटियनु? ओहो तऽ एही मैथिल समाजक प्रतिनिधि छथि। हम विचार करबाक हेतु किछु समय माँगि हुनका सँ विदा लेल। रामगढ़ पहुँचि पत्नी जिज्ञासा केलनि। हम हुनका बुझबैत एतबे कहलिएनि “देखू पोखरिक नीचा कछेर मे रहनिहार कें उँचका मोहार परहक फलक लोभ नहि करबाक चाही।” चौधरीजीक मादे हम चुप्पी साधि लेलहुँ।

बेटी अपन भाग लऽ कए अबैत छैक। रिंकीक बियाह भेलनि, मैथिल परिवार मे भेलनि, आदर्श भेलनि आ से चोरुक्का आदर्श नहि। जमाय वैज्ञानिक छथि आ मैथिली बजितहि नहि छथि, किछु लिखबो करैत छथि। भगवतीक कृपा सँ न्यूयार्क मे दूनू सुखी छथि।

पप्पूक बियाह तऽ एतेक जल्दी मे ठीक भेलनि जे पूरा परिवार अकचकाएले रहि गेलहुँ। इएह देखि विश्वास भऽ जाइत अछि जे सत्ते जोड़ी भगवान स्वर्गे सँ बना कए पठा दैत छथिन। हम तिलैया मे रही। एके मास पहिने तऽ शिवमोहन बाबू हमरा सबहक बगल मे आएल छलाह। निरमली लगहक कोनो गामक रहनिहार। आएब जाएब शुरु भेले छल कि एक दिन पत्नी पुछलनि “संगीता अहाँ कें केहन लगैत छथि ? हमरा बुझने तऽ पप्पू के नीक जोड़ी हेतैक”। हम अवाक। एखन तऽ ठीक सँ पप्पूक बियाहक चर्चो नहि भेल छलैक। पप्पू टी.सी.एस. मे दू साल सँ काज करैत छलाह आ एहि बेर हुनका आस्ट्रेलिया पठेबाक चर्चा भऽ रहल छलनि। हमरा मौन देखि अगिला दिन पप्पू कें माय सँ फोन पर बात भेलनि आ तकर बाद पप्पूक माय संगीताक माय कें प्रस्ताव पठा देलखिन। दूनू परिवारक बीच साधारण खोज पुछारि के गपसप भेल। हमरा तऽ चौधरीजी जकाँ लेनदेनक हिसाब करबाक नहि छल। अगिले मास पप्पूक बियाह भऽ गेलनि आ ओ संगीताक संगहि सिडनी गेलाह। भगवती कृपा ओहो दूनू सुखी छथि।

मुदा अन्तिम बेर मे हमर धैर्यक परीक्षा भऽ रहल अछि। चिन्ता सेहो बढ़ल जा रहल अछि कारण अगिला सितम्बर मे मुन्नू अठाइसम पुरा कए उनतीसम मे प्रवेश करताह। रिंकी बेर मे हम दुइए गोटे रही निर्णय लेनिहार। पप्पूक लेल तँ भगवाने निर्णय लऽ लेने छलखिन। मुदा मुन्नू बेर मे माय बापक अतिरिक्त बहिन बहिनो आ भाइ भाउज सेहो छथिन। एहि छऽ गोटेक बीच कनियाँक परिचय आ फोटो तासक पात जकाँ एमहर सँ ओमहर होइत रहैत अछि आ जखने कियो दू गोटे अस्वीकार कऽ देलखिन कि ओ नाम लिस्ट सँ कटि जाइत अछि। उत्सुक कन्यागत लोकनि कें उत्तर देबा लेल हमरा लग एकेटा वाक्य रहि जाइत अछि - किछु दिन आर निर्णयक प्रतीक्षा करू। मुदा हम निश्चय कऽ लेल अछि जे एहि जुलाइ मे शुद्ध शेष हेबा सँ पहिने मुन्नूक बियाह कराइये देबनि।

आइ फेर शनि छिऐक। फोन आबिए रहल अछि। रिंकीक ईमेल मे पठाओल तीनू प्रस्ताव पढ़ि लेलहुँ। ई कथा सब हुनका अमेरिकाक मैथिल समाज सँ भेटलनि अछि मुदा तीनू कनियाँ छथि देशे मे कतहु कार्यरत आ छथि मैथिली भाषी। अर्थात हमरा शर्तक मोताबिक फिट। मुदा निर्णय कोना होएत ? आ फेर पप्पूक सलाह मानि किछु जासूसी सेहो ने करए पड़त।

एही इतस्ततः मे पड़ल छी कि कूरियरबला एकटा लिफाफ दऽ जाइत अछि। आश्चर्य, लिफाफ तऽ मुन्नू पठौलनि अछि। मुदा लिफाफ किएक ? तीन सालक नोकरी मे तऽ सदिखन मुन्नू फोने सँ हालचाल पुछैत रहलाहे। कखनहु गिफ्टक कोनो पैकेट जरूर अबैछ मुदा हल्लुक लिफाफ नहि।

अतीव उत्सुकता सँ लिफाफ खोलैत छी। ओहि मे अछि मुन्नूक निम्नलिखित चिट्ठी:-

‘‘पूज्य पापा, पूजनीया मम्मी

ई चिट्ठी देखि अपने सब कें जरूर आश्चर्य होएत मुदा बाते तेहन जे फोन पर नहि कहि सकैत छलहुँ। फोन पर एकर गरिमा नष्ट भऽ जइतैक।

पापा मम्मी गप ई बूझू जे कियो बकलेल एकटा मानिक कें जूहू बीच के बालु पर फेकि देलक आ अहाँक मुन्नू कें ओ मानिक भेटि गेलनि।

बुझौवलि छोड़ि आब असली बात पर आबी। दू मास पूर्व हमरा ब्राँच मे एकटा महिला अधिकारी एलीह, कुसुमलता राय। हुनक फाइल हमरा लग आएल। देखल जे किछु दिन पूर्व हुनकर नाम छलनि कुसुमलता राय चौधरी। अहाँ सब बुझिए गेल हेबैक जे ई बंगाली नाम छिऐक। हमहूँ सएह बुझलिऐक आ शुरू कएल हुनका सँ बंगला मे बात करब। ई की ? हुनकर किछु उत्तर नहि भेटल, उनटे जिज्ञासा “आप क्या कह रहे हैं ठाकुर साहब ?” आश्चर्य भेल, लागल जे हमरा सँ निकटता नहि करबाक लेल ई लाथ कऽ रहल छथि।

एकाध दिनक बाद पता लागल जे ई तऽ परित्यक्ता मैथिलानी छथि। संक्षिप्त मे हुनकर इतिहास जे माय बापक एकमात्र सन्तान आ मातृहीना कुसुमलताक बियाह कोनो चौधरी परिवार मे भेल छलनि। कुसुमलता स्वयं एम.बी.ए. छथि आ बियाहक समय एच.डी.एफ.सी. बैंक मे काज करैत छलीह। एकमात्र सन्तान आ सेहो बेटी हेबाक कारण कुसुमलताक इच्छा छलनि जे पितृकुलक नाम नहि त्यागी। तें मैरिज रजिष्ट्रेशन मे ओ अपन कुमारिक नाम कुसुमलता रायक आगाँ चौधरी जोड़ि लेलनि। वर कम्प्यूटर इंजीनियर छलखिन। मोटगर पैसाक लालच मे आ बापक दबाब मे ओ इंजीनियर हिनका सँ बियाह तऽ कऽ लेलखिन मुदा अपन पहिलुका प्रेमप्रसंग कें ओ छोड़ि नहि सकलाह। किछु दिन लुका छिपी करैत ओ अन्त मे एके सालक बाद अपन प्रेयसीक संग सिंगापुर पड़ा गेलाह आ ओतहि बसि गेल छथि। कुसुमलताक पिता कर्नल चन्द्रकान्त राय बड़ सोझ लोक। ओ कखनहु नहि बूझि पओलखिन जे ओ ठका रहल छथि। कुसुमलताक माय जिबैत रहितथिन तऽ सम्भवतः एना नहि होइतैक।

कुसुमलता कें तलाक भेटबा मे चौधरीजीक षटयंत्रक सामना करए पड़लनि। चौधरीजीक नजरि तऽ रहनि हिनकर पिताक सम्पत्ति पर आ ताही लेल तऽ ओ बेटा कें बुझा सुझा कए हिनका सँ बियाह करबा लेल राजी केने रहथि। से ओ कोना एतेक जल्दी छोड़ि दितथिन आश ? ओ लगलाह बेटा कें बुझाबए जे सिंगापुर मे एकटा नकली तलाकक नाटक करए आ किछु दिन भारत किछु दिन सिंगापुर बिताबए। कर्नल राय सेहो एहि विचार सँ कने मने सहमत छलखिन कारण हुनका मैथिलानीक तलाक रुचि नहि रहल छलनि। चौधरीजीक एकेटा इच्छा रहनि जे कहुना कर्नल रायक सम्पत्ति ओ प्राप्त कऽ लेथि। तकर बाद देखल जेतैक।

लेकिन एहि योजना मे बाधक बनलखिन इंजीनियर साहेबक प्रेयसी। ओ तलाकक नाटक करबा लेल राजी नहि भेलखिन। फेर कुसुम सेहो डाँड़ कसलनि आ बाप कें बुझौलनि। कतेक कोर्ट कचहरीक चक्कर के बाद तीन मास पहिने हुनका तलाक भऽ गेलनि।

पापा मम्मी एही दू मास मे कुसुम आ हम बहुत नजदीक आबि गेल छी। हम कहलहुँ कुसुम मानिक छथि। हुनकर एम.बी.ए. आ जॉब छोड़ू। ओ तऽ गौण भेल। कुसुम उर्वषी मेनका नहि छथि मुदा एहन रूपरंग जरूर छनि जे अहाँ सब कें पसिन्न भऽ जेतीह। असली बात जै सँ अहाँ दूनू गौरवान्वित होएब से अछि हुनकर मैथिलानी लूरि। कुसुम मिथिला चित्रकलाक माँजल कलाकार छथि आ तहिना मैथिली गीतक सेहो। हुनकर बनाओल मिथिला चित्रकला सँ सुसज्जित बेडशीट सेट सब अपूर्व अछि। जखन अहाँ हुनकर गान सुनबनि '*जनम अवधि हम रूप निहारल नयन ने तिरपित भेल*' आ कि '*कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ*' तँ अहूँ सब भाव विभोर भऽ जाएब। हमरा तऽ नोर रोकब कठिन भऽ जाइत अछि।

अहाँ सब बहुत दिन सँ हमर एकटा जीवन संगिनी तकबा लेल परेशान छी। हमहूँ नहि बुझैत छलियैक हमरा केहन जीवन संगिनी चाही। मुदा भगवती कुसुम कें पठा देलखिन। कुसुम उमेर मे हमरा सँ किछु जेठ जरूर छथि मुदा भगवती कें इएह मंजूर छनि तऽ अहूँ सब स्वीकार कऽ लियौक।

हमरा दूनूक इच्छा जे अपने सबहिक आशीर्वादक बीच महालक्ष्मी मन्दिर मे अगिला रवि कें बहुत साधारण रूपें दाम्पत्य जीवनक शपथ ली। दूटा टिकट पठा रहल छी। भैया कें आ दीदी कें सेहो दू दू टा टिकट पठा देलिएनि अछि। हुनका सब कें एतेक बात नहि लिखलिएनि, मात्र एतबे जे अगिला रवि कें हमरा जीवनक एकटा अति महत्त्वपूर्ण घटना घटत, अपने सब उपस्थित रहियौक। कुसुम तऽ एकसरे छथि। मात्र पापा कें खबरि कऽ देलखिन अछि।“

चिट्ठी खतम करैत हमरो नोर रोकब कठिन भऽ जाइत अछि। गीतक भाव सँ नहि मुदा एहि खुसी सँ जे अन्त मे मुन्नू मौन तोड़लनि आ चहकलाह। पत्नी पुछैत छथि तऽ कहैत छिएनि “अहाँक राम कें सीता भेटि गेलखिन। स्वयंवर समाप्त भेल। उठाउ गोसाउनिक गीत।”

कुहेस

करीब तीन हप्ता गाम मे बिताए पटना होइत हम सब कलकत्ता पहुँचलहुँ। जहिया सँ नोकरी करए लगलहुँ आ धीरे धीरे कलकतिया भऽ गेलहुँ गाम प्रायः छुटिए गेल छल। गाम जेबो करी तँ मात्र आवश्यक काज उदेम मे आ सेहो एकाध दिनक लेल। सबटा लोक अनचिन्हार भऽ गेल छल। बस सँ जखन चौक पर उतरी तँ रिक्शाबला कें भैयाक नाम कहियैक जे हमरा सुशील बाबूक ओतए पहुँचा दिअऽ। जँ कोनो बेर गलती सँ कहि दियैक जे हम एही गामक छी मिसरटोलाक रहनिहार सुकीर्ति मिसर, हमरा अपना घर पर जेबाक अछि तँ ओ नवतुरिया रिक्शाबला कें लगैक हम मजाक कऽ रहल छियैक। सुकीर्ति मिसरक कीर्ति समूचा संसार मे प्रसिद्ध मुदा गाम मे ओ अनठिया लोक। भैया गामहि रहि गेलाह आ बेस सामाजिक लोक सेहो भऽ गेलाह तें हुनका सब चिन्हैत छनि।

एहि बेर किछु बेसी दिन रहलाक कारण बहुत रास नवतुरिया सँ परिचय भेल। चौक पर जे हाट लगैत छलैक, अथवा उचित कही तँ सड़कक किनार जतए हाट लगैत छलैक से पहिने तँ चौक भऽ गेल आ शनैः शनैः आब पूर्ण विकसित बजार भऽ गेल। कतेक रास अपन बालसखा सब सँ भेंट भेल जकरा प्रथम दृष्टया चीन्हि नहि पौलियैक कारण ककरो ककरो तँ पैंतीस चालीस बरखक बाद देखि रहल छलियैक आ एतेक अन्तराल मे केश पाकब, दाँत टूटब, चानि उड़ब सँ लऽ कए ठेंगा लऽ कए चलबाक व्याधि पर्यन्त हुनका सब कें ग्रसित कऽ लेने छलनि। एहि बेरक उपलब्धि जे सुकीर्ति मिसरक कीर्ति गामक नवतुरिया सब कें सेहो बुझबा मे आबि गेलैक। आ हमरा तीत मधुर दूनू अनुभव भेल।

दादा हमर नाम सुकीर्ति किएक रखलनि से तँ हमरा नहि बूझल अछि। आङन मे सब हमरा छोटू कहैत छल मुदा स्कूल जाइते देरी हमरा बुझा गेल जे सुकीर्ति नाम उच्चारण करए मे आन बच्चाक कोन कथा मास्टर सब कें सेहो जीह टुटैत छलनि। एक दिन क्लास टीचर महोदय इतिहास मे सुकरातक खिस्सा पढ़बैत छलखिन कि तखने हुनका आइडिया एलनि जे हमरा लेल हल्लुक नाम सुकरात राखि देल जाए। दूनू नाम कनेमने मिलैत तँ जरूर छलैक।

बस तहिया सँ हम स्कूल मे सुकरात भऽ गेलहुँ। मात्र रजिष्टर पर नाम सुकीर्ति रहि गेल। फेर टोल पड़ोस मे सेहो इएह नाम प्रचलित भऽ गेल।

सुकीर्ति अथवा सुकरात दूनु नाम सँ खतरे छल। कतऽ महात्मा सुकरात आ कतऽ गामक एकटा न्यूनवित्त परिवारक बच्चा। यदि कनियो गड़बड़ाइत तँ 'नाम मिसरीलाल आ गुण गुड़ोक नहि' बला फकरा सार्थक भऽ जाइत। मुदा संयोग कहू, भाग्यक चक्र कहू, सरस्वतीक कृपा कहू अथवा अपना परिश्रमक फल कहू जे कहुना प्राणिशास्त्र सँ एम.एससी. कएल आ कलकत्ताक एकटा अनुसंधान केन्द्र मे आबि गेलहुँ आ लगलहुँ बूझए जे एतेक तरहक कीड़ा मकोड़ा प्रकृति मे किएक छैक आ ओकर मानव सँ की सम्बन्ध छैक। एतहि पीएच.डी. केलाक बाद जीवविज्ञान विभाग मे नोकरी भेटि गेल आ लागि गेलहुँ विज्ञान अनुसंधान मे। कीड़ा मकोड़ाक सामाजिक व्यवहारक अध्ययन करैत गेलहुँ आ अपन गामक समाज कें छोड़ैत गेलहुँ।

देश विदेशक छोटछीन वैज्ञानिक समाज मे आदर भेटल आ किछु पुरस्कार आदि सेहो भेटल। मुदा गाम मे तँ सहजँहि हम एकटा पेटपोसा कुकुर सँ बेसी नहिए बूझल गेलहुँ कारण करीब चालीस बरखक नोकरी मे गामक कोनो छौंड़ा कें एकटा चपरासिओक नोकरी नहि धरा सकलियैक। आ हमर एकटा पितियौत जे दिल्ली मे एकटा प्राइवेट नोकरी मे छलाह से गामक दशटा नवतुरिया कें रोजगारक व्यवस्था कऽ देलखिन। फल ई जे हम गाम जाइ तँ चौक सँ दरवज्जा तक कियो टोकबो नहि करए आ हमर पितियौत आबथि तँ चौक पर सँ एक हेंज लोक हुनका दरवज्जा तक अरिआतने अबनि। एहि बातक दुख तँ जरूर होइत अछि मुदा किताब पढ़ि कए गुजर करएबलाक हाथ मे नोकरी कतए? अस्तु, सुकीर्ति नामक सार्थकता कतेक भेल से तँ अपने सँ कहब कठिन मुदा एतेक जरूर जे कोनो अपकीर्ति तँ नहिए केलहुँ।

हम सब भोर मे हावड़ा टीसन पहुँच गेल रही। दानापुर हावड़ा एक्सप्रेस मोटामोटी ठीके समय सँ एलैक। एकाध घंटा लेट भेनाइ भारतीय रेल मे लेट नहि बूझल जाइत छैक। मुदा एहि ट्रेनक एकेटा बिमारी जे ए.सी. डिब्बा बहुत पाछू रहैत छैक। बगल के प्लैटफार्म पर तखने

एकटा लोकल ट्रेन आबि गेलैक जाहि सँ उतरैत लोक सब सँ प्लैटफार्म भरि गेलैक। हमरा सब कें सामान बहुत बेसी तँ नहि छल मुदा एतबो कम नहि जे तुरत्ते लऽ कए चलि दी। एकटा मझोलबा सुटकेस जकर ट्रॉलीक पहिया टूटल छलैक, एकटा पुरान डिजाइनबला छोटका सुटकेस जाहि मे पहिया नहि छलैक, एकटा एयर बैग जाहि मे चूड़ा, चुरलाइ, कुरथीक दालि, मडुआ आ चाउरक चीकस, ओल आ धात्रीक अँचार, पुरना अरबा चाउर आदि कोंचौत कोंचौत ओकर चेन टूटि गेलैक, एकटा ब्रीफकेस जाहि मे लैपटाप रहला सँ ओहो बेस भारी भऽ गेल छलैक। पटना मे गाड़ी मे चढ़ैत काल कुली नहि लागल कारण अपेक्षित लोकनि अरिआतए आएल छलाह। हावड़ा मे कुली करबाक अपना विचार छल मुदा हमर धर्मपत्नी कें कुली करब बड़ अखड़ैत छनि जाबत अपरिहार्य नहि भऽ जाए।

हमरा बुझबा मे नहि आबि रहल अछि जे नकली साधु सन्त, ओझा गुणी, दाइ माइ, भिखमंगा आदि कें ओ मुक्त हाथें दान करैत छथि मुदा एकटा कुली, जे बेचारा मेहनत कऽ कए माथ पर बोझ उठा कए दू टाका कमाबए चाहैत अछि, तकरा सँ एतेक दुराव किएक। हमरा दूनू गोटे मे कतेको बेर एहि बात पर बहस भेल अछि मुदा हारि हमरे मानए पड़ैत अछि। बहुत विश्लेषण केला पर एकर हमरा दूटा कारण बुझाएल। पहिल कारण धर्मपत्नीक बाल्यकालक संस्कार सँ सम्बन्धित अछि। हुनका एखनो लगैत छनि जे यदि कियो मोन सँ आशीर्वाद दऽ दिअए तँ ओकर नीक फल भेटबे करैत छैक। तें जकरा तकरा दान दछिना दैत रहैत छथिन। दोसर कारण कुली सबहक झगड़ा करबाक प्रवृति। पहिने जखन लोक एकरा सब पर पूर्ण रूपें आश्रित छल तखन ई सब लोक कें लुटबो बहुत करैत छलैक। कतेक बेर हम सब बेस झंझट मे फँसि गेल रही आ कुली सब झगड़ा करए पर उतरि गेल रहए। कालेजक समय पटना जेबा एबाक अनुभव सँ बुझाइत अछि जे पहलेजाघाटक कुली सब तँ एहि लेल प्रायः विश्व प्रसिद्ध रहल होएत। पटना प्रवास मे किछु साधारण भोजपुरी सिखने रही। कुली सब पर रोब झाड़ैक हेतु एक बेर हावड़ा मे ओएह भोजपुरी मोन पारि कए बजबाक चेष्टा केने रही मुदा मैथिली आ बंगलाक सम्मिश्रण भऽ गेला सँ ओ ततेक ने हास्यास्पद भऽ गेल रहैक जे कुली हँसऽ लागल रहए। अन्त मे हमरा परतारिए देलक ‘‘बुझली बुझली रौआ दरभंगिया लोग बा। आरा छपरा के मानुस ऐसन बोली नैखे बोलत।’’

आ हमरा लागल जे रंगलाहा सियार जकाँ बीच बजार मे हम देखार भऽ गेलहुँ। हमर मोल भाव गड़बड़ा गेल छल। फेर ओ कुली हमरा सँ अनुचित पाइ लइए लेने छल।

डिब्बा सँ उतारैत काल सामान भारी लगला सँ एकटा कुली हमरा हाथ सँ लऽ कए उतारि देलक। सामान कें कुली द्वारा हाथ लगओला पर श्रीमतीजी ओकरा पर बिगड़ि उठलखिन। ताबत हम सबटा सामान उतारि लेने रही। ओ कुली कने ढिठगर तँ छलेहे, लागल सबटा कें ओरिया कए उठाबए। एतबे मे ट्रॉली लेने नवका प्रकारक 'यात्री सेवक' सेहो आबि गेल आ हमरा सँ अनुरोध करए लागल जे हम ओकरे सेवाक अवसर दियैक। हम एहि त्रिकोण - कुली, यात्री सेवक आ श्रीमतीजी - मे फँसि गेलहुँ। श्रीमतीजी सँ अनुरोध कएल जे कुली नहि तँ मॉडर्न सिस्टमबला यात्री सहायक कें दऽ दियैक कारण हम सब बहुत पछिलुका डिब्बा मे छी आ अपना बुतें सबटा सामान टैक्सी स्टैन्ड तक एतेक दूर लऽ गेल पार नहि लागत मुदा हुनका लेल तँ यहाँ न लागहिं राउरि माया। एमहर नव आ पुरान कुली से अपना मे झगड़ा कऽ रहल छल।

हम कुली सँ सामान अपना कब्जा मे लेल आ लगलहुँ ओरिआबए जे कोन तरहें एहि सब कें बिना माथ पर उठओने टैक्सी स्टैन्ड तक पहुँचाओल जाए। किछु हेराफेरीक बाद एकटा नीक युक्ति लागिए गेल। मझोलबा सुटकेसक ट्रॉलीक डंडा उपर खींचल आ एयरबैग ओहि उपर राखि देलियैक। एक हाथ सँ ई दूनू सामान कहुना गुड़काबए लगलहुँ आ दोसर हाथ मे ब्रीफकेस लेल। श्रीमतीजी छोटका सुटकेस उठओलनि। एतबा काल तक दूनू कुलीक झगड़ा बन्द भऽ गेल छलैक। आ दूनू हमरा दिस करुण दृष्टियें देखि रहल छल कारण हम एहि ट्रेनबला ओकर कमाइ खा गेल छलियैक। करीब बीस पचीस डेग आगू गेला पर ओएह कुली पाछू सँ दौड़ल आएल आ विनती करए लागल जे मात्र बीस टाका मे टैक्सी स्टैन्ड पहुँचा देत। मुदा जाबत हम किछु बाजी ताहि सँ पहिनहि हमर धर्मपत्नी ओकरा फेर डाँटि देलखिन। हमरा लागल जे ई अन्याय भऽ रहल छैक। जरूर ओहि कुली कें काज नहि भेटलैक आ दोसर गाड़ी एबा मे एखन देरी हेतैक तें ने ओ एतेक विनम्र भऽ कए एतेक कम मजदूरी पर सामान उठेबाक लेल तैयार भऽ गेल। आ से दुख बुझनिहार कियो नहि। दश बीस साल

पहिने स्थिति उनटा छलैक। हमरा पहियाबला सुटकेस नहि रहैत आ एतेक भारी सामान लऽ कए हम सब कुली पर निर्भर रहितहुँ सामान टैक्सी स्टैन्ड पहुँचेबाक लेल।

हम सब जाबत प्रीपेड टैक्सी स्टैन्ड पहुँची ताबत लाइन बेस पैघ भऽ गेल छलैक। हम नजरिए नजरि मे अपन धर्मपत्नी कें उलहन तँ दैये देलिएनि जे लेट केलाक फल बूझू आब। बगल मे सामान राखि हुनका ओकर ओगरवाहीक भार दैत हम टैक्सीक लाइन मे लागि गेलहुँ। लाइन घुसकिए नहि रहल छलैक। वामा कात देखल जे टैक्सीक संख्या नगण्य। मिनट पाँचेक अन्तराल पर एकाध टैक्सी आबि जाइत छलैक ताहू मे किछु गोटे सरसरा कए आगू चल जाइत छल माने ओकरा प्रीपेडक लाइन सँ नहि जेबाक छैक। हम अन्दाज लगाओल जे एक घंटा सँ कम मे हमरा सब कें टैक्सी भेटऽ बला नहि।

किछु टैक्सी दहिना कात बेलाइन सँ ठाढ़ छलैक आ एकाध प्राइवेट गाड़ी सेहो। एकरा सब लेल दलाल सब सक्रिय छल। एकटा दलाल हमरो टोकलक मुदा हम अन्यमनस्क भाव भंगिमा बनौने रहलहुँ आ ओकरा कोनो उत्तर नहि देलियैक। ओ फेर आगू पाछूक पसिंजर सबकें फँसेबाक चेष्टा मे लागि गेल।

हम सोचए लगलहुँ कतेक नीक होइतैक जे आगूक सबटा लोक यदि एहि दलाल सबहक फेरा मे फँसि जाइत आ लाइन छोड़ि दितए तँ हमर नम्बर तुरत्ते आबि जाइत। हम जखन नव कलकतिया रही तखन एक बेर एहन दलालक चक्कर मे फँसल रही। लाइन छोड़ि दलालक देखौलहा टैक्सी मे हम बैसि गेलहुँ तखन दलाल निपत्ता भऽ गेल आ ड्राइवर तँ पहिनहि सँ निपत्ता छल। प्रायः पन्द्रह मिनटक प्रतीक्षाक बाद दलालक संगें ड्राइवरो आएल आ तकरा संग दूटा आर लोक। दलाल हमरा बुझा देलक जे चिन्ताक कोनो बात नहि, ई दूनू रस्ता मे उतरि जेताह। हमरा साल्टलेक एबाक छल। ओ दूनू लोक रस्ता मे उतरलाह जरूर मुदा मानिकतल्लाक गली सब देखबैत। एक गोटे गोआबगान मे संग छोड़लनि आ दोसर साल्टलेक पहुँचि कए। हुनको हमरा रस्ताक विपरीत दिशा मे लाबोनी जेबाक छलनि। तकर बाद समूचा साल्टलेक घुमबैत ओ टैक्सी हमरा ए.ई. ब्लॉक मे अपन डेरा पहुँचौलक। टाका से पूरा लइए

लेलक आ समय सेहो करीब आधा घंटा बेसिये लागल। एहि घटनाक बाद हम कने ज्ञानी भऽ गेलहुँ आर टैक्सीक लेल दलालक चक्कर सदा सर्वदाक लेल छोड़ि देबाक प्रण कएल।

हम अपना अनुभव सँ बुझैत छिऐक जे दलालक चाङुर मे जे फँसत तकर ओहने गति हेतैक। तथापि एखन हमरा मात्र अपन लाभक चिन्ता अछि। आगूक सब लोक यदि दलालक बात मानि कए लाइन सँ हँटि जाए तँ हमर अपन काज जल्दी भऽ जाएत। सब लोक किएक ने खूनल खाधि मे खसओ, हम ओकरा सबहक उपर सँ चलि कए खाधि पार कऽ लेब। हम ई सोचबो नहि करबैक जे खसलाहा कें उठा दियैक। मनुष्य कखनहु कए कतेक स्वार्थी भऽ जाइत अछि। एखन हम विवेकशून्य भऽ गेल छी। मुदा ई तँ मात्र हम मोने मोन अपन इच्छा व्यक्त कऽ रहल छी। हमरा लग एहन कोनो मंत्र तँ अछि नहि जाहि सँ सबटा अगिला पसिंजर कें दलालक शरण मे पठा दियैक। आ ने सब लोक हमर बाते सुनै लेल तैयार होएत। फेर हमरा एहि विचार पर अपनहि ग्लानि होइत अछि।

लाइनक गति मे कोनो विशेष परिवर्तन नहि भेलैक अछि। हम फेर गाम मे बिताओल समयक बारे मे सोचए लगैत छी। एहि बेर हम नियम बना कए भोर साँझ चौक पर जाइत रहलहुँ। भोर मे गेला सँ अखबार जल्दी भेटि जाइत छल। साँझ मे तँ बूझू मुन्नूक दोकान पर अड्डा लगैत छलैक। मुन्नूक दोकान यदि आइ ओकर बाबा नेवालाल देखितैक तऽ किन्नहु नहि चिन्हितैक। आब दोकान बेस फैल भऽ गेलैक अछि आ एतए पान सँ लऽ कए पेप्सी तक बहुत किछु भेटैत छैक। आ जिनका बूझल छनि तिनका लेल बूटी सेहो।

दोकानक दूनू कात पैघ बेंच लागल रहैत छैक जतए चारि पाँच गामक लोक जमा भऽ जाइत छथि। जखन लोक सब कें पता लगलैक जे सुकरात गाम आएल छथि आ एखन किछु दिन रहताह तकर बाद तँ मुन्नूक दोकानक अड्डा बूझू मिनी साहित्य गोष्ठी मे बदलि गेल। पहिल बेर बूझल जे एहि बज्र देहाती इलाका पर्यन्त मे साहित्य साधना करएबला लोक सब छथि। कविता पाठ सँ लऽ कए अन्ताक्षरी आ विद्यापति गीत तक चलऽ लगलैक आ हमरो एहि मे मोन लागए लागल। गाम आएब सार्थक बुझाए लागल।

साँझक रमन चमन बढ़ेबा मे किछु ताड़ी पीनिहारक बेसी योगदान होइत छलैक। हमरा गाम मे ताड़ीक दोकान अदौ सँ छैक। आइ सँ पचास वर्ष पहिने जखन चौक संस्कृतिक जन्म नहि भेल छलैक आ हाट हप्ता मे दू दिन लगैत छलैक तखन एतए मात्र दूटा दोकान छलैक। मुन्नूक बाबा नेवालाल पानक दोकान करैत छल आ करीब पचास लग्गा हटि कए सिरीबाबूक ताड़ीक दोकान छलनि।

सिरीबाबूक बारे मे ई बात जगजाहिर छलैक जे टाकाबला रहओ आ कि फाकामस्त, जेठरैयतिक खानदानक रहओ आकि टाला सँ माटि कटनिहार, यदि ताड़ी पीबाक इच्छा छैक तँ ताड़ी जरूर भेटतैक। ओतबे नहि, सब एके पाँती मे बैसि कए पीबैत छल आ एके रंग चखना खाइत छल। साम्यवादक प्रचार मे हमर गाम अड़ोसिया पड़ोसिया सँ बहुत बेसी अगुआएल छल आ एकर श्रेय सिरीबाबूक ओहि दोकान कें सेहो छलैक। बेसी ग्राहक सँ हुनका मासी हिसाब किताब चलैत छलनि। ओना ताड़ीक दोकानक कारण बाद मे सिरीबाबू भूमिहीन भऽ गेला से दोसर बात।

ताड़ी पीनिहारक संख्या कम नहि छलैक मुदा एखन जे दृश्य देखबा मे आएल से कहाँ होइत छलैक। कहियो कए सुखना मुसहर ताड़ीक दोकान सँ घुरैत काल लोचन बाबूक हाथी कीन लैत छल आ राति भरिक मालिक बनि जाइत छल। लगैत अछि आब लोक पीबैत अछि कम आ नाटक करैत अछि बेसी। एक लबनी पेट मे गेलैक कि नहि, लागल शोले सिनेमाक डायलग बाजए। इएह नाटक हमरा सबहक मनोरंजन भऽ जाइत छल।

इएह सब सोचि रहल छलहुँ कि एकाएक लाइन घुसकए लगलैक। आश्चर्यमिश्रित खुसी भेल। पता चलल जे लाइन मे ठाढ़ तीनटा विद्यार्थी जिनका साल्टलेक मे ए.टी.टी.आइ. जेबाक छलनि हुनका लेल एकटा टाटा सूमो आबि गेलनि आ एहि तीन गोटेक हटि गेला सँ लाइन घुसकए लागल छलैक। टैक्सीक आगमन कमे भऽ गेल छलैक आ हमर इच्छा रहितहु एकोटा लोक दलालक जाल मे नहि फँसल छल। कौआक सरापे कतहु बेङ मरलैक अछि।

रौद बढ़ि रहल छैक। हमर प्रतीक्षा आब कष्टप्रद भेल जा रहल अछि। हमर ध्यान चलि जाइत अछि प्रीपेड काउन्टर पर लागल बड़का नोटिस बोर्ड पर। ओहि मे अंग्रेजी मे

लिखलाहा पाँती सब मे हिज्जय आ व्याकरणक अशुद्धि सब देखि मोन तामसे व्यग्र भऽ जाइत अछि। हावड़ा स्टेशन सन प्रसिद्ध स्थान जतए देश विदेशक लाखो लोक अबैत छैक। अनठिया लोक पढ़तैक तँ की कहतैक जे एहि शहर मे लोक कें अंग्रेजीक ज्ञान नहि छैक। बंगालक ई धरती जतए एक सँ एक उद्भट विद्वान भऽ गेल छथि तकर एहन दशा ?

हिज्जयक अशुद्धि पर फेर गाम मोन पड़ि जाइत अछि। एहि बीच ओमहर एकटा नीक परिवर्तन भेलैक अछि जे नवका सड़कक कात मे हरेक गामक सीमा प्रवेश करैत काल ओकर नाम भेटि जाएत। गाढ़ नील रंगक पट्टी पर उज्जर रंग सँ लिखल नाम राति मे गाड़ीक हेडलाइट पर बेस चमकैत छैक। पहिने विदेश मे एना लीखल देखियैक तँ सेहन्ता लागए। मुदा हमरा अपन गामक नाम पढ़ि बहुत दुख भेल। एतेक दिन सँ जे हिज्जय हम सब लिखैत एलहुँ तकरा बदलि देल गेलैक। कएक गोटे सँ पुछलियैक मुदा कियो नहि बतौलक जे एना कोना भऽ गेलैक। कियो सड़कक ठीकेदारक दोष लगाबए तँ कियो मुखियाक आ फेर कियो ककरो अनकर। सबटा फूसि आ सबटा बहन्ना। गामक नाम की कतहु एक ठाम लीखल छैक ? कतेक नक्सा कतेक दस्तावेज खतियान पर ई नाम सैकड़ों साल सँ लिखल चल एलैक अछि। आर नहि किछु तँ लगे मे पोस्ट आफिसक साइन बोर्ड सेहो छलैक। केहनो अनपढ़ ओ पेन्टर रहल होएत जरूर एही गामक कोनो लोक सँ ने पुछने हेतैक गामक नाम आ तकर हिज्जय। गलती भऽ गेला पर बहन्ना बनबै मे हम सब बेस होशियार छी। ककरहु की गाल लागए देबैक?

हमर प्रतीक्षा कने कम होइत अछि। दूटा टैक्सी एलैक आ एक गोटे दलालक वाकपटुता सँ प्रभावित भऽ कए लाइन छोड़ि देलनि। तैयो हम अन्दाज लगबैत छी पन्द्रह मिनट सँ कम नहि लागत खिड़की तक पहुँचौ मे। हम अनेरे एमहर ओमहर ताकए लगैत छी। सामने स्टेशनक मेन बिल्डिंग पर लीखल देखैत छी ‘‘टर्मिनल 1: पूर्व रेलवे मेल-एक्सप्रेस-उपनगरीय गाड़ियाँ’’। जहिया सँ सियालदहबला गंगासागर चललैक हम सब हावड़ा बड़ कम अबैत छी तें ई परिवर्तन दृष्टिगोचर नहि भेल छल। बड़ खुसी होइत अछि। चलू किछु काज मे तँ हावड़ा स्टेशन आगू बढ़ल। एतए हवाई अड्डा जकाँ टर्मिनल भऽ गेलैक। सत्ते, दोसर कातबला

नवका बिल्डिंग पर लिखल छैक ''टर्मिनल 2: दक्षिण पूर्व रेलवे मेल-एक्सप्रेस-उपनगरीय गाड़ियाँ''। एखन तक भारत मे कोनो स्टेशन पर एहि तरहें गाइड करैत शब्दक व्यवहार नहि देखने छलियैक। मुदा तखने हमर नजरि पड़ि जाइत अछि सामने उँचका फूटब्रिज जकाँ जे बिलबोर्ड बनल छैक ताहि पर। आहि रे बा ! एतए तँ अंग्रेजी मे लिखल छैक ''न्यू कम्प्लेक्स प्लैटफार्म 17-23''। भऽ गेल ने दुविधा। फेर हम ट्रेनक आबाजाहीक सम्बन्ध मे लगातार लाउडस्पीकर पर होइत उद्घोषणा कें ध्यान सँ सुनऽ लगैत छी जे एहि मे कोन शब्दक प्रयोग होइत छैक। हमरा फेर आश्चर्य होइत अछि जे ओहि मे मात्र प्लैटफार्म नम्बर कहल जाइत छैक। ने टर्मिनल 1 ने टमिनल 2 आने न्यू कम्प्लेक्स। आब लोक अपनहि अन्दाज लगाबओ जे फलाँ नम्बर प्लैटफार्म कतए छैक।

कत्तौ कोनो तालमेल नहि। जरूर दूटा अलग एजेंसी द्वारा ई लिखाओल गेल हेतैक। टर्मिनल शब्द प्रायः रेल अधिकारी लिखौलनि आ बिलबोर्ड पर लीखल सूचना सम्भवतः हावड़ा नगरनिगमक काज हेतैक। मुदा ई हमर मात्र अनुमान अछि। हम एहि विषय मे कोनो अनुसंधान नहि कएल। आब कल्पना करू एकटा अनचिन्हार अथवा विदेशी लोक गाड़ी चला कए हावड़ा पहुँचौत अछि आ न्यू कम्प्लेक्स दिस बढ़ैत अछि। एहि नामक कोनो स्थान वा बिल्डिंग ओकरा नहि भेटैत छैक अपितु ओ देखैत अछि ''टर्मिनल 2'' लिखल बिल्डिंग। की प्रतिक्रिया हेतैक ओकर ? हम सब इएह मानि लैत छी जे लोक कहुना पता लगाइए लेतैक।

हम टैक्सीक प्रतीक्षा कऽ रहल छी, टैक्सी आबि नहि रहल छैक मुदा चिन्तन प्रक्रिया पर लगाम तँ लगाओल नहि जा सकैत छैक। ई चिन्तन प्रक्रिया एकटा रोग छियैक। मुदा इएहटा एकटा रोग छैक जे स्वस्थ मस्तिष्क मे रहैत छैक आ एकर भुक्तभोगी डाक्टरक शरण मे नहि जाइत अछि। लाइन मे लागल प्रतीक्षारत लोक एहि रोगक शिकार बेसी होइत अछि।

हमर मोन फेर दौड़ि जाइत अछि गाम पर। गाम मे बहुत परिवर्तन भेलैक अछि। कोठाक घर आ बिजलीक पोलक संख्या बहुत बेसी बढ़लैक अछि। आ लोला सेहो, बच्चाक हाथ मे दैबला काठक लोला नहि, इलेक्ट्रॉनिक लोला जे बूढ़ जवान आ बच्चा सबहक हाथ मे छैक, जकर नाम थिकैक सेल्यूलर फोन मुदा लोक एकरा मोबाइल कहैत छैक। बंसियाक मायक हाथ मे

सेहो एकटा लोला देखैत छियैक। हमरा खुसी होइत अछि। बंसी दिल्ली मे ऑटोरिक्शा चलबैत अछि आ सपरिवार ओतहि रहैत अछि। जखन ओ दश बरखक रहए तखन एक दिन बाप हरबाही मे पठा देलकै। अगिला दिन ओ दिल्ली भागि गेल। चाहक प्लेट दिल्ली मे धोइत रहल मुदा गामक काज नीक नहि लगलैक। फेर किछु पैघ भेला पर ओतहि रिक्शा चलबए लागल। आब तँ बेस होशियार लोक भऽ गेल अछि आ ऑटोरिक्शा चलबऽ लागल अछि। बेटा बेटी कें कन्वेन्ट स्कूल मे पढ़ा रहल अछि। दिल्ली सरकारक नव योजना सँ एकरा सब कें लाभ भेलैक जाहि मे गरीब लोकक किछु बच्चा कें आसपासक नीक स्कूल मे एडमिसन करेबाक व्यवस्था छैक। बंसीक एकमात्र इच्छा छैक जे अपने तऽ नहि पढ़लक मुदा कहुना बच्चा सब पढ़ि लैक।

ओएह बंसी माय कें ई लोला पठा देलकैक अछि। बंसियाक माय सब दिन सँ लुरिगर लोक। हमरा बियाहक साल ओ गौना भऽ कए आएले छल। हमरा मोन अछि कोजगराक भोज मे ऐंठ उठाबक लेल ओकर सासु एही नवकनियाँ कें हमरा आङन पठा देने छलैक कारण ओकरा बोखार लागल छलैक। ताहि समय प्रथा छलैक ऐंठ उठेनिहार पात परहक सामान घर लऽ जाइत छल। ई नवकनियाँ हमरा माय सँ तीनटा थारी मँगलक आ ऐंठक भात जे सुखाएल छलैक तकरा एकटा थारी मे आ तरकारी सब कें अलग सँ दोसर तेसर थारी मे रखैत गेल। बाकी सबटा सनलाहा भात दालि तरकारी आदि कें पातक संग फेकि देलकैक। जे देखलक सबकें छगुन्ता लगलैक कारण आन लोक एकेटा अढ़िया मे सबटा उठा लैत छलैक। हमर माय अनायासे बाजि उठल छल ‘‘पुतोहु होअए तँ एहन ने’’। आब बंसियाक माय ऐंठ नहि उठबैत अछि। ऐंठ कियो नहि उठबैत छैक। आब भोजन केनिहार स्वयं पात उठा लैत छथि नहि तँ घरबारिये ऐंठ उठबैत छथिन।

बंसियाक माय आङन आएल छल श्रीमतीजी सँ भेंट करए। हम चौल करैत ओकरा पुछलियैक जे नम्बर मिला कए बेटा कें फोन कऽ लैत छी की ? ओकर मुखाकृति दयनीय भऽ जाइत छैक। निरीह भाव सँ कहैत अछि ‘‘नै बौआ से लूरि कहाँ भेल ? खाली हरियरका बुटाम दाबि कए बात कऽ लैत छी आ ललका दाबि कए बन्द कऽ दैत छियैक। एतबे छौंड़ा सिखा

देलकै। कहियो काज पड़ैत छैक तँ मुन्नूक दोकान पर जा कए ककरो सँ नम्बर मिलबा लैत छी।'' हम सोचौ पर बाध्य भऽ जाइत छी यदि बच्चा मे बंसिया माय कें स्कूल जेबाक अवसर हमरे जकाँ भेटल रहितैक तँ की ओहो आइ वैज्ञानिक नहि भऽ गेल रहैत ? आ कि कोनो नीक अफसरे? बुद्धि तँ कोनो जाति विशेष अथवा व्यक्ति विशेषक बपौती नहि छिऐक। बंसियाक मायक प्रतिभा कुंठित भऽ गेलैक बहिकिरनीक काज करैत। हमरा लगैत अछि एकटा कुशाग्रबुद्धि व्यक्तिक शिक्षा नहि भेला सँ देश आ समाज कें बहुत हानि भऽ गेलैक।

हमर सोचबाक रेलगाड़ी बढ़ले जा रहल अछि आ टैक्सीक लाइन एक्का दुक्का घुसकि रहलैक अछि। अन्त मे टैक्सी भेटिए जाइत अछि। जल्दी जल्दी सामान ढुका ओहि मे बैसि जाइत छी आ ड्राइवर कें कहैत छियैक साल्टलेक चलए। जँ जँ टैक्सी हावड़ा ब्रिज, पोस्ता, गणेश टाकीज होइत गिरीश पार्क अबैत छैक हमरा कलकत्ता मोन पड़ए लगैत अछि। एतेक दिन मे की की परिवर्तन भऽ गेलैक। देखैत छी सड़कक दूनू कात त्रिशूल जकाँ लैम्प पोस्ट गाड़ल गेलैक अछि। लंदनक नकल पर लैम्प पोस्ट। कचड़ाक ढेरीक बीच लैम्प पोस्ट, फुटपाथ पर नव पुरान मैल कुचौल फाटल सीअल बदरंग प्लास्टिक सँ छाड़ल दोकान सबहक बीच लैम्प पोस्ट। रस्ता पर बेहिसाब खाधि खूनल आ तकरा बीच ओ त्रिशूल गाड़ल। आ ताहू पर एखने विज्ञापन सेहो साटल। आ रोडक बीच मे जे पुरना उँचगर लैम्प पोस्ट छैक से उलहन दैत एखनहु ठाढ़ छैक कारण ओकर लैम्प हटा देल गेलैक अछि। सत्ते करचीक टाट पर रेशमक बखिया लगलैक अछि। कोनो तालमेल नहि। हमरा सब ओस्ताद छी एक पएर सँ भरतनाट्यम नचौत दोसर पएर सँ भांगड़ा नचबा मे।

टैक्सी मे बैसल धर्मपत्नी कें चिन्ता छनि फेर सँ एतेक दिनक बाद डेरा मे काज राज कोना शुरू करतीह। घर मे बेस मोटगर धूरा माटि लागल हेबे करतैक। आइ तँ काजबाली झी सेहो नहिए औतनि। हमरो कएकटा काज सब स्मरण होमए लगैत अछि। आ गामक बात सब बिसरए लगैत छी। शनैः शनैः स्मृति पटल पर कलकतिया जिनगी आबि रहल अछि आ गाम विस्मृतिक गर्भ मे जा रहल अछि। सबटा चित्र जाड़ मासक भोरुकबाक कुहेस मे डूबल जकाँ अस्पष्ट भेल जा रहल अछि। परदेसियाक इएह गति।

चार्वाक

हम ई शहर छोड़ि कए जा रहल छी। ओना सरकारी नोकरी मे रहैत ट्रान्सफर तऽ होइते रहैत छैक आ लोक एक शहर सँ दोसर शहर जाइते रहैत अछि मुदा हमर ट्रान्सफर आ शहर बदलब एकटा विशेष अर्थ रखैत छैक। ई शहर छोड़ब आ कि एहि सँ पूर्व जाहि कोनो शहर मे रहलहुँ तकरा छोड़ब हमरा लेल माथ पर सँ एकटा पैघ बोझ उतारब रहैत अछि।

जखन बहुत बेसी लोक चारू कात हमरा ताकए लगैत अछि आ हमरा नुकएबाक रस्ता सब बन्द भऽ जाइत अछि तऽ बूझि लिअऽ जे हमरा आब ट्रान्सफर करा लेबाक चाही।

हम ने कोनो चोर उचक्का छी आने एहन कोनो पैघ अपराधी। हमरा मात्र एकटा आदति लागि गेल अछि जे जखन कखनहुँ टाका कमि जाइत अछि तऽ कोनो परिचित सँ किछु पैंच माँगि लैत छी। आ फेर ओ पैंच सधाएब बिसरि जाइत छी। सत्ते पूछी तऽ बिसरैत नहि छी, बिसरबाक नाटक करैत छी। ईहो कहि सकैत छिऐक जे हम सधएबाक स्थिति मे नहि रहैत छी। छोट छीन नोकरी आ पैघ खर्चा। कखनहुँ बहुत तंग भऽ गेला पर एक गोटेक पैंच दोसर सँ आर बेसी पैंच लऽ कए सधा दैत छिऐक, अंग्रेजीक फकरा ‘‘रॉब पीटर टू पे पॉल’’ सार्थक करैत। इएह क्रम चलैत रहलैक अछि पछिला पचीस साल सँ।

लोक हमरा ठक कहैत अछि। परन्तु अहीं कहू हम ठक कोना भेलहुँ ? हम अपना कें चार्वाकक अनुयायी बुझैत छी। हम कखनहुँ अस्वीकार नहि करैत छिऐक जे हम फलाँ सँ एतेक पैंच लेलियैक आ कि चिलाँ सँ ओतेक लेलियैक। हम तऽ हरदम अपना कें ऋणी बुझिते रहैत छिऐक। प्रत्यक्ष मे बरू हम लोक सँ नुका कए भागि जाइत होइ मुदा परोक्ष मे हम सदिखन ओहि दाता दिगम्बर सबहक प्रशंसा करैत रहैत छिएनि जिनका कारण हमर जिनगी सुखमय चलि रहल अछि। हुनके सबहक कृपा सँ हम गबैत रहैत छी ‘‘यावत जिबेत सुखं जिबेत, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत’’।

वाह रे वाह, की विलक्षण सिद्धान्त छैक ! ऋण लिअऽ आ घी पीबू। कहबाक तात्पर्य जे घी जरूर पीबू बरू ऋणे लेबए पड़त से मंजूर। एतए लोक बहस कऽ सकैत अछि जे ऋण

जखन लेबे करब तऽ घीए टा किएक, सोमरस सेहो किएक नहि पीबी? भऽ सकैत अछि फरमूला लिखनिहार ऋषि चार्वाक मात्र आवश्यक आवश्यकताक पूर्तिक लेल ऋण लेबाक अनुमति देने होथिन। हुनका विचारें अनावश्यक खर्चक लेल ऋण लेब अनुचित रहल होएत। एकरे ने कहबैक साम्यवादक सिद्धान्त। सब कें सुखी जीवन जीबाक अधिकार छैक। जकरा अपना छैक से अपना सँ करए आ जकरा नहि छैक से ऋण लऽ कए जीबए। एहि तरहें प्रथम साम्यवादी तऽ चार्वाके भेलाह। जरूर कार्ल मार्क्स साम्यवादक फरमूला हुनके सँ चोरौलखिन।

एहि संदर्भ मे हम अपन गुरू अशोक कें सेहो नहि बिसरबैक। हम आइ जे किछु छी तकर श्रेय ओकरे छैक। अशोक अर्थात कालेज मे हमर संगी। अशोक माने कालेजक एकटा चलता पुरजा विद्यार्थी। खूब सिनेमा देखए। सब कें डाह होइक ओकरा सँ जे कतए सँ एकरा एतेक पैसा अबैत छैक सब दिन सिनेमा देखबाक। एक दिन हमरा सँ ओ पाँच टाका मँगलक। हाथ मे एकटा करगर नमरी झुलबैत कहलक ‘‘रिक्शाबला कें देबाक अछि, खुदरा नहि अछि, एखने भजा कए दऽ दैत छियौक’’। हम सुधंग लोक। ओकर जाल मे फँसि गेलहुँ। सोचलियैक पहिले बेर माँगि रहल अछि। कोना कहियौक नहि। रहीमक दोहा मोन पड़ि गेल ‘‘उनसे पहले वे मुए जिन मुख निकसत नाहि’’। टाका दऽ देलियैक। बस, ओ बिसरि गेल।

हमरा मँगैत लाज हुअए। एक मास बीत गेल, दू मास बीत गेल। फेर परीक्षाक समय से आबि गेलैक। पाँच टाका बहुत बेसी नहि तऽ बहुत कमो नहि छलैक। फर्स्ट किलासक सिनेमाक टिकट आ कि होटल मे दू बेर माछ भात खाएब एतेक मे भऽ जाइत छलैक। अशोक भेटए जरूर मुदा एहन ने गम्भीर मुद्रा बना लिअए जे हमरा लागए टाकाक चर्चा करब बड़का अपराध होएत। परीक्षाक बाद अशोक कतए निपत्ता भऽ गेल से ककरहु खबरि नहि भेलैक।

गाम जाइत काल एहि बातक चर्चा हम किशोर सँ केलियैक तऽ ओ बड़ी काल तक जोर सँ भभा कए हँसल छल। फेर कहलक जे कोनो बात नहि, तों एकसरे नहि छें। अशोक एहि

तरहें बहुत लोक कें मुरलकैक अछि आ सब ओकरा तकने फिरैत छैक। हम बेबकूफ बनल रहि गेल छलहुँ।

मुदा आब लगैत अछि जे ओ पाँच टाका मे हमरा बहुत नीक गुण सिखा गेल आ ई तऽ ओकर गुरु दक्षिणा मात्र भेलैक। बहुत सस्ते मे ई गुण हमरा भेटि गेल। अशोकक सिखाओल गुण मे हम बहुत रास नव अध्याय जोड़ल अछि। आब हम एकरा पूर्ण कलाक रूप मे विकसित कएल अछि। आब जँ ओ भेटैत तऽ ओकरा पता लगितैक जे कोना गुरु गुरे रहि गेलैक आ चेला चीनी भऽ गेलैक।

हम छात्र जीवन मे बड़ मुहदुब्बर रही तें ककरो सँ टाका पैसा मँगबाक कोनो सबाले नहि उठैत छलैक। एकटा लेक्चर नोटो ककरो सँ मँगबा मे हमरा पसीना छूटए लगैत छल। बच्चा मे तऽ एतेक मुहदुब्बर आ लजकोटर रही जे कने आगिओ अनबा लेल माय यदि ककरो आङन पठाबए तऽ हम ओहि आङन मे कोनटा पर जा कए ठाढ़ भऽ जाइ। आगि मंगबै कोना से हिम्मते नहि होअए। बस ठाढ़ रही ताबत तक जाबत तक ओहि आङनक कियो लोक हमरा देखि नहि लिअए। कतेक बेर तऽ देरी भेला सँ माइये चिन्ता मे पड़ि हमरा तकैत आबि जाए। तखन हम चुपचाप भागि जाइ आ ओ अपनहि आगि लऽ कए आबए।

आब अहीं सोचियौक एहन लोक कोना ककरो सँ टाका पैसा पैंच मँगतैक। कालेज मे बहसल आदति नहि रहलाक कारण गार्जियन सँ जे भेटैत छल ताही मे काज चलबैत छलहुँ। ओहि मे एतेक गुंजाइस तऽ रहिते छलैक जे मास मे एकाध सिनेमा देखल जा सकए। बस ताही सँ संतोष करैत छलहुँ।

मुदा बियाह भेलाक बाद बढ़ैत परिवारक जिम्मेवारी निमाहब दोसर बात छलैक। छोट छीन नोकरी, बान्हल आमदनी, ने आइली ने बाइली। अपने तऽ मोन कें कठोर संयम मे बान्हि कए राखी मुदा पत्नीक आकांक्षा पर कोना लगाम लगाउ आ फेर शनैः शनैः बच्चा सब सेहो आबए लागल। कालेज मे जे चार्वाक दर्शन पढ़ने रही ‘‘यावत जिबेत सुखं जिबेत, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत’’ से तऽ लागए मात्र किताबेटा मे बन्द छैक। व्यवहारो मे ई सम्भव छैक से हमरा

कल्पनो नहि छल। ककरो आगाँ हाथ पसारब आ याचना करब, एहि सँ नीक तऽ मृत्यु कें वरण करब छल। हमर पूर्वज अयाची मिसरक रक्त थोड़बो तऽ हमरो शरीर मे बहिते अछि।

खगल लोक कें नाना प्रकारक दिवास्वप्न अबैत रहैत छैक। उत्पन्ते विलीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः। एहने लोक कें लौटरीक सबसँ बेसी आशा रहैत छैक आ लौटरी व्यवसायक स्तम्भ एहने लोक होइत अछि। धनिकहा की लौटरी टिकट कीनत ? खगलाहा कें लगैत रहैत छैक कियो अबितैक आ टाकाक झोड़ा उझीलि दितैक। आ से व्यवहार मे कखनहुँ नहि होइत छैक तखन लोक हतोत्साह भऽ कए आत्महत्या दिश प्रवृत्त होइत अछि। मृत्युक विचार जतेक आसान छैक ओकरा व्यवहार मे आनब ओतबे कठिन। फेर मृत्युक सेहो कतेक प्रकार छैक। ऋणियाँ लोक तऽ बेर बेर मरिते रहैत अछि। "रहिमन वे नर मर गये जे कछु माँगन जाहि"। तखन यदि एहन मरला सँ घी भेटि जाए तऽ फेर गरा मे ससरफानी लगेबाक आ कि ट्रेन मे कटबाक कोन काज? आ एहने विचार करैत एकटा विकट परिस्थिति मे हमरा अशोक मोन पड़ि गेल।

मासक तेसरे हप्ता बीतल छलैक आ हमर हाथ खाली भऽ गेल छल। ठकि फुसिया कए हम पत्नीक कोसल मे सेहो हाथ लगा देने छलियैक। कोठी मे जखन भूर भऽ जाइत छैक तऽ खाली होइत कते देरी। दरमाहा भेटबा मे एखनो सातटा दिन बाँकी छलैक।

अशोक जखन हमरा सँ पाँच टाका लेने छल तखन ओकरा हाथ मे नमरी छलैक। लोक कें फँसेबाक ई ओकर तरीका छलैक। ओहि एकटा हरियर पात मे कतेको पँचटकही दशटकही कें आकर्षित करबाक क्षमता छलैक। मुदा हमरा लग नमरी कतए सँ आओत ? नमरी रहैत तऽ एक हप्ताक गुजर कहुना चले जाइत। हमरा तऽ याचना करबाक छल बिना कोनो नमरी के। अशोक ठकैत छलैक, हमरा भीख मँगबाक छल। हमरा अशोक नहि बनबाक छल। मात्र एहन याचक जे प्रथम अवसर पर हाथ मे टाका अबिते कर्जा सधा देत।

बहुत हिम्मत कऽ कए हम सदाशिव काका लग पहुँचल रही। सदाशिव काका बहुत दूरक सम्बन्धें बाबूजीक मसियौत भाइ लगैत छलखिन आ ओही शहर मे रहैत छलाह। एल.आइ.सी. मे काज करैत। डेरा मे वित्त झलकैत। काकीक स्टाइल आ स्वागत सत्कारे सँ पता चल

जाइत जे एहि घर मे लक्ष्मीक कृपा छनि। कहियो काल डेरा जाइ आबी मुदा टाका पैसाक चर्चा कहियो नहि कएल।

ओहि दिन हम एकसरे गेल रही। काकी पुछलनि ‘‘बौआ की बात आइ एकसरे एलहुँ? कनियाँ नीके तऽ छथि ने।’’ हम कहलियनि ‘‘सब किछु ठीक छैक, हमरा मात्र कने काका सँ एकटा खानगी गप करबाक अछि’’। चाह बिस्कुट आबि गेल। काका सेहो आबि बैसलाह। मुदा हम बौक भऽ गेलहुँ। भारी अन्तर्द्वन्द मे पड़ल रही। बकारे नहि फूटए जे टाका माँगब। खानगीक नाम सूनि काका सेहो साकांक्ष भऽ गेल छलाह। अन्त मे डराइते डराइते एतबे बाजल ‘‘काका एहि मास कने बेसी मुश्किल मे पड़ि गेल छी।’’ एतबा बजैत लागए जे छाती फाटि जाएत। रक्तचाप बढ़ि गेल जेना। होअए जे आँखि सँ गंगा यमुनाक धार बहए लागत। बड़ मुश्किल सँ अपना कें सम्हारने रही। काका बूझि गेलाह। महादेवक कृपा। पुछलनि कतेक चाही। आब हम भारी असमंजस मे पड़ि गेलहुँ। किछु सोचि कए तऽ आएल रही नहि जे कतेक माँगब - सौ कि पचास कि दू सौ। मोबाइलक जमाना नहि छलैक जे कात भऽ कए पत्नी सँ पूछि लितहुँ। कनेक काल गुम रहलहुँ। फेर बहुत हिम्मत कऽ कए एतबे कहि सकलहुँ ‘‘एक सौ। पहिले तारीख कें दऽ देब।’’ काका कोनो भूमिका नहि बन्हलनि आ एकटा नमरी हमरा हाथ मे पकड़ा देलनि। हम एवरेस्ट विजेता जकाँ हर्षित मोने घर आएल रही पहिल बेर सफल याचना कऽ कए।

पहिली तारीख कें दरमाहा भेटलाक बाद सबसँ पहिने ऑफिस सँ सीधे हम सदाशिव काकाक डेरा गेल रही आ हुनकर नमरी आपस कऽ देने रहिएनि। मुदा घर एला पर जखन बचल दरमाहा पत्नी कें देलिएनि आ ओ मासक खर्चाक हिसाब लगाबए लगलीह तखने हमरा बुझबा मे आबि गेल जे एहि बेर फेर मासक पन्द्रहमे दिन ककरो आगू हाथ पसारए पड़त।

किछु दिन तक तऽ हम सज्जनताक परिचय दैत सुच्चा याचके बनल रहलहुँ आ प्रतिज्ञाक अनुसार समय पर सबहक ऋण सधबैत रहलियैक। तरीका ओएह ‘‘रॉब पीटर टू पे पॉल’’। सौ सधबैक लेल डेढ़ सौक कर्ज। मुदा बोझ बढ़ैत बढ़ैत एतेक भारी भऽ गेल जे आब एहि तरीका सँ सज्जनताक निर्वाह सम्भव नहि छल। ऑफिस मे पी.एफ. आ कोऑपरेटिव

सोसाइटीक कर्ज सँ कहियो मुक्ति नहिए भेटल छल। घी खेबाक आदति छोड़ाएब बड़ कठिन। आब तऽ एही तरीका सँ जोगाड़ करैत बच्चा सबकें कन्वेन्ट स्कूल मे नामो लिखा देने छलियैक जखन कि हमर ऑफिसक सहयोगी सबहक बच्चा सब सरकारी विद्यालय कें सुशोभित करैत छलखिन। एकेटा उपाय छल जे गामक किछु जमीन बेचि प्रतिष्ठाक रक्षा करी।

एही गुनधुन मे एक दिन फेर अशोकक स्मरण भेल। लोक दुख मे भगवान कें स्मरण करैत अछि। हम अपन गुरू अशोक कें स्मरण केलहुँ। विश्लेषण करए लगलहुँ जे अशोक मे एहन कोन गुण छलैक जे ओ याचक सँ वंचक बनि गेल आ सेहो कोनो ग्लानि नहि। सबसँ पँचटकही दशटकही ठकैत छल आ ठाठ सँ रहैत छल। नीक नीक पैंट शर्ट, महग घड़ी आ सब दिन रिक्शे पर चढ़ि कए सिनेमा देखए जाएब ओकर परिचय भऽ गेल छलैक। कोना ओ ग्लानि कें पचा लेने छल। जरूर ओकरा मे नीलकंठ महादेवक गुण छलैक। एहि गुण कें प्राप्त करबा लेल कोन तपस्या करए पड़तैक? की महादेव हमरा ओ गुण नहि देताह?

हम तपस्या शुरू कएल। हमरा बुझा गेल जे बिना इन्द्रिय कें जितने ई सम्भव नहि। हमरा कान बहीर करए पड़त जाहि सँ दाता सबहक कोनो आक्षेप कें नहि सुनियैक अथवा सूनि कए मस्तिष्क तक नहि पहुँचए दिऐक, आँखि आन्हर करए पड़त जे दाता सबहक बगल मे ठाढ़ो भेला पर हम सूरदास भेल रही। आ सबसँ बेसी जरूरी अपन त्वचा कें गैंडाक मोटका त्वचा सँ बेसी मोट बना ली जे समाज मे कतहु कतबो व्यंग्यवाण फेकल जाए हमरा लेल धनि सन रहए।

पहिल बेर टाका आपस करबाक तारीख फेल केलक। लोक किछु दिन तऽ आशावाटी मे रहबे करैत अछि। एतेक दिनक हमर प्रतिष्ठा नीक छल से सब कें बूझल छलैक। तें तत्काले कियो हतोत्साहित नहि भेल। हम एक महाजनक प्रति चुप्पी साधि दोसर सँ ऋण लेल आ काज आगू बढ़ैत गेल। गाम परहक जमीन बेचबाक विचार चौत मासक ओस जकाँ उड़ि गेल।

प्रायः दू मासक बाद हमरा पहिल बेर तगेदा भेटल। एकाएक हम विचलित भऽ गेलहुँ। मूड़ी नीचा भऽ गेल। लागल कहियैक ‘‘हे धरती तू फाटह आ हमर रक्षा करह’’। ऋण लैत रहल छलहुँ मुदा तगेदा कोना टारब से लूरि तऽ एखन तक सिखबे नहि कएल। फेर तखने गुरू अशोक कें स्मरण कएल। जय महादेव। एकटा युक्ति फुड़ा गेल। तगेदा केनिहार कें कहलिएनि ‘‘बस दस दिन आर रुकि जाउ। पे कमीशनक एरियर भेटिते अपनेक टाका पहुँचि जाएत।’’ हम जनैत छलहुँ जे ई झूठ छलैक। पे कमीशनक एरियर सँ हमरा स्कूटर किनबाक छल। हमर लाइफ स्टाइल बदलि गेल छल आ स्कूटर आब आवश्यक आवश्यकताक वस्तु भऽ गेल छल। मुदा एकटा झूठ सँ तत्काल जान आ कि प्रतिष्ठा बाँचि गेल आ हमरा लागल जे हम ओलिम्पिक मे मेडल जीत लेने होइ।

एतबे मे महादेवक कृपा देखू जे पे कमीशनक एरियर भेटबाक संगहि हमर ट्रान्सफर सेहो भऽ गेल। अन्हरा कें की चाही दूटा आँखि। पुरना बोझ अनेरे हल्लुक भऽ गेल। दोसर ठाम नव शहर, नव वातावरण, सरकारी नोकरी आ नवका स्कूटरक दबदबा। हमरा छोट छीन ऋण भेटबा मे कोनो दिक्कत नहि भेल। सधाएब तऽ हम आब महादेवक कृपा सँ बिसरिए जाइत छलहुँ। पूर्ण वंचक तऽ नहि भेल छलहुँ मुदा ग्लानि कें पचेबाक लूरि आब सीख गेल छलहुँ। आब हमहूँ समाज शास्त्रक एहि सिद्धान्त कें साबित कऽ देलियैक जे वंशानुगत संस्कार किछुओ रहौक लोक पढ़ि कए आ अभ्यास कऽ कए कोनो विद्या मे पारंगत भऽ सकैत अछि। बढ़हीक बेटा कें बढ़ही होएब आसान छैक मुदा ओ वेदक ज्ञाता आ पंडित सेहो बनि सकैत अछि, यदि एकटा नीक गुरू भेटि जाइक आ परिश्रम करए। हम आब प्रतिदिन ‘‘ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत’’ मंत्रक जाप करैत छलहुँ। आब हमरा बीच बजार मे नांगट हेबाक लाज भागि गेल छल। एकम लज्जाम परित्येज सर्वत्र विजयी भवेत। हम आब विजय पथ पर बढ़ैत चल जा रहल छलहुँ।

मुदा नीक जकाँ ससरैत गाड़ी मे जेना एकाएक ब्रेक लागि गेल। कतहु ने कतहु तऽ सेर कें सवासेर सँ भेंट भैए जाइत छैक। एहने एकटा घटना भेलैक जे एकटा हमर दाता कें दू तीन तगेदाक बाद अनभरोस भऽ गेलनि। हमर दुर्भाग्य। मुन्हारि साँझक समय। डेरा एबाक रस्ता

मे हम पान खेबाक लेल रुकलहुँ। ओतए ओहो पान खा रहल छलाह। हम पहिने हुनका नहि देखि सकलिएनि। हम आब एकदम सोझा सोझी भऽ गेल रही आ कोनो तरहें अपना कें बचेबाक स्थिति मे नहि रही। हम चालि बदलि लेलहुँ आ उन्मुक्त भावें हुनक अभिवादन कएल आ हुनको पानक पैसा चुकता कएल। हमरा लागल जे बात बनि गेल। मुदा ओ तऽ घात लगौने किछु दोसरे चालि सोचि रहल छलाह। हम चलबाक लेल स्कूटर स्टार्ट करए लगलहुँ तऽ ओ हमर हाथ पकड़ि लेलनि। हम सिंहक पंजा मे फँसल हरिण जकाँ कने छटपटेलहुँ। पानक दोकान पर कोनो अनघट दृश्य ने उपस्थित भऽ जाए से सोचि हम हुनका संग स्कूटर कें गुड़काबए लगलहुँ। थोड़ेक दूर गेला पर स्थान निर्जन भऽ गेलैक। एतए ओ हमर हाथ स्कूटर सँ पूरा जोर लगा कए हटा देलनि। आब स्कूटर हुनका कब्जा मे छलनि। हुनकर एकेटा कहब: "एखन टाका दऽ दिअऽ नहि तऽ स्कूटर हम लऽ जाइत छी"। कतबो हम हुनका परतारबाक कोशिश कएल, ओ अविचलित रहलाह। अन्त मे हम हारि गेलहुँ। ओ हमर स्कूटरक संग घर गेलाह आ हम मुह लटकौने रिक्शा पर घर एलहुँ।

स्कूटर तऽ आब पुरान भऽ गेल छलैक मुदा छल तऽ काजक वस्तु। तुरत्ते फेर स्कूटर नहि कीनि सकैत छलहुँ तें बन्धक तऽ छोड़ेबाके छल। हमरा करीब दू मास लागल स्कूटर कें बन्धक सँ छोड़बै मे। तरीका ओएह - एकटा पीटर कें मूरल आ पॉल के कर्ज सधाओल। मुदा आब हम बेसी साकांक्ष भऽ गेलहुँ। दाता सब कें रोटीक छोटछीन टुकड़ी दऽ कए खुसी राखए लगलहुँ। ककरो एकन्नी तऽ ककरो दुअन्नी आ ककरो चौअन्नियो हिस्सा एकाध तगेदाक बाद दऽ दैत छलिऐक ओकरा सबहक भुकनाइ बन्द राखए लेल। हमर गुरू अशोक एतेक बुधियार नहि छल। ओ पैंचो तऽ छोटे छीन लैत छलैक ने। कतऽ पाँच टाका आ कतऽ दश बीस हजार।

किछु दाता लोकनि डेरा सँ चीज वस्तु सेहो उठा कए लऽ जाइत गेलाह। ईहो महादेवक कृपा कहियौक जे जखन कियो तगेदा मे डेरा आबथि हम अनुपस्थित रहैत छलहुँ। एक बेर एक टा दाता कें हमरा घर मे सजाओल ताजमहलक अनुकृति पसिन्न आबि गेलनि आ ओकरा उठेने चल गेलाह। दाम तऽ ओकर बेसी नहि छलैक मुदा शोकेस मे ओ जगह खाली लागए

लागल। एहिना कतेक छोट पैघ चीज वस्तु उठि गेल मुदा हमरा तकर व्यथा नहि अछि। किछु पेबा लेल किछु दक्षिणा तऽ देबहि पड़ैत छैक। हँ ओ नक्काशीदार कॉर्नर टेबुल जे चल गेल तकर कचोट एखनहु अछिए। कचोट एही कारणें जे ओकरा दिल्ली हाट सँ भागलपुर धरि अनबा मे बेस मेहनति भेल छल। आब हम कने होशियारी देखौलहुँ आ शोकेस मे आकर्षक किन्तु नकली चीज सब राखए लगलहुँ। राखथु दाता लोकनि हमरा ऋणक स्मारिकाक रूप मे ओ नकली वस्तु सब। हमरा तऽ अशोक सँ एकटा टुटलाहा पेनो नहि भेटल स्मारिकाक रूप मे जे लोक कें कहितियैक देखहीक ई पाँच टाकाक पेन छैक।

एक बेर दू टा दाता एकहि समय हमरा डेरा पर तगेदा मे आबि गेलाह। महादेवक कृपा हम डेरा मे नहि रही। पत्नी होशियारी देखौलनि आ हमरा एकटा एस.एम.एस. पठा देलनि। दूनू दाताक अतिथि सत्कार नीक जकाँ भेलनि। जखन पत्नी किचेन मे छलीह तखन ई दूनू अपना मे जे गप करैत छलाह तकर सारांश ई सूनल ‘‘जखन ककरो पैंच उधार दिऐक तऽ एतबे दियैक जे देह लगा कए मारि सकी। लऽ लेलाक बाद आइ कालिक युग मे के आपस करत आ के नहि से कहब बड़ कठिन।’’ हम जखन ई सूनल तऽ अतीव हर्ष आ संतोष भेल। हमहूँ तऽ अशोक कें देल अपन पँचटकही सँ संतोषे कऽ लेलहुँ ने। आब हमर दाता लोकनि पँचहजारी दशहजारी पर संतोष करबा लेल तैयार छथि। एहि सँ बेसी नीक बात की? जे रोगी कें भाबए से वैदा फरमाबए। हमरा विश्वास भऽ गेल जे चार्वाक सँ बेसी बुधियार दार्शनिक एहि धरती पर ने कियो भेल आ ने होएत। चार्वाक घी सँ संतोष केलनि, हम तऽ कहियो कए शैम्पेन सेहो चढ़बैत छी। युग परिवर्तन भेलैक अछि ने।

आब हम निश्चिन्त छी जे अपन लाइफ स्टाइल आर बढ़ा सकैत छी। जेठ बेटी कें मेडिकल मे आ छोट बेटा कें इंजिनियरिंग मे पढ़ाइये रहल छी। एकटा नीक फ्लैट आ कार लेबाक योजना सेहो बनि गेल अछि। एकेटा समस्या छैक जे एहि आमदनी कें इन्कम टैक्स फाइल मे कोना देखाओल जाए। मुदा ओकरो कोनो ने कोनो रस्ता निकलिए जेतैक। दाता दिगम्बर सब युग युग जीबथु।

रहीमक हिसाबें हमर मृत्यु भऽ गेल अछि, एक बेर नहि कतेक बेर। कोनो बात नहि। मुर्दाक उपर जेहने एक मोनक बोझ तेहने पचास मोनक बोझ। आ जखन हमर दाता लोकनि संतोष कैए रहल छथि तखन तऽ जेहने अशोकक पाँच टाकाक उधार तेहने हमर पाँच लाखक उधार। मुदा एहि मृत्यु कें हमर पत्नी स्वीकार नहि करैत छथिन। ओ तऽ अहिवाती छथिए। सिउँथिक सिनूर कने बेसिए चाकर भऽ गेलनि अछि। एतबे नहि हमर पैघ सहयोगी सेहो बनि गेलीहए। ओ तऽ हमरो सँ बेसी जितेन्द्रिय भऽ गेल छथि। यदि कखनहुँ कोनो महिला मंडली मे एकर फुसफुसाहटि होइत छैक तऽ ओ चार्वाकक फरमूला सुना सबकें चुप कऽ दैत छथिन। उचिते ने, जखन रथक दूनू पहिया एक गतिएँ चलतैक तखने ने रथ संतुलित भावें दौड़तैक।

लगैत अछि जे हमर तपस्या सफल भऽ गेल अछि। हम अपन कला मे आब निष्णात भऽ गेल छी। मुदा पुरना संस्कार जे अयाची मिसरक युग सँ आबि रहल अछि से कखनहुँ कें जोर सँ हमरा झकझोरि दैत अछि जे हम उचित काज नहि कऽ रहल छी। एहन क्षण मे हमरा आत्मग्लानि होइत अछि। मुदा तखने अपन लाइफ स्टाइलक वस्तुस्थितिक ज्ञान आ चार्वाक दर्शन आँखिक सोंझाँ नाचए लगैत अछि। आत्मग्लानि आ आत्मज्ञान। अयाची आ चार्वाक। चार्वाक आ अयाची। ई द्वन्द्वयुद्ध चलिते रहैत छैक। घी खा कए पोसल देहबला चार्वाकक आगू सवा कट्ठा बारीक साग पात खेनिहार आ दू ठोप गायक दूध चटनिहार अयाची सदिखन हारि जाइत छथि। आ एकर श्रेय अशोक कें आ हमरा द्वारा विकसित वंचन कला कें। आब हम चार्वाकमय भऽ गेल छी। अथवा बूझू जे चार्वाकक आधुनिक अवतार भऽ गेल छी। विचार अछि जे रिटायर भेलाक बाद एहि कला पर एकटा पोथी लीखी। जरूर पढ़बैक। दामक चिन्ता जुनि करबैक। ओ तऽ अपने सब दाताक रूप मे पहिनहि दऽ देने छियैक।

जनम अवधि हम रूप निहारल

जनम अवधि हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल। हम तऽ जिबिते छी, मुदा ओ नहि। तें सत्ते कहि रहल छी जनम अवधि हम निहारल, माने हुनकर जनम अवधि तक। पूरे बासठि साल सात महीना तेरह दिन। हँ, उचित मे एहि मे जोड़क चाही आर तीन साल तीन महीना दस दिन। माने हम पहिल बेर हुनका जहिया देखने रही से भेल पूरे पैंसठि साल दस महीना तेइस दिन।

बहुत पुरान खिस्सा छी। माघक मास। हम गेल रही बहिनक सासुर आ ओतहि सँ मकरक रवि कें गेलहुँ कपलेसर के मेला। मेला तऽ ओहो गेल रहथि मुदा ओतुका भीड़भाड़ मे हमरा ओ नहि देखाएल रहथि। दिन अछैते हम घूरि आएल रही गाम पर। आँगन मे नवका चूरा आ गुर फँकैत रही कि एकटा नौ दस बरखक बाला हहाइत फुहाइत एली हमरा बहिन लग आ अपस्याँत भेल बाजए लगलीह "भौजी देखियौक तऽ हमरा कान मे ई झुमका केहन लगैत छैक ? आ इहो देखियौक हाथ मे चूड़ी, इहो मेले मे किनलियैक।" हमर बहिन ओहि दुलारू ननदि कें दुलार करैत एकटा चुम्मा लेलखिन आ सब चीजक बहुत प्रशंसा केलखिन। आ ओ बाला जहिना घोड़ाक वेग सँ आएल छलीह तहिना लुक्खीक वेग सँ निपत्ता भऽ गेलीह।

एतबे काल मे हम जे किछु देखलियैक ताहि सँ हमरा एगारह हजार वोल्टक झटका लागि गेल। आ खिस्सा ताहि समयक थिक जहिया गाम देहात मे दूर दूर तक एगारह हजारक कोन कथा, लोक एगारहो वोल्टक कोनो चीज नहि देखने छल। टॉर्च अथवा कहू चोरबत्ती जरूर छलैक मुदा ओहि मे तऽ मात्र दूटा बैटरी से भेल तीन वोल्ट। ककरो ककरो ट्रान्जिस्टर छलैक जे चारिटा बैटरी सँ चलैक सेहो भेल मात्र छऽबे वोल्ट। अस्तु शनैः शनैः दूटा बात भेल: ओ चित्र हमरा मस्तिष्क मे बसि गेल आ घटना बिसरा गेल। एहन जँ नहि होइत छलैक तऽ बूझू पहिले पहिल भेल।

हम हाइ स्कूल मे पढ़ैत रही आ उमेर एहन रहए जे नित नवीन अनुभव होएब अति स्वाभाविक छलैक। किशोरवयक बाढ़ि। एतेक दिन फूल मात्र फूल होइत छलैक, तोड़ि लाउ आ पूजा मे अर्पित कऽ दियौक। आब बूझऽ लगलियैक जे कोंढ़ी मे आ आधा फुलाएल फूल

मे आ पूरा फुलाएल फूल मे अन्तर होइत छैक। बूझए लगलियैक जे फूल की होइत छैक। कोनो फूलक पँखुरी कें छूबा मे विचित्र प्रकारक कोमलताक अनुभूति होमए लागल। कनेरक फूलक पँखुरी एतेक कोमल होइत छैक से पहिने कहाँ बुझने छलियैक ? आ एकटा आर बात - ताहू मे मंद सुगंध होइत छैक। एहि सब अनुभवक अतिरिक्त अपना मे शारीरिक परिवर्तन सेहो भऽ रहल छल। माय कहऽ लागल, देखियौक एके साल मे हमर बच्चा कतेक नमहर भऽ गेल। आ एहन उमेर मे सपना तऽ एबे करैत छैक। आ स्वप्नक संग लागल ओकर गुण आ दोष। गुण कमे दोष बेसी। सपना सपने होइत छलैक। हम एकरा सब कें बिसरिते जाइ आ पढबा लिखबा मे मोन लगाबी।

मुदा कोनो कोनो सपना एहन होइत छैक जे अहाँक जीवन कें दिशा देबा मे सक्षम भऽ जाइत अछि। ई दोसर बात जे ओ दिशा गलत होइक कि सही। अहाँ कें नहि भेल हो, हमरा तऽ भेल। आ एहने सपना हम देखल से ओहि मकरक रवि सँ पूरापूरी दू साल बाद। ओ सपना छल कि आमंत्रण से कहब कठिन। ई सपना फेर हमरा लऽ अनलक बहिनक सासुर।

भावी प्रबल होइत छैक से ज्ञानी लोक बजैत छथि। ओहि दिन जखन हम पहुँचलहुँ तऽ ओ बाला, जे अपनहु एहि दू साल मे कने सयनगर भऽ गेल छलीह, हमरा बहिन लग किछु किताब पसारने बैसल छलीह। एखन ने ओ घोड़ाक वेग सँ आएल छलीह आ ने हुनका लुक्खीक वेग सँ पड़ेबाक छलनि। ओ अपना काज मे व्यस्त छलीह। बगे बानि एकटा निर्धन परिवारक बच्चाक जेहन हेबाक चाही सएह। एकटा मैल घघरी आ मैले आङी पहिरने। मुदा हुनक आकर्षण कोनो कम भऽ गेल छलनि से नहि।

एखन हमर बहिने हुनका कहलखिन “बुच्ची दाइ एखन अहाँ जाउ। हमरा घर मे पाहुन आबि गेल अछि। पलखति होइते हम अहाँकें बजा लेब।” ओ किताब सब समेटि मोन मारने धीरे धीरे आङन सँ बहरा गेलीह।

हम ओतए पहुनाइ करए तऽ गेल रही नहि। हमर एकटा स्पष्ट उद्येश्य छल। ओहि बालाक चल गेलाक बाद हम बहिन कें सोझे पूछि बैसलियैक “ई ननदि तोहर कोन लाटें आ हिनकर घर कतए?” बहिन हमरा संक्षिप्त उत्तर देलक “हम सासुर मे छी तऽ ननदिए आ कि दिअरे

रहतैक कि ने। ओना हिनकर पिता तोरा ओझाजीक दूरक पित्ती छलखिन। आब ओ नहि छथि एहि दुनियाँ मे। हिनकर घर टोल पर सबसँ पुबरिया, जकरा आगू पोखरि छैक। बस, माय आ ई बेटी। एतबेटा परिवार। पढ़ै लिखै सँ सिनेह छनि तें बेसी काल हमरे लग रहैत छथि।'' हमरा कने कालक लेल मोन किछु व्यथित भऽ गेल। परन्तु तुरत्ते हम अपना लक्ष्य पर आबि गेलहुँ आ बहिनकें सोझे कहलियैक ''हम एहि कनियाँ सँ बियाह करब।'' बहिन कें भेलैक जे परिवारक दुखड़ा सूनि हम विचलित भऽ गेलहुँ, तें आवेश मे एहन बात बाजि रहल छी। ओ एकरा हँसी मे टारबाक चेष्टा केलक मुदा हम तऽ दृढ़ निश्चय कऽ कए गेल रही।

अस्तु, तकर बाद एक साल आ तीन मास तक कतेक अन्हर बिहारि बिरड़ो उठलैक से की गनाएब? बाबूजी घर सँ बहार कऽ देबाक आ जमीन जाल मे हिस्सा नहि देबाक धमकी तक सुना देलनि। मुदा हमरा पर एहि सबहक कोनो असर नहि पड़ल। ओमहर ओ मसोमात बेचारी से किंकर्तव्यविमूढ़, कारण हुनका डर होनि समाज द्वारा दुतकारल जेबाक। अपन बेटी कें चोरा नुका कए देखा कए एहि बियाहक षडयंत्र रचबाक। एक तऽ गरीब परिवारक अबला नारि, दोसर एहि प्रकारक लांछनाक बाढ़ि। ओ हमरा बहिन लग आबि कए खाली कानल करथि। ई बात हमहीं बुझैत छलियैक आकि हमर बहिने जे एहि लांछना मे कोनो सत्यता नहि छलैक। मुदा समाज हमरा दूनूक बात किएक सूनत ?

बहुत किछु भेलैक, मुदा भावी जे प्रबल छलैक तकरा के रोकि सकितैक ? आ से ठीक ओहि मकरक रविबला घटनाक तीन साल तीन मास आ सात दिनक बाद हमर बियाह ओहि बाला सँ भऽ गेल आ तकर चारिम दिन चतुर्थीक राति पहिल बेर ठीक सँ हमरा ओ रूप निहारबाक अवसर भेटल, जाहि कारण एगारह हजार वोल्टक झटका लागल छल आ जाहि रूप कें हम एखन तक निहारिए रहल छी।

आब शुरू करैत छी ओहि रूप कें निहारबाक आ ओकर सूक्ष्म सँ सूक्ष्म अणु परमाणु कें अपना भीतर समेटि लेबाक हमर चेष्टाक खिस्सा। यदि रूप भाववाचक संज्ञा भेलैक तऽ ओकर अणु परमाणु नहि हेतैक। मुदा कोनो छोट अवयव तऽ हेतैक सएह बूझू। पहिल बेर रूप जे निहारल से निहारिते रहि गेलहुँ। कहबैक जे ई तऽ बहुतो कें भेल हेतनि, मानि

लेलहुँ, मुदा हमर एहि अनुभव मे किछु विचित्रता आ नवीनता छल से अहाँ सबकें हमर खिस्सा सुनलाक बाद विश्वास भैए जाएत।

चतुर्थीक ओ राति। डिबियाक मद्धिम इजोत। आ हमरा समक्ष ओ रूपराशि। की देखब की नहि। आँखि देखब कि नाक कि अधर आकि ललाट आकि केशराशि। रूप छल अपरूप। मोन पड़ल ओ खिस्सा एकटा नायिकाक बारे मे जे किलास मे अलंकार बुझबैत पंडितजी कहने रहथि। एकटा एहने अपूर्व सुन्नरि नायिका गेलीह पोखरि मे स्नान करए। ओहि मे एकटा लाल कमल छलैक। हिनका मोन भेलनि ओ कमल तोड़ि लाबी। हेलि गेलीह कमल तक। मुदा जखने कमल कें हाथ लगौलखिन, ओकर रंग बदलि कए भऽ गेलैक गुलाबी। ई रंग परिवर्तन भेल छलैक कारण हुनक हाथ छलनि गुलाबी रंगक, से तेहन गुलाबी जे कमल लजा गेल, ओकरा अपन रंग हीन लागऽ लगलैक आ तें ओ हुनकर करकमलक रंग पकड़ि लेलक। मुदा से तऽ हुनका बुझबा मे भेलनि नहि। हुनका आश्चर्य लगलनि। ओ कमल कें ध्यान सँ देखए लगलखिन, बूझू आँखि गरा कए। आहि रे बा ! एकर रंग बदलि कए भऽ गेलैक नील, कारण हुनकर आँखिक रंग जे छलनि नील। रंग परिवर्तनक एहि खेल पर आब हुनका हँसी छूटि गेलनि आ कि धवल दंत पंक्ति कें देखिते ओहि कमलक रंग भऽ गेल श्वेत। एतबा मे ओ डरा गेलीह आ कमल कें पानिए मे छोड़ि घूरि एलीह। आबि कए देखैत छथि फेर कमल अपन मूल रंग मे आबि गेल।

हमरो दशा बूझू ओहि कमले जकाँ भऽ गेल छल आ हमरो तन आ मन दूनूक रंग ओहिना बदलि रहल छल जेना जेना हम हुनक विभिन्न अंग कें स्पर्श करी अथवा ठीक सँ आँखि गरा कए देखी। आ हम एहि रूपराशि मे ओझराएल रहि गेलहुँ। आ ओ जे छलीह एहि रूपराशिक मलिकानि, हमरा बहिनक बुच्चीदाइ आ मायक बुचिया, आब हमरो लेल से बुच्चीदाइ, हुनका घोघ तनैत आ लाजक प्रदर्शनक बीच हमर एहि ओझराहटि पर हँसी छुटिए गेलनि। पहिल बेर जे हम ओ मारुक हँसी देखल से तखनहि हम हुनक गुलाम भऽ गेलहुँ। ओ हँसी किछु दिन पूर्व तक, जहिया ओ अस्पताल गेलीह, एहि बासठि साल तक हमरा गुलाम बनेने रहल।

मुदा ओहि पहिल राति एहि सब बीच एकटा आर बात भेल। जे हेबाक छल से नहि भेल। ई बात अहाँ नहि बुझबैक, विद्यापति बुझैत छलखिन।

‘‘राधा माधव प्रथमक मेलि। न पुरल काम मनोरथ केलि।
भणई विद्यापति प्रथमक रीति। दिने दिने बाला बुझति पिरीति’’।

कोनो बात नहि, आगू बढ़ू। हम दूनू गोटे सेहो आगू बढ़लहुँ। खेलाइत धुपाइत पैघ होइत गेलहुँ। रूप निहारबाक हमर जे कार्यक्रम छल से चलिते रहल। एकेटा बाधा छल जे ओ सासुर मे रहथि अथवा नैहर मे, मर्यादाक सीमा राखहि पड़ैत छल। तें रूप निहारब जे होइत छल सेहो ओहि सीमा मे बद्ध। हम सनकी अथवा बताहक सीमा तक एहि काज मे प्रविष्ट भऽ गेल रही। ई जरूरी नहि छलैक जे सब दिन हुनकर मुह देखबे करी। आँखि देखि ली अथवा नाक अथवा कानो तऽ थोरे कालक लेल मोन तृप्त भऽ जाइत छल आ फेर पढ़बा लिखबा मे सेहो मोन लगैत छल। परोक्ष भेला पर मोन बेचौन भऽ जाइत छल। एकटा फोटो बना लेले रही, मुदा फोटो तऽ अविचल। आ ओमहर हुनक सतत परिवर्तनशील रूप। दूनू मे कतेक अन्तर !

हमर अपन तरीका छल रूप निहारबाक। एक मास तक हम हुनकर आँखिक मात्र भौंहे टा देखी। ‘‘भौंहलता बड़ देखिय कठोर। अंजने आँजि हासि गुण जोर।’’ तकर बाद अगिला मास पिपनीएटा देखैत रहि जाइ। अगिला मास मे ओ आँखिक डिमहा मे बसल नीला आकाशक दर्शन करी। समुद्र तऽ ताबत तक देखने नहि छलियैक, तें किताब मे उपमा पढ़लो पर हमरा विचार मे ओ नहि आबए। तहिना फेर अगिला मास हुनक अधर कें देखैत बिताबी। एहिना क्रमे एकाध साल पर घूरि आबी ओएह आँखिक भौंह पर आ कि ताबत लागए जे सब किछु बदलि गेलैक अछि। परिवर्तनशील रूप कतहु स्थिर रहए ?

एहि बीच हम कालेज सँ एकटा डिग्री सेहो लऽ लेलहुँ आ कपारक खेल जे आबि गेलहुँ टाटाक नगरी सौ टकाक एकटा नोकरीक पाछू। घबराउ जूनि, सौ टका हमरा अपन बी.एससी. पास योग्यताक हिसाबें कम नहि छल आ टाटा मे गुजरो लोक कें एतेक मे चल

जाइते छलैक। पहिल बेर मिथिलाक एकटा गाम सँ बहार भेल आ भेंट भेल अन्य तरहक लोक आ सभ्यता सब सँ। बंगाली, उड़िया, भोजपुरी बजनिहार लोकक बीच आदिवासी सब कें सेहो पहिले पहिल देखलियैक। समयक रीतिक अनुसार हम एकटा छोटछीन डेरा ताकल आ विचारल जे हुनको एतहि लऽ आबी।

गाम गेलहुँ। हिनका लऽ जेबाक प्रस्ताव पर बहुत विरोध भेल। कारण बहुतो आ एकटा पैघ कारण जे कोरा मे छोट बच्चा बबलू। मुदा हमहू डाँर कसिए कए गेल रही। किछु दिन मे माता पिता कें बुझबैत सुझबैत आ किछु झीलम झाड़ैत अन्त मे हम सफल भऽ गेलहुँ। मुदा एकटा पैघ समस्या ठाढ़ भेल जकरा बारे मे हम कखनो सोचनहि नहि छलहुँ। ई समस्या अहाँ भोगने नहि होएब, मुदा विद्यापति भोगने छलाह से देखूः

अम्बरे बदन झँपाबह गोरि। राज सुनइ छी चानक चोरि।
कतए नुकाएब चानक चोर। जतहि नुकाएब ततहि इजोर।

घर आङन मे बन्द अथवा घोघ तर झाँपल एहि चान कें बाहरक संसार एखन तक ठीक सँ देखने नहि छल। हम चान कें चोरा कए लऽ अनने रही आ एखन तक बूझू कहुना नुका कए रखने रही मुदा आगू ? आब समस्या छल जे रेलगाड़ी सँ एतेक दूरक यात्रा मे एहि चान कें कोना नुका कए लऽ जाएब। यदि कोनो रावणक नजरि पर चढ़ि गेलीह आ ओ अपहरण कऽ लेलकनि तऽ हम की करब? हम राम तऽ छी नहि। एहि कलियुग मे राम कियो भैए नहि सकैत अछि। मुदा आब तऽ डेग आगू उठा लेने रही। फेर पाछू कोना जाएब ? निर्णय लेल, देखल जेतैक।

ओहि समय समस्तीपुर मे टाटाक लेल एकटा बॉगी लगैत रहैक मिथिला एक्सप्रेस मे। ओही मे सवार भेलहुँ। झाझा मे एक गोटे चढ़ल ओही डिब्बा मे। कने कालक बाद ओकर व्यवहार हमरा किछु सशंकित केलक मुदा हम शान्त रहलहुँ। हमर चान तऽ कोराक बच्चा कें छाती सँ सटौने फोंफ कटैत छलीह मुदा इजोरिया तऽ समेटने छलीह नहि। आ इएह इजोरिया तऽ ओहि अनठिया कें पाप करबाक लेल उसका देलकै। बच्चा मे अखारा पर कुश्ती लड़ैत

रही। कने मने दंड बैसक सेहो कएल करी। देहक जोड़ पहलवानबला नहि तऽ बेजाइयो नहि छल। एक बेर ओ लुच्चा आगू बढ़बाक चेष्टा केलक। हम सोझे ओकर कॉलर पकड़ि कए उठेलहुँ आ मुह मे दू घुस्सा देलियैक। जे लोक जागल छल से कने कालक लेल अकचका गेल। हम प्रतीक्षा करए लगलहुँ अगिला आर खराप फल के। मुदा चोर कतहु इजोत सहए ? ओ लुच्चा अगिला टीसन पर उतरि गेल। ने कोनो हल्ला भेलैक आ ने फेर कोनो मारापीटी। ई बाजी हम जीत लेलहुँ आ एहि संग कने आत्मविश्वास सेहो जागि गेल।

एहि विजयक संग हम हुनका लऽ कए टाटाक ओहि छोटका डेरा मे पहुँचि गेलहुँ। किछु दिन तऽ हुनका एहि नवका वातावरण मे अपना कें अनुकूल बनेबा मे दिक्कत भेलनि मुदा धीरे धीरे सबटा ठीक भऽ गेल। आ सबसँ पैघ बात जे हमरा ओहि रूपराशि कें निहारबाक अवसर बेसी भेटऽ लागल। एतए मर्यादाक झंझट नहि छलैक। हम नख सिख निहारी। माने हाथक नख नहि, पएरक नख सँ उपर होइत सिख तक। कखनो उनटा सेहो आ कखनो हाथक नख पर सेहो ओझरा जाइ।

एकटा आर लाभ भेल। एतए हुनको अपना कें निखारबाक अवसर भेटलनि। हमरा किछु नव फरमाइस सब भेटए लागल मुदा एकर कोनो शिकाइति नहि छल। हम तऽ ओही रूपराशिक जाल मे डूबल रहए चाहैत छलहुँ जल महक माछ जकाँ।

नव नव सौन्दर्य प्रसाधनक लाभ बूझू जे नित परिवर्तनशील रूप आब घंटा घंटा पर परिवर्तनशील होमए लागल। हमरा लेल इहो एकटा नीके अवसर छल। हमरा तऽ एहन अमृत कलष भेटि गेल छल जाहि मे सँ भरि दिन भरि राति छाक भरि पीबि ली तैयो अगिला भोर मे ओ कलष भरले भेटए। भरि इच्छा पान करी आ काजो करबा मे खूब मोन लागए। आब ई हमरा लेल सनक नहि, टॉनिक भऽ गेल छल। फल ई भेल जे हमरा टेल्को मे नोकरी भेटि गेल आ हम छोटका कम्पनी छोड़ि देल। एतए हम लैब एसिस्टेंट भऽ गेलहुँ। कने कने विज्ञान आ इंजिनियरिंग के बात बूझए लगलियैक। एहि बीच बबलू कें एकटा बहिनक संग सेहो भेटि गेलनि। आ हमर रूप निहारबाक कार्यक्रम निर्बाध गतिएँ चलैत रहल।

आब गामबला मर्यादाक झंझट कम भऽ गेला सँ हमरा एहि रूपक विभिन्न आयामक अवलोकन करबाक अवसर भेटल। अंग प्रत्यंग कें विभिन्न कोण सँ देखबाक हमरा जेना सनक सवार भऽ गेल। मुदा हमर रूपकन्या एहि मे कहियो कोनो प्रतिकार नहि केलनि। ऑफिस मे लंचक बाद आधा घंटा हम इएह सोचबा मे बिताबी जे अगिला कार्यक्रम की होएत। की देखब आ कोना देखब। की अनुभव करब छूटि गेल अछि तकर लिस्ट बनाबी आ डेरा आबि हुनका सुनाबी। आ हुनकर प्रतिक्रिया तऽ आब अहूँ बुझिए गेल हेबै, ओएह मारुक स्वतःप्रस्फुटित एकदम उन्मुक्त हँसी जे बहुत कम लोक कऽ पबैत होएत।

ओही समय नवका ऑफिस मे नवका संगी सबहक बीच सुनलियैक लोक कें बजैत जे फलाँ सिने तारिकाक मेजरमेंट छनि 34-24-34। आ एकरा लोक सुन्दरताक नीक पैमाना मानैत छैक। हमरा सन बकलेल लोक किछु बुझलक नहि। सुन्दरताक मेजरमेंट ? ई की भेलैक ? विद्यापति अपन ‘‘पीन पयोधरि दूबरि गता’’ बला नायिका कें एहि तरहक मेजरमेंट कहियो लेने छलखिन की ? आ यदि लेने छलखिन तऽ नाप की छलनि हुनकर से कतऽ लीखल छैक ? हमरा तऽ एतबे बूझल छल ‘‘दिने दिने उन्नत पयोधर पीन, बाढ़ल नितम्ब माँझ भेल खीन।’’ हम एक गोटे कें आग्रह केलियैक फरिछा कए कहबाक लेल। ओकरा हमर अज्ञानता पर बेसी दया एलैक तें ओ सबटा बात खोंइचा छोड़ा कए बुझा देलक।

घुरती मे हम एकटा फीता कीनल। आब घर मे तऽ ओतेक मर्यादाक झंझट नहि छल। बच्चा सब जखन गेल बाहर खेलाइ लेल तखने हम हुनका आग्रह केलहुँ जे हमरा ओ सबटा नाप लेबए देथि। हुनका एहि पर बड़ पैघ हँसी छुटलनि। पहिनहि कहि चुकल छी हँसी हुनका हरदम अबिते रहैत छलनि आ हमरा सन रूपक उपासक जे हुनक गुलाम की कही, बन्दी की कही, बूझू जे पुरना तोता मैनाक खिस्साक एकटा नायक जकरा नायिका एकटा चिड़ै बनाकए पिंजरा मे बन्द कऽ कए रखैत छल से नायक तऽ एही हँसी पर मरैत छल।

ओ हँसैत रहलीह आ हम नपैत रहलहुँ। हमरा विश्वासे नहि भऽ रहल छल। नाप मे आबए 38-20-36। एकटा आर झंझट। हमहूँ तऽ जनमहि सँ बकलेल लोक। जे संगी हमरा ई नाप लेब बतौने छल तकरा ने हम पुछलियैक ने ओ बतौलक जे कनकलता मे जे मेरु पर्वत

उपजल छल ताहि इलाका कें कोना नापी। फीता पहाड़क चोटिए पर सँ लऽ जाइ कि घाटी बाटें ढील कऽ कए। पहाड़ परहक नाप होइ छल 38 आ घाटी होइत नाप भऽ जाए 48। एतेक अन्तर मे हम ओझरा गेलहुँ। तहिना झंझट भेल नीचा मे। फीता कें धरतीक समानान्तर राखी तऽ नाप आबए 36 ओकरा कनिये अलग कोण पर लऽ जइऐक तऽ नाप बढ़ि जाइक। हम जतेक ओझराइत जाइ ततेक हुनकर हँसी बढ़ल जाइन आ हम नर्वस भऽ जाइ। अन्त मे हम हारि कए नापब त्यागि देल। ककरो कहबो नहि केलियैक जे हमर रूपकन्याक नाप छनि 38-20-36। ओहिना सशंकित रहैत छलहुँ, आर प्रचार केला सँ खतरा बढ़बे करितए।

जखन बबलू आ कविता स्कूल जाए लागल तखन समय निकालि ई फेर अपनो पढ़ब लिखब शुरू केलनि। हाइ स्कूल केलनि आ कॉलेजो जाए लगलीह। आब हमर चान कें अपहरण हेबाक डर सेहो कम भऽ गेल छल। आब ओ नव फैसन सब सेहो करए लगलीह। नित परिवर्तनशील रूप मे एकटा आर आयाम जोड़ल गेल जखन ओ सलबार सूट पहिरब शुरू केलनि। एकर अपने विशेषता छलैक। ओतबे नहि आब हिनको दिनक ड्रेस अलग साँझक ड्रेस अलग आ फेर रातुक ड्रेस अलग भऽ गेलनि। हमरा एहि सब चीज कें किनबा मे कोनो शिकाइति नहिए छल कारण ओ तऽ हमरे लेल अपन रूप नित नवीन राखए चाहैत छलीह आ लाभो तऽ हमरे छल। फेर हमहूँ एहि बीच लागल लागल एम.एससी. कऽ लेलहुँ। प्रोमोसन सेहो भेटि गेल छल। दरमाहा सेहो किछु नीके भऽ गेल छल।

एक दिन अहिना दूनू गोटे हँसैत खेलाइत बैसल छलहुँ कि हमरा फुराएल जे हिनकर हँसीक विभिन्न मुद्रा मे अधरक नाप लेल जाए आ ओकरा मोनालिसाक अधरक नाप सँ मिलाओल जाए तऽ हमरा पता चलि जाएत जे मोनालिसाक हँसीक भंगिमा रुपैयाक कोन हिस्साबला छलनिः एकन्नी कि दुअन्नी कि चौअन्नीबला। लोक बहुत रास रिसर्च केलक मुदा एहि तरहें कियो नहि सोचलक। बस हमर प्रस्ताव सुनिते ओ जे हँसलथि से एखनहु हमरा अन्तर मे ओहिना टेप भेल बाजि रहल अछि। हम ओहि हँसीक गुलाम तऽ भैए गेल रही। मुदा एखन

तऽ हमरा एकटा प्रयोग सँ मतलब छल। ओ स्वीकार केलनि आ हम फीता लऽ कए तैयार भऽ गेलहुँ। आइ हम बेस होशियार रही जे नर्वस नहि होइ।

ओ शुरू केलनि एक पैसाबला हँसी सँ आ एमहर हमर फीता तैयार। संगहि एकटा कागत पर पेन सँ ओ माप लिखैत सेहो जाइ। बेस पैध आँकड़ा तैयार भऽ गेल कारण हमरा खौंझबै लेल ओ अपन हँसी कें बहुत धीरे धीरे बढ़ाबथि। एक पैसाबला हँसीक बाद डेढ़ पैसा तकर बाद दू पैसा एवम प्रकारें सोचि सकैत छिऐक चौअन्नी तक जाइत जाइत हम थाकि गेल रही। ओना मोनालिसाक मुस्की चौअनियाँ तऽ नहिए छलनि मुदा प्रयोगक सफलताक लेल आँकड़ा पूर्ण हेबाके चाही ने। सब सँ आश्चर्यक बात जे एतेक भंगिमा बदलैत रहलीह मुदा एको क्षणक लेल हुनक मुद्रा मे कनियो जरूरति सँ बेसी परिवर्तन नहि भेलनि आ ने अनेरे बेसी हँसिए लगलनि। ओ पूरा प्रयोग मे ओहिना स्थिर छलीह जेना चित्रकार लियोनार्दोक समक्ष मोनालिसा मॉडल बनि कए बैसल रहल हेतीह। ओहि प्रयोगक आधार पर हम निष्कर्ष निकालल जे मोनालिसाक मुस्की दू आना पौने तीन पाइबला छलनि। माने दुअन्नी सँ कने बेसी आ चौअन्नी सँ कने कम। आ हमर बकलेलपन देखू जे एतेक सही प्रयोग रहितहुँ एहि रिजल्ट कें हम कोनो जर्नल मे प्रकाशित नहि कराओल। बुझिते नहि छलियैक।

कालेज जखन जाए लगलीह तखन हुनको नव नव विचार सब सँ परिचय होमए लगलनि। एक बेर हमरा ओ टोकि देलनि ‘‘एतेक जे हमर गुलाम बनल रहैत छी से बूझल नहि अछि ओ कहबी: ‘‘ब्यूटी इज ओनली स्किन डीप’’। हमरा ई दार्शनिक विचार नीक नहि लागल। हमरा लेल ब्यूटी इज ब्यूटी। अहाँ हमरा समक्ष छी आ हमरा देखऽ मे नीक लगैत अछि बस एतबे। अनेरे एहि मे दर्शन आ भूगोल आ इतिहास कें किएक पैसाउ ? हमरा लेल ब्यूटी स्किन डीप नहि, शरीरक एहि पार सँ ओहि पार तक छल।

हम सब संगहि बढ़लहुँ तऽ संगहि बुढ़ेलहुँ, मुदा कोनो स्तर पर हमरा ई नहि बुझना गेल जे हुनका मे एतेक परिवर्तन आबि गेल छनि जे हमरा आँखि कें खराप लागए। हमरा समक्ष जे छल से ओही अमृत कलशक भाग छल। हरदम पूरित आ हम चिर पिपासु। एहिना हम एहि रूप कें निहारैत जिनगी बिताओल आइ तक अर्थात हुनकर जनम अवधि। रूपक उपासक

बहुतो भेल छथि आ सबहक अनुभूति अलग हेबे करतनि। हम किनको नीक अथवा बेजाए नहि कहैत छी। मात्र एतबे जे हमरा अपन तरीका छल एहि रूपक उपासना लेल। आ हमर अनुभूति हमरे रहल। हमरा लेल ओ मात्र रूपसी नहि छलीह, रूपक देवी छलीह। आराध्य। ओना समक्ष तऽ हुनका हँसीक कारण नहि, मुदा परोक्ष मे तऽ हम पूजा करिते छलिएनि।

बासठि बरखक सुखान्त नाटक पर आइ पटाक्षेप भऽ गेल अछि। एहि बासठि अथवा उचित कही तऽ पैंसठि सालक बीतल एक एक क्षणक सबटा घटना हमरा मानस पटल पर द्रुतगति सँ आबि रहल अछि। एतेक दिन बितलो पर ओहिना स्पष्ट, जेना कालिए भेल होइक। सबटा मोने अछि। हमर आराध्य देवी नहि रहलीह मुदा हुनका बिना हम जीअब कोना?

भारतीय समाज मे विभिन्न देवी देवताक पूजा होइत अछि आ सबहक कतहु ने कतहु मन्दिरो छनि। मुदा सौन्दर्यक देवी छथिए नहि। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, गौरी सब देवी एक सँ एक बढ़ि कए सुन्दर छथि। अथवा कहि सकैत छिऐक जे सबहक सुन्दरता एके सन छनि। कारण ई सुन्दरता तऽ लोक देखने नहि छैक अपितु मूर्तिकार आ चित्रकारक कल्पनाबला सुन्दरता छिऐक। आ फेर ओ सब किएक किनको कम आ किनको बेसी सुन्दर बना दितैक। सौतिनियाँ डाहक झंझट। किनकर कोपभाजन बनए अनेरे, तें सब एके रंग। जतेक लूरि ईश्वर देने छथिन ताहि हिसाबें जतेक सुन्दर बना सकैत छल से बनबैत छल। हमरा बातक विश्वास नहि होअए तऽ जाकए देखि लिअऽ छलगोढ़िया टोल मे। मूर्ति सब एके रंग सुन्नर। सब खुशी रहथु।

दोसर आ बेसी महत्त्वपूर्ण बात ई जे लोक हुनकर पूजा सुन्दरताक लेल नहि करैछ, अपितु धन ऐश्वर्य विद्या अथवा शक्तिक प्रतीक मानि पूजा करैत अछि। सौन्दर्यक देवी के ? कामदेव प्रिया रति कें सेहो प्रधानता छनि कामेच्छा जगबै मे। हुनको पूजा मात्र सौन्दर्यक उपासना लेल नहि होइत अछि। मुदा इहो पूजा कोनो मन्दिर मे तऽ नहिए। कतहु पढ़ने रही जे ग्रीक सभ्यता मे वीनस कें सौन्दर्यक देवी कहल गेल छनि। मुदा अपना देश मे आइ तक किनको फुरेबे नहि केलनि जे एकटा कोनो सौंदर्यक प्रतिमान बना एकटा पूज्य देवीक मन्दिर बना लितथि। तखन किएक ने सौन्दर्यक देवी हमर बुच्ची दाइ होथि?

हमरा ठकमूड़ी लागि जाइत अछि। पछिला बात सोचैत सोचैत हम फेर विह्वल भऽ जाइत छी। भोर सँ राति तक जाहि ठहाकाबला हँसी सुनि सुनि कए हम जिनगी कटलहुँ ओ आब कतए सूनब? हमरा लगैत अछि जे हमर पिंजरा खोलि देल गेल मुदा हम तऽ उड़बे बिसरि गेल छी। जाहि कनहा पर चाङुर राखि हम चहचहा उठैत छलहुँ से कनहा आब कहाँ अछि? हम एतहि माथ पटकि कए प्राण दऽ देब।

ई सब बात हमरा अन्तस तक हिला दैत अछि। हम कानए चाहैत छी खूब जोर सँ मुदा कानि नहि पबैत छी जे फेर बबलू आ कविता कें सम्हारब मुश्किल भऽ जाएत। भोर सँ कनिते छलाह दूनू। कतेक कठिन सँ तऽ ओ दूनू शान्त भेल छथि। हमर कानब एहन भऽ जाइत अछि जाहि मे नोर कें खसबा सँ पहिनहि गीरि जाइत छी। आ सामने ठाढ़ पोता पोती नाति नातिन नहि देखि पबैत छथि। विचित्र अनुभूति। आब बुझाइत अछि जे आँखिक उपमा समुद्र सँ एही लेल देल गेलैक जे नोर नोनगर होइत छैक समुद्रक जल जकाँ।

आइ ओ एतए अन्तिम यात्राक रस्ता मे थाकल पड़ल छथि। कविता हुनका सबटा श्रृंगार कऽ देलखिन अछि। हुनका खुसी छनि जे माय अहिबाती मरलखिन। पएर मे गाढ़ आलता रंगल, हाथ मे भरल लहठी, सिउँथि मे भरल सिंदूर आ लाल पाढ़िक उज्जर रेशमी सारी मे ओ एखनहुँ आँखि मुनने कतेक दिव्य लागि रहल छथि! सौन्दर्यक देवी कतहु मरथि? हमरा तऽ लगैत अछि ओ एखनहुँ अभिसारक यात्रा मे छथि। कतहु किछु नहि बदललैक अछि। की हम एखने हुनका लग मे जा कए पड़ि रही आ चुम्बन लैत हुनका उठा दी?

बबलू ऊक लेने ठाढ़ छथि। हमरा दिश तकैत छथि। हम विचलित भऽ जाइत छी। मोन होइत अछि कहि दिएनि बबलू कें अहाँ सब घूरि जाउ। आ हमरा देखए दिअऽ ई रूपराशि मोन भरि अन्तिम बेर। अन्तिम बेर ताबत तक, जाबत तक हमरा आँखिक आगाँ अन्हार नहि भऽ जाए अथवा हम संज्ञा शून्य नहि भऽ जाइ। की एकरा फेर लोक बतहपनीए कहतैक?

मुदा हम से कऽ नहि पबैत छी। फेर हम घूरि अबैत छी एहि संसार मे आ भऽ जाइत छी स्थितप्रज्ञ। हम अन्तिम बेर हुनका देखि मुह घुमा लैत छी। बबलू कें आदेशात्मक स्वरें कहैत

छिएनि जे आब देरी नहि करू। हमरा ठोर पर बेर बेर कवि विद्यापतिक एकेटा पद अबैत अछि -

“जनम अवधि हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल।
लाख लाख युग हिअ मह राखल, हृदय जरनि नहि गेल।
बाबू की पुछसि अनुभव मोर।”

हम शोकाकुल भेल मुह लटकौने डेरा आबि रहल छी विचारैत जे किएक ने हिनकर मन्दिर बनाओल जाए। हम पैघ मन्दिर बनाएब आ ओहि मे हुनक बच्चा सँ एखनुक तक के कएकटा रूपक मूर्ति राखब। ई मन्दिर सौन्दर्यक देवीक मन्दिर होएत जतए सौन्दर्यक उपासक सब पूजा करताह। आ तखन हम निश्चिते सब दिन हुनका निहारि सकब। जनम अवधि, माने जाबत हम जीबैत रहब।

देववाणी

हम नवका पंडितजीक कने परीक्षा लऽ रहल छी। पंडितजी जे पुरना छलाह से तँ कहिया ने स्वर्गवासी भेलाह। ओ परोपट्टा मे नामी लोक छलाह पंडित संस्कार नाथ मिश्र। पंडितजी व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य आर नहि जानि कोन कोन विषयक आचार्य छलाह। हमरा गाम अर्थात माहीपुर मे महामाया संस्कृत विद्यालय हुनके प्रयासें स्थापित भेल छल जाहि मे सुनैत छियैक महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह स्वयं उद्घाटन करबा लेल आएल छलखिन आ विद्यालय प्रांगण मे एकटा आमक आ एकटा पीपरक गाछ रोपने छलखिन। आमक गाछ तँ सन सत्तावन के बाढ़ि मे सुखा गेलैक मुदा पीपर तँ एखनहुँ छैके जे अहूँ सब देखिते छियैक।

नवका पंडितजी भेलाह हुनकर प्रपौत्र। पंडित संस्कार नाथ मिश्रजी कें चारिम बियाह मे एकटा बालक भेलखिन। ताहि सँ पहिने तीन बियाह मे चारि चारि टा कन्या रत्न प्राप्त भेलनि जेना लक्ष्मी सरस्वती सीता गौरी सब अपन अपन सखी बहिनपाक संग अवतरित भेल होथि। पंडितजी जिद्दी लोक। चारिम बियाह सँ पूर्व जखन किछु आत्मीय सब हुनका बुझबए गेलखिन ‘‘देखू आब वयसो भऽ गेल। एहि बारह टा बेटी के पालन पोषण आ कन्यादान आदि मे अपनेक जे दशा भऽ रहल अछि से तँ अपनहि जनैत छिऐक। तें हमरा सबहक कहब जे फेर बियाह करबाक ई विचार छोड़ि दियौक। मानि लिअऽ जे बेटा भाग्य मे नहि अछि।’’ तँ पंडितजी खिसिया कए बाजल छलखिन ‘‘देखू ई भक्त आ भगवान के लड़ाइ छियैक। यदि भगवान कें जिद्द लागल छनि जे बेटा नहिए दऽ कए परीक्षा लियैक तँ भक्तक सेहो प्रतिज्ञा छनि जे बेटा लइए कए रहताह। हमरा ई लड़ाइ लड़ए दिअऽ आ अहाँ सब कात सँ तमाशा देखैत रहू।’’ अस्तु, जेना कि पौराणिक काल सँ होइत रहलैक अछि, सुच्चा भक्तक सोझाँ भगवाने हारि मानैत रहलखिन अछि, सएह भेलैक एहू बेर आ चारिम बियाहक बाद करीब पचपन वर्षक उमेर मे पंडितजीक तपस्या सफल भेलनि आ आइमाइ सब गौलनि सोहर ‘‘ललना रे घर घर बाजे बधाइ कि कृष्णजी जन्म लेल रे....’’।

नवजातक नाम पंडित संस्कार नाथ मिश्र अपनहि चुनलनि। परोपट्टाक लोक तँ हुनका सँ नामकरण करबैत छल, ओ कतए जइतथि ? से नाम राखल गेल भूजानाथ। आब जे सूनए सएह हँसए। सब बूझए लागल जे सत्ते मे पंडितजी सठिया गेलाहए। कियो कियो ईहो अर्थ लगाबए जे पंडितजी कें भूजा बड़ पसिन्न छनि। किछु ईहो बाजए जे एहि सँ नीक तँ 'अनाथ' नाम होइतैक, किछु अर्थ तँ रहितैक। जखन चारू कात खिधांस होअए लगलनि तँ नवकी पंडिताइने एक दिन टोकलखिन ''बारह टा बेटीक बाद तँ एकटा बेटा भेल तकर की नाम राखि देलियैक जे सौंसे गाम हँसैत अछि।'' पंडितजी कने दुअनियाँ मुसकी दैत नवकी कें बुझेलखिन ''लोक की बुझतैक ? ओकरा सब कें ज्ञाने कतेक छैक ? देखू ई नाम अपूर्व छैक। एकरा एनाकए बुझियौक: भू + जा + नाथ। भू माने पृथ्वी, जा माने ताहि सँ उत्पन्न अर्थात भूजा भेलीह सीता आ भूजानाथ भेलाह साक्षात भगवान राम। अहीं सोचियौक यदि सोझे राम नाम राखि दितियैक बच्चाक तँ संस्कार नाथ मिश्रक ज्ञानक कोन काज ? फेर ओहन नाम तँ हरेक टोल पड़ोस मे भेटत आ थोड़बे दिन मे राम भऽ जइतथि रमुआ। रमुआ ककरो हरबाह, रमुआ कोनो बोनिहार, रमुआ ककरो चाकर आ रमुआ कोनो पंडितक बच्चा। फेर अन्तर की भेलैक ?''

आब जे ई व्याख्या सूनए सएह कहए वाह वाह, पंडित संस्कार नाथ मिश्र सन व्याकरणाचार्य कें छोड़ि के एतेक सुन्दर नाम सोचि सकैत छल ? नामकरण मे हुनकर ख्याति आर बेसी बढ़ि गेलनि।

मुदा सब किछु होइतो एहि परिवार मे आगू दू पुस्त तक व्याकरण आ साहित्य कें के कहए संस्कृत पढ़बो बन्द भऽ गेल। भेलैक एना जे संस्कार नाथ मिश्र भगवान सँ एकटा बाजी तँ जीत गेलाह परन्तु पूरा खेल तँ हुनका बूझल छलनि नहि।

भूजानाथ कें तीन टा बड़का माय आ बारह टा बहिन। सब मिला कए एहि सोलह स्त्रीगणक ओ अति दुलारू बच्चा। लीखब पढ़ब सँ ओ तहिना पड़ाथि जेना नवका बियाह भेला पर पंडितजी पुरना कनियाँ सबसँ पड़ाथि। एहि शोक सँ बूझू आ कि उमेरक गुण दोष, पंडितजी

अस्वस्थ रहए लगलाह। पाँचम वर्ष मे भूजानाथक उपनयन भेलनि आ तकर किछुए दिनक बाद पंडितजी भगवान सँ भेंट करए स्वर्ग चल गेलाह। भूजानाथ भट्ठा नहिए धेलनि।

भूजानाथ बढ़ैत गेलाह आ ओतबे बेसी अबंड होइत गेलाह। हुनका पहुनाइ करै मे आ तिलकोर तोरै मे बेस आनन्द अबनि। जमीन जाल तँ पिताजी बारह टा कन्यादान मे प्रायः शेषे कऽ देने छलखिन तें घर गृहस्थीक चिन्ते कोन। बारह टा बहिनक सासुर आ चारि टा मात्रिक मे बूलि बूलि ओ पहुनाइ करथि। भरदुतिया मे ओ बेसी परेशान भऽ जाथि। एक दिन मे बारह गाम कोना जेताह ? कोन बहिन सँ नोत लेथिन आ किनकर उपराग सुनताह ? मुदा एकरो संयोगे कही जे पंडितजी अपन बारहो बेटीक बियाह जाहि गाम सब मे केलनि से सबटा गाम रेलवे लाइनक दूनू कात सकरी सँ निरमलीक बीच आ कि सकरी सँ जयनगरक बीच एक कोस सँ कमे दूर पर। फेर बहिने सब अपना मे विचार कऽ कए हुनका रस्ता बता देलखिन जे एक बरख मे ओ चारि ठाम जाथि। भरदुतिया सँ एक दिन पहिने एक गोटे ओतए पहुँचि जाथि आ ओतए अगिला दिन एकदम सकाल नोत लऽ कए दोसर गाम पहुँचि जाथि। ओतए नोत लऽ कए फेर बरहबजिया गाड़ी पकड़ि बाकी दू बहिनक गाम जा कए नोत लेथि। एहि प्रकारें दिन अछैते ओ सब ठाम पार पुरि लेताह। आ हरेक चारिम बरख मे सब बहिन कें भाइ कें नोतबाक सऽख पूर होइत रहतनि। एहि मे भूजानाथ कें एकटा नफा ई भेलनि जे भारदोरक झंझट खतम भऽ गेलनि। चारि चारि ठामक भार तँ एक संगे लऽ जइतथि नहि। मुदा पैघ घाटा ई भेलनि जे भरि दिन एक गाम सँ दोसर गाम दौड़ैत रहला सँ कत्तौ इच्छा भरि तिलकोर नहि खा पबैत छलाह।

अस्तु, उचित समय पर भूजानाथक बियाहो भेलनि। अबंड छलाह आ कि संस्कृत नहि पढ़लनि तै सँ की ? मिथिला मे ने कोनो वर कुमार रहलैकए आ ने कोनो कन्या कुमारि रहलैकए। लूल्हि नाङर कनियाँ आ आन्हर बहीर आकि ढहलेल बकलेल वर, सबहक बियाह भेबे केलैए, घटक टा होशियार रहल चाही। तखन भूजानाथ तँ पंडित संस्कार नाथ मिश्रक पुत्र छलखिन। घटक दरिद्र नारायण चौधरी एहि काज मे सहायक भेलखिन। कोसिकनहा कातक एकटा मसोमातक लूल्हि किन्तु सुन्दरी कन्या स्वर्गीय पंडित संस्कार नाथ मिश्रक

पुतोहु बनिकए माहीपुर एलीह। ओ फेर घूरि कए नैहर तँ नहि गेलीह, माइए मास दू मास पर खोज खबरि लेबा लेल आबि जाइत छलखिन।

समय पाबि भूजानाथ कें पहिले प्रयास मे पुत्र भेलनि। हुनका पिता जकाँ तपस्या नहि करए पड़लनि। मुदा एहि समय एकटा दोसरे विचित्र घटना भेलैक। सोइरी सँ बहराइते एकटा अगिलटेंट छौंड़ी बाजि उठल जे उएह मुसरी भेलैक। ई मात्र ओहि बच्चाक लिंग निर्धारण सूचक शब्द छलैक। मुदा से ओहि बच्चाक नामकरणे भऽ गेलैक आ ओ मुसरीए भऽ कए रहि गेल। नाम किछु विचित्र तँ जरूर छलैक मुदा मिथिलाक गौरवमय इतिहास मे कतेको मुसरी भऽ गेल छथि से तँ अहूँ सब जनिते छिऐक। आ नामो सब एक सँ एक विचित्र जेना कि खुद्दी, फुद्दी, तिनकौड़ी, पलटू सलटू आदि। तें एहि बात पर कोनो बेसी ध्यान नहि देल गेलैक। ओना स्वर्ग मे पंडित संस्कार नाथ मिश्र अपन पौत्रक एहि नामकरण पर की सोचने होएताह से हमरा सब कहियो बूझि नहि सकब।

मुसरीक माय लूल्हि जरूर छलखिन मुदा छलखिन बुधियार। हुनका अपना बच्चा कें पढ़ेबा पर बेसी ध्यान छलनि। मुसरी स्कूल जाए लगलाह। संस्कृत विद्यालय नहि, गामक सरकारी प्राथमिक विद्यालय। रजिष्टर मे नाम लिखाएल मुसरी नाथ मिश्र। आ तकर बाद हुनकर नाम लिखाएल गेल माहीपुर सँ करीब डेढ़ कोस दूर सरपतिया चऽरक पुबरिया सीमा पर स्थित गाम कनकटोली के माता यशोदा हाइ स्कूल मे, जे हमरा सबहक नवका एम.एल.ए. यादवजी किछुए वर्ष पहिने स्थापित कएने छलाह। मुसरी गामहिं सँ स्कूल जाइत अबैत छलाह।

मुसरी पढ़बा मे कोनो बेसी कुशाग्रबुदि्ध्र नहि छलाह। लागल लागल कहुना मैट्रिक पास केलनि। आगू पढ़बाक ने इच्छा रहनि आ ने साधन। रोजीक ताक मे गामैक किछु लोकक संग ओ पहिने कलकत्ता एलाह आ ओतए सँ एकटा ठीकेदारक संग कोरबा चल गेलाह जतए बड़का बड़का थरमल पावर स्टेशन बनि रहल छलैक। एतए ओ ठीकेदारक मुंशीक असिस्टेंट भऽ गेलाह आ नाम भऽ गेलनि श्री एम.एन. मिसरा। नाम छोट करैक ई अंगरेजिया तरीका सेहो कमाल के छैक।

हमर एम.एन. मिसराक ठीकेदार मकान आदि बनबैत छलाह। मिसराजीक काज भेलनि मजदूर सबहक पाछू रहब। मजदूर सब ठीक सँ काज करए, सूति बैसि नहि रहए आ किछु सामान चोरा नहि लिअए तकरे देखभाल करब भेल काज हुनक। मुंशी अपने तँ टेन्ट मे आराम करथि आ एम.एन. मिसरा कें रौद बसात पानि बिहारि मे मजदूरक संगे रहए पड़नि।

गाम मे खबरि गेलैक जे भूजानाथक बेटा कें नीक नोकरी भेटि गेलनि। घटक दरिद्र नारायण चौधरी बूढ़ो भेला पर सक्रिय छलाहे। ओ आबि भूजानाथ कें मनौलनि आ किछु साधारण टाकाक लोभ दऽ कए हुनक बेटाक बियाह ठीक करा देलखिन।

समय पर मुसरी अर्थात एम.एन. मिसराक बियाह भेलनि आ फेर पितामहक तपस्याक फलें पुत्ररत्नक प्राप्ति सेहो। नाम राखल गेल दिलीप कुमार। नव परम्पराक अनुसार पारिवारिक नाम 'मिश्र' हटा देल गेल।

आब आउ असली खिस्सा पर जे पंडित संस्कार नाथ मिश्रक प्रपौत्र एहि आधुनिक कम्प्यूटर युग मे पंडित कोना भऽ गेलाह।

एम.एन. मिसरा जखन कोरबा मे रौद बसात पानि बिहारि मे मजदूर सबहक ओगरबाही करैत रहथि तखन हुनका डेराक बगल मे हरलाखी लगहक कोनो गामक एकटा पाँड़ेजी रहैत छलखिन जे ओतए पंडिताइ करैत छलाह। पाँड़ेजी कमे पढ़ल लिखल किन्तु व्यावहारिक लोक। अपन पंडिताइ मे संस्कृत कम हिन्दीए सँ बेसी काज चलबैत छलाह। हनुमान चालीसा पढ़ि कए ओ महादेवक पूजा सेहो कऽ दैत छलखिन आ कतेक ठाम कन्यादान सेहो। मुदा तैयो खूब व्यस्त रहैत छलाह आ नीक टाका कमा लैत छलाह। एम.एन. मिसराजी मैट्रिक पास आ ठीकेदारक मुंशीक असिस्टेंट मात्र पाँच हजार कमाइत छलाह आ पाँड़ेजी सुखारो ऋतु मे पचीस तीस हजार उठा लैत छलाह। भादव, कातिक, माघ, बैसाख आदि मास मे तँ पचासो हजार पार कऽ लैत छलाह। टाका तँ जे से, मान सम्मान सेहो खूब बेसी। यजमान सब अपन अपन वित्तक अनुसार रिक्शा वा गाड़ी पठा हुनका बजबैत छलखिन। तें रौद बसातक झंझट हुनका कहियो नहि पड़नि।

पाँड़ेजीक कमाइ आ मान सम्मान सँ एम.एन. मिसराजी बहुत प्रभावित भेलाह। एक दिन पाँड़ेजी हुनका लग अपन विचार व्यक्त केलखिन "देखियौ मिसराजी, आइ कालि सबहक बेटा बेटी कम्प्यूटर इंजीनियर भऽ रहलैकए। सब बंगलोरे मे नोकरी करए चाहैत अछि आ कि अमेरिके जाए चाहैत अछि। मुदा पंडितक संख्या कतेक कम भऽ गेलैक अछि। एतेक टा कोरबा मे हम सब मात्र दश गोटे छी आ हरदम एक यजमान सँ दोसरक ओहि ठाम दौड़ैत रहैत छी। पंडित सब कम्प्यूटर इंजीनियर सँ कोन कम कमाइत छथि यदि अपने ठीक सँ जोड़ियौक। सुनै छी अहाँक पितामह नामी पंडित छलाह से अहूँक परिवार सँ ई परम्परा उठि गेल। हमरा तँ लगैत अछि अगिला पुश्त मे पंडित प्रजातिए विलुप्त भऽ जाएत।"

एम.एन. मिसराजीक पुत्र दिलीप कुमार गामहि मे सरकारी प्राथमिक विद्यालय मे पढ़ैत छलखिन आ अगिला साल हुनकर विचार छलनि माता यशोदा हाइ स्कूल मे भर्ती करेबाक। एही समय पाँड़ेजी सँ प्रभावित भए ओ एकटा क्रांतिकारी निर्णय लेलनि जे बेटा कें महामाया संस्कृत विद्यालय मे पढ़ौताह आ अपन पितामहक सुयश कें पुनः स्थापित करताह।

दिलीप कुमार महामाया संस्कृत विद्यालय मे नाम लिखौलनि आ लगलाह लघु सिद्धान्त कौमुदी आ अमर कोष रटए। मुदा हुनक प्रपितामहक युग सँ एहि युग तक बहुत परिवर्तन भऽ गेल छलैक जाहि मे संस्कृत विद्यालय आ मदरसा आदि मे सरकार नवका पाठ्यक्रम लागू करा देने छलैक। नवका पाठ्यक्रमक अनुसार विद्यार्थी कें आनो विषय जेना गणित, इतिहास आ विज्ञान आदि सेहो पढ़ए पड़ैत छलैक। उचिते, संस्कृतक प्राथमिकता कने कम भऽ गेल छलैक।

मध्यमा पास केलाक बाद दिलीप कुमार आबि गेलाह कोरबा आ पाँड़ेजीक संरक्षण मे लगलाह पंडिताइक व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करबा मे। अथवा कहू अपरेन्टिस भऽ कए प्रशिक्षण लेबए लगलाह।

पाँड़ेजी दिलीप कुमारक पढ़बा लिखबाक ज्ञानक परीक्षा किछुए क्षणक गपसप मे लऽ लेलखिन। तकर बाद ओ एक प्रकारक क्रैश कोर्स जकाँ पाठ्यक्रम बनौलनि जाहि मे सत्यनारायण पूजा आ दुर्गा शप्तशती पाठ मूल संस्कृत मे छलैक। आ सब देवी देवताक प्रार्थना सेहो संस्कृते मे। बाँकी हनुमान चालीसा आ रामचरित मानसक विभिन्न उद्धरण

छलैक। एकर अतिरिक्त किछु छिटफुट वेदपाठ सेहो। ई सब दिलीप कें कण्ठस्थ करबाक छलनि।

एहि किताबी ज्ञानक अतिरिक्त व्यावहारिक ज्ञानक लेल पाँड़ेजी दिलीप कें अपना संगे किछु किछु ठाम आयोजन सब मे लऽ जाए लगलखिन। ओतए दिलीप हुनकर असिस्टेंट जकाँ काज करथि, जेना यजमान सँ विभिन्न वस्तुक ओरिआओन कराएब, पूजाक सामग्री सजाएब, आदि। पाँड़ेजीक अनुभव छलनि जे जतेक विस्तृत रूपें सामग्री सजाओल जाए, यजमान वर्ग पर ओतबे बेसी प्रभाव पड़ैत छैक। विन्यासक लूरि सीखब मंत्र सीखब सँ बेसी महत्वपूर्ण। एकर अतिरिक्त दिलीप पूजाक समय पाँड़ेजीक प्रत्येक भाव भंगिमाक सूक्ष्म अध्ययन करथि। सत्यनारायण पूजा मे कथाक समय भाषाटीका द्वारा हिन्दी मे लोक कें ओकर महत्त्व बुझाएब पाँड़ेजीक विशेषता छलनि। समय जरूर बेसी लगैत छलैक मुदा एहि सँ पाँड़ेजीक पांडित्यक धाख बढ़ैत छलनि। ओ दिलीप कें गर्व सँ सुनबथिन "गाम पर पूजा होइत छैक तँ कथाक समय यजमान आ आनो लोक सब बैसल बैसल ओंघाए लगैत छथि, मात्र पुरहितजी अपने कथा बँचैत रहैत छथि। हमरा कथा बँचैत काल अहाँ देखियौक, लोक आनन्द सँ झूमैत रहैत अछि। बीच बीच मे हमरा संगे सत्यनारायण भगवानक जयजयकार सेहो करैत रहैत अछि। कारण स्पष्ट छैक। संस्कृत मे कथा भेला सँ ककरो किछु बूझऽ मे तँ अबैत नहि छैक। पुरहितजीक सस्वर पाठ ओहने होइत छनि जेना बच्चा कें सुतबै कालक लोरी गीत। कथा एहन भाषा मे कहियौक जे लोक बूझए। बस, अपनहि सब अहाँक संगे एकाकार भऽ जाएत।"

दिलीप एक दिन मन्द विरोधक स्वर मे कहलखिन जे संस्कृत तँ देववाणी छिऐक। तै पर पाँड़ेजी हुनका बड़ नीक जकाँ बुझौलखिन "देखियौक, संस्कृत देववाणी तखन छलैक जखन सब लोक संस्कृते बजैत छल। देवताक कोनो वाणी नहि छनि। हमरे अहाँक वाणी सँ देवता बजैत छथि। वाल्मीकि रामायण छैक संस्कृत मे आ तुलसीदास रामायण लिखलनि हमरा अहाँक भाषा मे। लोक ककरा बेसी पढ़ैत छैक ? एखन अहाँ भगवानक आरती गबैत छी कि लक्ष्मीजीक आरती कि आन कोनो देवताक आरती। सबटा तँ हिन्दी मे छैक आ कतेक आनन्द

अबैत छैक लोक कें आरती गबैत। एकरे संस्कृत मे बना दियौक, कमे लोक बचत अहाँ कें संग दैबला। ”

दिलीप बूझि गेलाह असली गप। एवम प्रकारें ओ ट्रेन्ड होमए लगलाह। छोटछीन आयोजन सब मे यजमानक हैसियत देखि पाँड़ेजी दिलीप कें एकसरे पठबए लगलखिन। हुनका अतीव खुसी छलनि जे लुप्तप्राय पंडित प्रजाति मे एकटा सदस्य जोड़ा रहल अछि।

एक दिन पाँड़ेजी एम.एन. मिसराजी सँ दिलीप कुमारक भविष्यक लेल विचार विमर्श केलनि। हुनकर विचार छलनि जे दिलीप कोरबा छोड़ि कोनो नव जगह चल जाथि। एतए ओ पंडिताइ सिखलनि अछि। बारीक पटुआ तीत होइते छैक। अपना इलाका मे कोनो विद्वान कें यश नहि भेटैत छनि। तें विद्वान कें विदेश मे अपन विद्वत्ताक प्रचार करबाक चाही। तहिना पंडित कें अपरिचित जगह मे यजमनिकाक प्रसार करबाक चाही। शूरवीर कें अनचिन्हार लोकक बीच जा कए राज करैक चाही। बाहरक लोकक गुण अवगुणक थाह जल्दी नहि लगैत छैक। तें ई सब दीर्घायु होइत छैक जेना अपना देश मे अंग्रेजक राज।

करीब दू साल तक व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त केलाक बाद पंडित दिलीप कुमार पहुँचि गेलाह सिलबासा जे एकटा नवका औद्योगिक केन्द्र भऽ रहल छलैक। ओतए किछु दिन स्थानीय हनुमान मन्दिर पर एकसरे दिन राति हनुमान चालीसा, किछु रामायणक उद्धरण आ विभिन्न देवी देवताक प्रार्थना संस्कृत मे सस्वर पाठ करैत रहलाक बाद शनैः शनैः यजमान सब भेटए लगलनि। एतए ओ नवका पंडितजी नाम सँ विख्यात भऽ गेलाह।

हम सब सिलबासा आएल छी जतए हमर जमाय एकटा फैक्ट्री मे इंजीनियर छथि। ओ एकटा नवका फ्लैट लेलनि अछि तकरे गृहप्रवेशक पूजा छिऐक। एही आयोजन मे नवका पंडितजी बजाओल गेल छथि। हमर बेटी कहलनि जे नवका पंडित छथि हमरे ग्रामीण दिलीप कुमार, स्वर्गीय पंडित संस्कार नाथ मिश्रक प्रपौत्र। ओना मुम्बइ मे हमर दीर्घ प्रवास मे गामक ई एकटा परिवर्तन हमरा बूझल नहि भेल छल।

हम पूरा आयोजन मे हुनका सँ नजरि बचा कए हुनकर व्यवहारक अध्ययन कऽ रहल छी। हुनका नहि बूझल छनि जे हम हुनकर ग्रामीण छिएनि। ओ अपन काज एकटा नीक प्रोफेसनल जकाँ सम्पादित करैत छथि जाहि मे संस्कृत कम हिन्दीए बेसी रहैत छैक। एकटा आमंत्रित बूढ़ व्यक्ति हुनका टोकैत छथिन "पंडितजी, हिन्दी मे जे अर्थ बुझेलियैक से तँ नीक लागल मुदा संस्कृत मे पूजा पाठक विशेषता किछु भिन्ने छैक। हमरा बुझने तँ संस्कृते बेसी रहितैक से नीक।" पंडितजी बड़ संयत भावें हुनका कटलखिन "एतए प्रायः साठि सत्तरि लोक छी। बताउ कते गोटे संस्कृत बुझैत छी ?" सब चुप। पंडितजी आगू बजलाह "देखू देववाणी सँ लोकवाणी बेसी प्रमुख होइत छैक। इएह बात तँ कवि विद्यापति कहि गेलाह। जे बुझियैक सएह वाणी। नहि तँ हम संस्कृत मे पूजा करी आकि तमिल मे, दूनू एके।" नवका पंडितजी अपन पांडित्यक प्रभाव बना लेलनि।

हमरा ई देखि खुसी होइत अछि जे अपन प्रपितामहक पंडिताइक किछु अंश जरूर दिलीप कुमारजी बचा रहल छथि। ओना हमरा ई नहि बूझल अछि जे देववाणीक ई परिवर्तित रूप स्वर्ग मे विराजमान पंडित संस्कार नाथ मिश्र कें केहन लागल हेतनि।

कतेक जोकर

किसुनजी, विसुनजी, कैलास आ हम - चारू गोटे भिनसर कें साल्टलेक मे टहलै कालक संगी भेलहुँ। चारू गोटे मिथिलाक कोनो ने कोनो गाम सब सँ कलकत्ता आएल रही रोजगारक खोज मे प्रायः चारि दशक पहिने। आब सब गोटे सीनियर सिटीजन भऽ गेल छी। किसुनजी कें श्रीभूमि मे एकटा फ्लैट छनि, विसुनजी कें लेक टाउन मे एकटा घर अर्थात बँगला छनि। कैलास आ हम केस्टोपुर मे रहैत छी अपन अपन फ्लैट मे। साल्टलेक मे बैसाखी खेयाघाट सँ लेकटाउन ब्रिज तक हमरा सबहक टहलबाक क्षेत्र अछि। कैलास आ हम बैसाखी आबि पच्छिम दिश बढ़ैत छी। किसुनजी आ विसुनजी लेक टाउन ब्रिज सँ पूब दिश। भेंट भऽ गेला पर पूब वा पच्छिम कोम्हरो टहलि पड़ैत छी। कहियो कए ए.इ. मार्केटबला गार्डेन मे कने बैसि रहैत छी। कहियो बैसाखी बजार जा कए चाहो पीब लैत छी। हम आ कैलास बैसाखी बजार मे तरकारी सेहो कीन लैत छी कारण केस्टोपुर आब महग भऽ गेलैक अछि। किसुनजी आ विसुनजी तखन घूरि जाइत छथि। हुनका लेल एतेक दूर सँ तरकारी लऽ जाएब ने सम्भव आ ने प्रयोजने।

आब हम सब प्रायः पूर्ण रूपें कलकतिया भऽ गेल छी। एहन नहि जे गाम सँ पूर्ण रूपें कटि गेल छी मुदा स्थिति बूझू ओहि गाछ जकाँ जकर जड़ि ओतबे लागल रहि जाइक जाहि सँ ने ओ मरैत अछि आ ने जीबैत अछि। काजे उदेम मे गाम जाइत छी सेहो अति आवश्यके भेला पर, कारण काजो आब दूरैक सम्बन्ध मे होइत छैक। टहलबाक समय हमरा सब बेसी काल कलकतिया राजनीति आ कि मैथिल लोकनिक विभिन्न संघ, महासंघ आ परिषदक राजनीतिक चर्चा मे व्यस्त रहैत छी। किसुनजी आब तृणमूली भऽ गेलाहए, कैलास आ हम एखनहु सर्वहाराक सिद्धान्त मे विश्वास करैत छी, विसुनजी तटस्थ रहैत छथि। ओना तँ पुरान गप सब मोन पड़ितँहि रहैत छैक लोक सब कें मुदा कोशिश रहैत अछि जे खैंठी पड़ल घाव कें नोचल नहि जाए। राजनीतिक चर्चा सामाजिक सम्बन्ध कें प्रभावित नहि करैत अछि आ चाह पीबैत काल तक हम सब मात्र मनुक्ख रहि जाइत छी।

किसुनजी अर्थात कृष्ण मोहन झा बी.ए. पास केलाक बाद कलकत्ता आएल छलाह। ताहि समय ओ एकटा कन्याक पिता भऽ चुकल छलाह। नाम रखलखिन कविता। पितामह जेठरैयत कहबैत छलखिन गाम मे। पिता चारि भाइ तीन बहिन। किसुनजी अपने तीन भाइ दू बहिन मे सबसँ जेठ। मैट्रिक पास केला पर बियाह भऽ गेल छलनि। पहिने ओ राजेन्द्र छात्र निवास मे शरण लेलनि।

विसुनजी अर्थात विष्णुकान्त लाल कंठ कलकत्ता एलाह इनकम टैक्स इन्सपेक्टर भऽ कए। हमरा चारू गोटे मे ओएह टा नोकरी लैए कए एलाह, नोकरी ताकए नहि। हुनका किछु दिन भाड़ा पर रहए पड़लनि लेक गार्डेन इलाका मे। तकर बाद साल्टलेक मे सी.पी.डबल्यू.डी.क क्वार्टर मे चल एलाह।

कैलास अर्थात कैलास बिहारी मंडल हमर इसकुलिया संगी। मैट्रिक पास केलाक बाद कालेजक सख पुरबै लेल एक साल तक झंझारपुरक जनता कालेज मे समय नष्ट केलक। तखन जेठ भाइ बुद्धि देलकै ओकरा जे घोघरडीहाक आइ.टी.आइ. मे नाम लिखा लएह। ओतए गेल ओ आ दू साल तक छेनी हथौड़ाक संग कुश्ती लड़ैत आ विश्वकर्माक पूजा करैत ओ फिटर के सर्टीफिकेट लेलक। फेर आएल कलकत्ता। पहिने किछु साल तक दमदम इलाका मे कोनो छोटछीन फैक्ट्री मे हाथ झारलक। छल ओ करमसाँढ़। ओही समय साल्टलेक मे भारत सरकारक एटोमिक इनर्जी विभाग के एकटा केन्द्र खुजलैक जाहि मे फिटर के वैकेन्सी बहरेलैक। कैलास कें हाथक लूरि नीक छलैक, सेलेक्सन भऽ गेलैक। बस, आब ओ भऽ गेल केन्द्र सरकारक कर्मचारी।

हमरा अपना मैट्रिक मे फर्स्ट डिवीजनक बड़ गुमान छल। हम पहुँचि गेलहुँ आर.के. कालेज मधुबनी साइंस पढ़ै लेल। जतेक किलास बढ़ैत गेलहुँ डिवीजन ओही क्रम मे घटैत गेल। दू बरखक बाद गणित आनर्स लऽ लेल बी.एससी. मे। बाबूजी कें हमरा पढ़बा सँ बेसी चिन्ता बियाहक छलनि। ओ हमर मैट्रिकक फर्स्ट डिवीजन कें भजबए चाहैत छलाह। तें हड़बड़ी छलनि। थर्ड यिअर मे रही तखन बियाह करा देल गेल। चारि बरख तक बाबूजीक पैसा गोबरा कए प्रतिष्ठा अर्थात आनर्स मे फेल करैत बी.एससी. पास कोर्सक सर्टीफिकेट लेल।

आ तकर बाद धेलहुँ कलकत्ताक रस्ता। राजेन्द्र छात्र निवास मे कहुना शरण भेटल। किसुनजी भेलाह रूममेट।

किसुनजी एकाग्रचित्त भऽ कए कम्पीटिसन सब के पाछू लागि गेल छलाह। हुनका गाम सँ खर्चा अबैत रहलनि। तीन चारि बेरक प्रयासें बी.पी.एस.सी., यू.पी.एस.सी. सँ हाथ झारैत ओ इलाहाबाद बैंक मे क्लर्कक नोकरी पाबि गेलाह। ट्रेनिंगक बाद पोस्टिंग भेलनि मानिकतल्ला ब्राँच मे। ताबत दू पुत्रीक पिता भऽ गेल रहथि। कविताक बाद कल्पना। नोकरी भेटलाक किछु मास बाद ओ भद्रलोक जकाँ राजेन्द्र छात्र निवास छोड़ि देलनि आ हेदुआ इलाका मे कोनो पुरान बिल्डिंग मे एकटा कोठरी टेनेन्सी पर लऽ लेलनि। टहलि कए बैंक जाथि आबथि। बस ट्रामक झंझट नहि।

हम लागि गेलहुँ ट्यूशनक पाछू। हमरा भविष्यक कोनो निश्चित लक्ष्य नहि छल। कखनहुँ सोची कम्पीटिसनक तैयारी करी, कखनहुँ विचार बदलि जाए जे मास्टरी करब। कियो कियो रस्ता देखाबथि जे कौस्ट एकाउन्टैन्सी कऽ लिअए। एही द्विविधा मे किछु नहि कऽ सकलहुँ। किसुनजीक सत्संगक सेहो हमरा पर कोनो प्रभाव नहि पड़ल।

बीच बीच मे एकाध टा स्कूल मे मास्टरी शुरुओ केलहुँ मुदा लागल जे एगारह बजे सँ चारि बजे तक एतेक खटि कए जे टाका प्राप्त करैत छी तै सँ बढ़ियाँ जे खा कए तीन घंटा सुतिए रही जाहि सँ साँझ मे ट्यूशन पर जेबा काल थाकल नहि रहब। आ फेर कोनो हेडमास्टरक कथा किएक सहब आ कि ककरो खुसामदे किएक करब ? जाबत राजेन्द्र छात्र निवास मे रही बड़ाबजार इलाका मे ट्यूशन केलहुँ। जखन ओतए सँ धकिया देल गेलहुँ तखन केस्टोपुर गामक भीतर एकटा कोठरी भाड़ा पर लेलहुँ। आ तकर बाद भऽ गेल फूलबागान काकुरगाछी सँ साल्टलेक धरि हमर कार्यक्षेत्र। मारवाड़ीक बच्चा सबकें गणित सिखबैत रहलहुँ मुदा अपन गणित गड़बड़ाएले रहल।

किसुनजी बैंकक क्लर्कीक अतिरिक्त किछु एक्सट्रा काज सेहो करए लगलाह। पत्नीक नामे अनेक इन्स्योरेन्स कम्पनीक एजेन्सी लऽ लेलनि। घरक फर्नीचर सँ लऽ कए जीवन तक के इन्स्योरेन्स करबए लगलाह। एहू सब सँ नीक आमदनी होमए लगलनि। एतेक तक जे

ऑफिस मे जखन प्रोमोसनक चान्स एलनि तँ लिख कए दऽ देलखिन जे हमरा नहि चाही प्रोमोसन। कारण प्रोमोसन भेला पर मानिकतल्ला ब्राँच छूटि जइतनि आ इन्स्योरेन्स एजेन्सीक काज मे बाधा पड़ितनि।

हेदुआक घर मे कनियाँ कें गाम सँ बजा लेलनि। धीरे धीरे ओ पाँच टा पुत्रीक पिता भऽ गेलाह। बचिया सबहक नामकरण मे कलकत्ता रहबाक प्रभाव पड़ए लगलनि। कविता आ कल्पनाक बाद नाम देल गेल कोकिला, कंजना आ फेर कंकना। आब अपने सब कें जरूर जिज्ञासा भेल होएत जे किसुनजी सबटा बेटीक नाम ककार मे किएक रखलनि। असल मे भेलैक एना जे पहिल सन्तानक बेर मे किशोरवय पति पत्नी अपन प्रेम कें प्रगाढ़ करैक लेल ई विचार केलनि जे यदि पुत्र हेतनि तँ मायक नामक अक्षर सँ नाम राखब आ यदि पुत्री भेलनि तँ पिताक नामक अक्षर सँ। आब ओहि समय तँ हुनका सब कें पता नहि छलनि जे विधाता की रचि रखने छथिन। से एक पर एक कन्या अबैत गेलखिन आ ककार शब्दकोष खाली होमए लागल।

अस्तु, पाँचक बाद कनियैक जिद्द पर ऑपरेसन करबए पड़लनि। अपन इच्छा तँ छलनि पुत्रक लेल प्रयास करैत रहबाक मुदा जमाना आ भाग्य एतए हुनकर संग नहि देलकनि। पाँचो पुत्री जखन बढ़ए लगलनि तँ एकटा घर मे जगह कम पड़लनि। ओ घरक भीतर चौकी पर चौकी दऽ कए दुतल्ला बनबा लेलनि। ओ जगह छोड़बाक कोनो इच्छा नहि छलनि।

एजेन्सीक इनकम कें सरिअबैक लेल किसुनजी पत्नीक नाम सँ इनकम टैक्स फाइल खोलबा लेलनि। तकर बाद यदा कदा विसुनजीक मदतिक काज पड़ए लगलनि। एतहि सँ ओ दूनू गोटे सपठैत भेलाह। विसुनजीक आइली बाइली टाका किसुनजीक बैंक मे फलाँ आ चिलाँ नामक खाता सब मे राखल जाइनि। ओहि समय एखनुक जकाँ के.वाइ.सी. आ पैन कार्डक झंझट नहि छलैक ने।

हमरा एकटा लति बूझू लागि गेल छल स्कूलहिं सँ - किताब पढ़बाक। जे कोनो किताब भेटए हम पढ़ि ली। स्कूलक लाइब्रेरी मे किछु हिन्दीक उपन्यास सब छलैक से हम चाटि गेल रही। किछु मैथिलीक किताब सब सेहो रहैक तकरो चटलहुँ। एकर अतिरिक्त हमरा

अंग्रेजी सँ सेहो नीक लगाव भऽ गेल छल। अंग्रेजीक शिक्षक श्री द्विभुज नाथ कर्ण हमरा पर बेसी उदार भाव रखैत छलाह। अंग्रेजी सिखबाक हमर लगन देखि ओ हमरा फोकटे मे गाइड करए लगलाह। हुनका ओतए ट्यूशनियाँ बच्चा सबहक भीड़ लागल रहैत छलैक तैयो हमरा लेल स्थान आ समय सुरक्षित रहैत छल। व्याकरण, ट्रान्सलेसन, प्रेस्सी आदि मे हम पारंगत भऽ गेलहुँ। अंग्रेजी मे किलास मे हमरा सब दिन हाइयेस्ट नम्बर आएल। स्कूल छोड़बा काल कर्णजी सलाह देने रहथि जे अंग्रेजी साहित्य सँ बी.ए. करी। मुदा हमरा साइंस पढ़बाक छल, बस एतबे।

मधुबनी गेला पर किछु अंग्रेजीक किताब सब सेहो भेटए लागल। ओकरो चटैत रहलहुँ। पहिल दू साल तँ कोर्स मे किछु अंग्रेजी छल। बी.एससी. मे से छूटि गेल। मुदा प्रोफेसर लोकनिक कृपा सँ किताब सब यदा कदा भेटैत रहल। अंग्रेजी मे किछु जासूसी उपन्यास ओतहि पढ़ने रही।

कहबी छैक भागमन्त कें भूत कमाए। सएह होइत छलैक कैलासक संग। बियाह ओकर कहिया भेलैक से तँ ओकरो ठीक सँ मोन नहि छैक। जखन नोकरी भऽ गेलैक तखन कनियाँ कें दुरागमन करा कए गाम अनलक आ फेर सोझे कलकत्ता। सरकारी क्वार्टर भेटि गेल छलैक। कनियाँ अपना नैहर मे मिडिल पास कऽ लेने छलैक। ओ कने होशियारी देखौलक आ दमदम एयरपोर्टक हिन्दी हाइ स्कूल मे कनियाँ कें नाम लिखा देलकै। लगले लागल दू टा बेटा भेलैक आ कनियाँ सेहो मैट्रिक पास कऽ गेलैक। सबटा बेटी तँ चल गेलनि किसुनजीक कोटा मे। जेठ कें बजबैक नाम भेल लगन आ छोटक मगन।

पे कमीशन पर पे कमीशन आबए लगलैक। कैलासक दरमाहा बढ़ए लगलैक आ ओही अनुपात मे काज घटए लगलैक। एकर प्रभाव पड़लैक पेट पर जे बैलून जकाँ फूलऽ लगलैक। चालीसम पार करैत करैत ओकरा धोधि सम्हारब पहाड़ भऽ गेलैक। पहिने ओ स्मार्ट लोक जकाँ सर्ट कें पैंटक भीतर ढुका कए पहिरैत छल। आब सर्ट पैंटक ऊपर नमरल रहैत छलैक जाहि सँ धोधि झँपबा मे कने मदति भेटैत छलैक। ऑफिस मे खाली हाजरिए टा दैके काज छलैक। छोटमोट काज बैसल बैसल कइओ लैत छल। बेसी भारी वा महत्वपूर्ण काज

ओकर अफसर सब बहरिया ठीकेदार सँ करबए लागल। कैलासक काज रहि गेलैक मात्र इन्सपेक्सन। टाइम पर प्रोमोसन सेहो होइत रहलैक। ओ फोरमैन भऽ कए रिटायर भेल।

विसुनजी सँ पहिल बेर हमरा भेंट भेल छल कादापाराक चित्रगुप्त पूजा मे। मिलनसार लोक मुदा व्यस्तता तेहन जे सम्भव नहि भऽ पबैत छलनि मैथिल सबहक गोष्ठी मे बेसी समय बिताएब। इनकम टैक्स डिपार्टमेन्ट। पैसा कोना आबि जाइक से तँ विसुनजी अपनहुँ नहि बूझि पबैत छलाह मुदा देखिते देखिते लेकटाउन मे एकटा प्लॉट कीन लेलनि जाहि पर दू कोठरीक मकान सेहो बनल छलैक। किछु दिन ओकरा भाड़ा पर लगौने रहलाह। तकर बाद ओ मकान तोड़बा कए सुन्दर नक्साक तीन मंजिला बँगला बनौलनि। आब ओही बँगला मे रहैत छथि।

विसुनजीक बियाह नोकरी भेलाक तीन चारि बरखक बाद भेल रहनि। ससुर महोदय हुनकर पिताक सहकर्मी छलखिन पटना सेक्रेटेरियट मे। कनियाँ हुनकर जे भेलखिन से पटना वीमेन्स कालेज सँ बी.ए. पास केने छलखिन। हुनक प्रधान गुण जे मैथिली गीत आ हिन्दी गजल नीक गबैत छलीह। तानपूरा संग रहैत छलनि। देखबा मे श्याम वर्ण आ स्वर एतेक मीठ, बूझू कोइलीक अवतार।

कनियाँक एहि गुणक प्रचार हुनका ऑफिस मे शीघ्रे भऽ गेलनि। तकर बाद विसुनजी कें एकटा ड्यूटी आर लागि गेलनि। ओ भऽ गेलाह नटुआक भरिया। एहन नहि जे हुनका कोनो तान्पुरा आ सितार उठाबक काज करए पड़नि। से तऽ ऑफिसक कतेक चपरासी छलनिएँ एहि काजक लेल मुदा जतए कतहु प्रोग्राम होइक, कनियाँ संगें जाएब तँ जरूरी भऽ जाइ। कहुना भेलैक तँ नवकनियाँ छलखिन ने।

विसुनजी कें पिताश्री बनबाक सौभाग्य भेटलनि बियाहक सात साल पर। संगी साथी कतेक तरहक कनफुसकी शुरू कऽ देने छलनि मुदा श्रीमती प्राची कंठ प्रसव पीड़ाक लेल अपना कें तैयार नहि कऽ पाबि रहल छलीह। अस्तु, प्रकृतिक लीला देखू। जखन निन्यानबे प्रतिशत केश मे सीजेरियन होइत छलैक, श्रीमती प्राची कंठ कें नॉरमल डिलेवरी सँ कन्या जन्म लेलखिन। खुसी ओहो भेलीह आ खुसी भेलाह सब परिवारक लोक आ आत्मीय लोकनि। मुदा

तकर बाद विसुनजी कें अल्टिमेटम भेटि गेलनि जे एहि सँ आगू नहि। एहि कन्याक नाम राखल गेल इन्दिरा। कहबाक तात्पर्य जे यदि विसुनजी भाग्यशाली हेताह तँ जवाहरलाल नेहरूक पुत्री जकाँ ओएह एक कन्या हुनक परिवार कें जगमगा देथिन आ नहि तँ कुकुर वानर एक सोड़ए जनमेनहि की ? तें श्रीमती प्राची कंठ दोसर बेर प्रसव पीड़ा मे नहि जेतीह। आब हुनका के बुझाबए जे नेहरूजी कें एकेटा बेटी रहि गेलखिन तकर कारण छलैक जे भगवाने श्रीमती कमला नेहरू कें दोसर अवसर नहि देलखिन आ अपना ओतए बजाए लेलखिन। स्वयं इंदिराजी दू बेर माय बनलीह जे सबकें बूझल अछि। मुदा आब जमाना बदलि गेल छलैक आ श्रीमती प्राची कंठ अपन प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहलीह।

केस्टोपुर मे डेरा लेलाक बाद हमरो इच्छा भेल जे आब कनियाँ कें कलकत्ता बजा ली। जतबे कमाइत छलहुँ से एकटा छोट परिवारक लेल जथेष्ठ छल। मुदा ओ बौआसिन एहि लेल तैयारे नहि भेलीह। हुनका बड़ आश छलनि जे नीक पढ़ाकू वर सँ बियाह भेल अछि जिनका मैट्रिक मे फर्स्ट डिवीजन भेल छनि। बाबूजी हुनका सुनबैत छलखिन जे ओझाजी कोनो ने कोनो नीक अफसर बनबे करताह। ताही लेल तँ एतेक टाका गनि कए ई कथा ओ केने छलाह। मुदा जेना जेना समय बीतैत गेलैक हमरा सासुर मे सब कें बुझाए लगलैक जे जमायक रूप मे ओ कोनो असली हीरा नहि, नकली पाथर उठा अनलनि।

बियाह तँ दोसर बेर होइत नहि छैक आ कहबी छैक जे लिखल मेटल नहि जाइ। एहि तथ्य कें स्वीकार करबा मे हमरा कनियाँ कें जरूर बहुत कष्ट भेल हेतनि जे आब कोनो अफसरक पत्नी नहि भऽ सकतीह। अपन 'आशा' नामक सार्थकता रखैत बाह्य भावें निराश कहियो नहि बुझएलीह। अपन भाग्य कें दोख देने हेतीह आ नैहर मे सखी बहिनपाक संग जे बात कएने होथि, सासुर मे अपन कोनो व्यवहार सँ कहियो ककरो नहि बूझए देलखिन जे हुनका कोनो तरहक हीन भावना छनि। नीक पुतोहु जकाँ लागि गेलीह सासु ससुरक सेवा मे। से हम जखन प्रस्ताव देलिएनि कलकत्ता जेबाक तँ ओ एकेटा गप कहि अस्वीकार कऽ देलनि जे जाबत सासु ससुर जीबैत छथिन ओ हुनकर सेवा मे लागल रहतीह। तकर बादे कलकत्ता मुम्बइ के चर्चा करतीह।

एहि उत्तरक आगू हम की कऽ सकैत छलहुँ ? कोना बुझबियनि जे सासु ससुरक सेवाक पाछू पतिक सेवाक अनदेखी भऽ रहल अछि। फेर ओ कहैत तँ छलीह हमरे माय बापक लेल। तें हारि कए हम स्वीकार कऽ लेल जे आब कलकत्ता मे एकसरे रहबाक अछि आ दाम्पत्य जीवनक सुख पावनि तिहार आ छुट्टी छाटी ततबे मे। हम असली मे पिया परदेसियाबला कलकतिया भऽ गेलहुँ। तें पत्र लिखबाक प्रयोजन होइते रहल आ हावड़ा टीसनक दौड़ बड़हा सेहो।

कैलास सँ किसुनजीक भेंट राजेन्द्र छात्र निवास मे भेल छलनि। ताबत हम ओतहि रहैत छलहुँ। ओही दिन कैलास मुरा गेल छल अर्थात ओकर जीवन बीमा करा देल गेलैक। कतबो नाकर नुकर केलक ओ परन्तु किसुनजी नहिए मानलखिन आ फार्म पर ओकर दस्तखत कराइए कए छोड़लखिन। पहिल प्रीमियम सेहो दऽ देलखिन। गप सप मे किसुनजी कें बुझबा जोग भऽ गेलनि जे कैलासक ऑफिस मे हुनक बिजनेस के बढ़ियाँ स्कोप छनि कारण प्रति वर्ष नवयुवक लोकनिक बहाली होइत छनि। नव केन्द्र रहला सँ बहालीक ई क्रम बहुत दिन तक चलतैक।

ओ कैलास कें गसिया कए पकड़लथि आ जाए लगला ओहि ऑफिस नवयुवक लोकनि सँ भेंट करए आ सब कें इन्स्योरेन्स करेबाक लेल फुसियाबए। पहिल प्रीमियमक आधा ओ सबकें ऑफर दऽ दैत छलखिन। अगिला आठ दश साल तक हुनका एहि सँ नीक बिजनेस अबैत रहलनि।

जखन हम केस्टोपुर मे रहए लगलहुँ तँ कैलासक दूनू बेटा कें गणित आ अंग्रेजी मे गाइड कऽ दैत छलियैक। ओ दूनू बच्चा साल्टलेकक लाबोनी मे केन्द्रीय विद्यालय मे पढ़ैत छलैक। कैलास बहुत जिद्द केलक मुदा हम ओकरा सँ टाका नहि लेलियैक। इसकुलिया संगीक किछु तँ खियाल रखबैक चाही। टाका पैसा तँ लोक बहुत कमाइत अछि आ बहुत गमबै अछि।

पढ़बा लिखबाक बुद्धि मे लगन आ मगन दूनू भाइ औसते छल मुदा मेहनती जरूर छल। हमरा गाइड केलाक बाद किलास मे किछु जगजगार होमए लागल। सेकन्डरी आ हायर सेकन्डरी मे दूनू फस्र्ट डिविजन के मार्क अनलक।

कैलास अपन बच्चा सबहक लेल बहुत सोझ योजना रखने छल। ओकरा विज्ञान पढ़ेबाक नहि छलैक। दुनू कें क्रम सँ लगा देलक कामर्स मे। जेठका कें गोएनका कालेज मे एडमिसन भऽ गेलैक ओ.बी.सी. प्रमाणपत्र देला पर। छोटका एडमिसन लेलक जयपुरिया कालेज मे। ओकरा गोएनका कालेज नहि पसिन्न पड़लैक। एकर कारण हम सब बाद मे बुझबैक।

दूनू भाइ नीक सेकेण्ड क्लास सँ कामर्स ऑनर्स पास केलक। अगिला योजना सेहो कैलास पहिनहि सँ फिट रखने छल। सुना देलकै बेटा सब कें एम.बी.ए.क तैयारी करऽ लेल। गोएनका कालेज मे रहैत जेठका अपन मोन बनओने छल सी.ए. करबाक। ई ओहि कालेजक परिपाटी छलैक। मुदा समय साल बदलि रहल छलैक। सी.ए. करबा मे समय बहुत लगैत छलैक आ कठिनाह सेहो। एम.बी.ए. सोझ रस्ता छलैक, दू साल पढ़ि डिग्री भेटबे करैत छलैक आ नीक नोकरी सेहो भेटि जाइत छलैक। किछु हमरो अनुरोध, किछु बापक जिद्द, मानि गेल लगन आ लागल तैयारी करए। एक साल फोंक भेलाक बाद ओकरा गाजियाबाद मे एकटा नीक मैनेजमेंट कालेज मे एडमिसन भऽ गेलैक। किछु पैसा जरूर बेसी खर्च भेलैक कैलास कें मुदा बेटा कें नीक जगह पकड़ा गेलैक।

छोटका मगन पाछुए लागल छलैक। ओकरा आब बुझाइए गेल छलैक जे सी.ए.क चक्कर मे नहि पड़बाक छैक। ओ पहिनहि सँ लागि गेल एम.बी.ए.क तैयारी मे। कैट के परीक्षा देलक जे आइ.आइ.एम. मे एडमिसन लेब। ओकरा संगे ओ किछु एहन इन्सटीच्यूट सब मे फार्म भरलक जे कैट स्कोर पर एडमिसन लैत छलैक। आन इन्सटीच्यूट सबहक परीक्षा नहि देलक। ओकरा मोन मे किछु छलैक जे ओ बजैत नहि छल। कैटक स्कोर एतेक बढ़ियाँ तँ नहि एलैक जे आइ.आइ.एम. मे जगह भेटितैक मुदा ओकर नीचा रैंकक दूटा कालेज सँ चिट्ठी आबि गेलैक जाहि मे एकटा छलैक कलकत्तेक आइ.आइ.एस.डब्ल्यू.बी.एम., जकरा कि देशक प्रथम मैनेजमेंट इन्सटीच्यूट कहेबाक गौरव छलैक। जे रोगी कें भाबए से वैदा फरमाबए। आर की चाही ? मगन तँ चाहिते छल कलकत्ता मे रहि पढ़ाइ करब। से इच्छा पूर भऽ गेलैक। कारण जे होउक। ककरो शिकाइति करबाक मौका नहि लगलैक कारण इन्सटीच्यूट तँ नीक छलैहे।

किसुनजी बेटी सब कें पढ़ौलनि जरूर मुदा हेदुआक आसेपासक स्कूल मे। बालिका शिक्षा सदन हिनका लेल सब तरहें उपयुक्त भेटलनि - घरक लग, लड़की सबहक स्कूल आ हिन्दी माध्यम सेहो। एहि स्कूलक एकटा आर विशेषता जे नीक गृहिणी बनबाक लूरि पर विशेष ध्यान देल जाइत छलैक। बेटियो सब पूर्ण आज्ञाकारिणी आ कोनो बेसी महत्त्वाकांक्षाबाली सब नहि। लाइन पर चलैत गेलीह।

जाहि समय विसुनजी अपन इन्दिरा बेटीक मुहें पप्पा मम्मी कहब सुनैत आनन्दित होइत छलाह, किसुनजी अपन जेठ पुत्री कविता लेल वर ताकब शुरू कऽ देने छलखिन। पाँच टा बेटी भऽ गेलाक बाद किसुनजी एकटा सरकारी पंचवर्षीय योजना जकाँ विचार कऽ लेलनि जे कोन साल मे कोन बेटी कें भसिया देबाक अछि। एहि लेल पढ़ाइ लिखाइक न्यूनतम स्तर राखल गेल हायर सेकन्डरी। बेटी सब जखने ई गेट पार करथि हुनका लेल बियाहक इन्तजाम सेहो शुरू भऽ जाइन। हुनक एकटा आर प्रयास रहैत छलनि जे जतेक सम्भव हो, वरक खोज मे कलकत्ता हावड़ा इलाका सँ बाहर नहि जाइ, जाहि सँ बेटी सब लगे मे रहए।

कविता जखन हायर सेकन्डरी पास केलखिन तखन हुनकर बियाह ठीक केलनि ओ ठाकुरपुकुर मे रहनिहार रविकान्तजीक पुत्र नीलकान्त सँ। वर महोदय बी.कॉम. पास कोर्स सँ उत्तीर्ण भऽ कए टिकमिटिया एण्ड कम्पनी सालिसिटर फर्म मे एसिस्टेंटक पद पर काज करैत छलखिन आ साँझ खन बालीगंजक लॉ कालेज मे एल.एल.बी.क किलास सेहो करैत छलखिन। वरक पिताक आशा छलनि जे किछुए वर्ष मे बच्चा करिया कोट पहिरए लगताह। अपने रविकान्तजी धरमतल्ला मे एकटा ट्रान्सपोर्ट कम्पनी मे छलाह। गाम घरक स्थिति साधारणे छलनि।

वराइत आ कन्यागत दूनूक लेल ई पहिल काज छलनि। तें विवाह यज्ञ गामहि मे सम्पन्न भेल। हम गेल रही किसुनजीक गाम। हुनकर बास बेस पैघ डीह पर। पोखरिक उतरबरिया मोहार पर आँगन आ पुबरिया मोहार पर दक्षिण सटा कए विशाल दलान। ओतए हम पहिल बेर देखल जे पोखरि मे आँगन सँ जोड़ल एकटा घाट छलैक स्त्रीगणक लेल, जकरा अढ़

करए लेल पोखरि मे किछु दूर तक टाट देल छलैक। एहि टाट कें मात्र मछमरी दिन हटाओल जाइत छलैक।

एतेक ठाठबाट देखि हमरा कने अजगुत लागल छल जे किसुनजी कोना कए रविकान्तबाबू कें समधि बनौलनि। हुनका लोकनिक हैसियतक मादे एकटा ग्रामीण सँ हम किछु जिज्ञासा केने रही। ओ व्यक्ति संक्षेप मे एतबे संकेत देलनि जे ठाठ आब मात्र डीह आ पोखरि लऽ कए छनि। बुढ़ा अपने हफीमक सेवक छथि। बाधक जमीन सब बहुत किछु बिलटि चुकल छनि। तखन हम अन्दाज लगाओल जे बचल खुचल जमीन मे किसुनजी कें बारहम हिस्सा भेटतनि। तें किसुनजी तँ जेठरैयत नहिए रहि जेताह।

हुनक दादा, जे जेठरैयत कहबैत छलखिन, से जीबिते छलखिन आ बरियातीक स्वागत सत्कारक भार स्वयं लेने छलखिन। सब किछु पुरना ठाठ सँ भेल छलैक मुदा एकटा अलग विशेषण सँ युक्त। अपने रविकान्तजी साधारणे परिवार सँ छलाह आ बरिआती सेहो तेहने छलनि। मुदा बरियाती कें एतए जे अनुभव भेलनि से जरूर ओ सब जिनगी भरि बजैत रहल होएताह। प्रति दूटा बरियाती पर एकटा खबास। जाँतब पीचब सँ लऽ कए हरेक ड्यूटी बजबै लेल तैयार। हमरो लेल ई पहिले अनुभव छल। हँ, ई जरूर छलैक जे एखनुका जकाँ सैकड़ा मे बरियाती जाइतो नहि छलैक। रविकान्तजी वर लगा कए मात्र पन्द्रह गोटे आएल छलखिन। ओतेक बड़का दलान पर ओ चौदह टा बरियाती हेरा जकाँ गेल छलथि।

गाम सँ किसुनजी घुरलाह तँ पूरा परिवार, मुदा साल भरिक भीतरे हेदुआक ओहि घर मे एक गोटेक संख्या कम भऽ गेलनि। कारण एकटा नीक बात भेलैक जे सोझे बरखें कविताक द्विरागमन भऽ गेलनि। ओ हेदुआ सँ चल गेलीह ठाकुरपुकुर।

केस्टोपुर मे जाहि घर मे हम भाड़ा पर रहैत छलहुँ तकर मकान मालिक कें टोल पड़ोस मे लोक बोकाइ कहैत छलैक। हमर डेरा भी.आइ.पी. रोड सँ करीब सात आठ मिनटक चलब, अन्दाज आध किलोमीटर जमीन। एहि घरक सामने रस्ताक कात मे एकटा धनखेती छलैक जे एतुका नापें करीब पाँच कट्ठा होइतैक। ओहि खेतक मालिक हमर मकान मालिकक पित्ती। ओकरा अपना कोनो सन्तान नहिं छलैक। ओ बोकाइ कें बेटा जकाँ मानैत छलैक। यद्यपि

ओकर इच्छा छलैक सबटा खेत पथार बोकाइ कें लीख देबाक मुदा ओकर स्त्री एहि लेल राजी नहि छलैक। ओकरा बोकाइक माय सँ बड़ इर्ष्या छलैक।

बोकाइक पित्ती एकटा रवि दिन हमरा लग एलाह आ कहलनि जे हम ई धनखेती बेचए चाहैत छी। हुनक स्त्री कें कोनो पैघ बिमारी भऽ गेल छलनि जकर इलाज मुम्बइ मे करबए पड़ितैक। एहि खर्चाक लेल हुनका पाइ नहि छलनि। ओ हमरा कहलनि जे गामक रेट एखन डेढ़ सँ दू हजारक बीच छैक। यदि हम लेब तँ हमरा ओ किछु कमो मे दऽ देताह।

हमरा ई प्रस्ताव विचित्र लागल। गाम परहक खेत तँ बिलटि रहल छल। बाबूजी सँ आब सम्हरैत नहि छलनि, जन बोनिहार भेटैत नहि छलैक, सबटा खेत बटाइ लागि गेल छल आ कलकत्ता सन दूर देश मे हम धनखेती कीनी, एकर कोन अर्थ भेलैक ? दोसर, तत्काले पाँच छऽ हजार टाका आओत कतए सँ ? हमर बचत एखन तक मामूली छल आ ई सोचनहुँ नहि रही जे कलकत्ता मे सम्पत्ति कीनब। एहि समय तक हमरा परिचयक लोक सब मे बेसी तँ एहने छलाह जे कमाथि कलकत्ता मे आ जमीन कीनथि गाम मे। मात्र विसुनजी लेकटाउनबला जमीन किनने रहथि मुदा हुनकर कोन नकल ? पैघ लोकक पैघ बात।

हम एहि प्रस्ताव कें अनठाबए चाहलहुँ। मुदा किछुए कालक बाद बोकाइ स्वयं आएल हमरा जिज्ञासा करए। हम ओकरा टारबाक प्रयास केलहुँ। ओ उनटे हमरे बुझबए लागल ‘‘मास्टरजी, एकरा नहि छोड़ू। आइ एकरा धनखेती देखैत छिऐक। पाँच साल बाद सबटा महल बनतैक एतए। देखैत नहि छिऐक काकुरगाछी इलाका। एहू सँ बेसी गलीत छलैक। आ साल्टलेकक तँ कथे कोन? दुपहरिया मे सियार भुकैत छलैक। कतेक लोक एहन जे पहिल बेर देखए आएल आ एतेक निराश भेल जे फेर घुरि कए नहि आएल। आइ साल्टलेक चमकैत छैक। सोचियौक केस्टोपुर आ साल्टलेक मे अन्तरे कतेक छैक ? नाला पर एकटा मोटर पुल बनि जाइक तँ केस्टोपुर साल्टलेकक एकटा मोहल्ला भऽ जेतैक। केस्टोपुरक एकटा आर गुण छैक जे अहूँ एतेक दिन सँ रहैत छी, मार्क केने हेबैक। सौंसे कलकत्ता पानि मे डूबि जाउक मुदा एतए पानि नहि लगैत छैक। एकर ढलान छैक पूब मुहें आ सबटा

पानि चल जाइत छैक नाला मे। हम तँ अपनहि ई खेत कीनि लितियैक मुदा काकी हमर छैक चंठ। हमरा सँ ओकरा बड़ इष्र्या छैक। ओ हमरा देबे नहि करत।''

बोकाइक गप पहिल बेर हमरा किछु तर्कसंगत लागल आ सोचए पर बाध्य केलक। हम ओकरा तत्काल एतबे कहलियैक ''अहाँ पित्ती कें कहि दियनु जे एक हप्ताक समय देथि। हमरा गाम जाए पड़त विचार करए आ किछु टाकाक सेहो जोगाड़ करए।'' फेर हम लगलहुँ अपन कागत पत्तर जाँचए जे एतए कतेक टाका ओरिआओल जा सकैत छल। इतस्ततः के स्थिति मे हम ओही दिन चारि बजे मिथिला एक्सप्रेस सँ गाम विदा भऽ गेलहुँ। ककरो नोकरी मे तँ छलहुँ नहि जे ऑफिस जाउ, अफसरक भेंट करू, आवेदन दियौक आदि विधिक निवारण करए पड़ैत। स्वतंत्र व्यक्तिक अस्तित्व सेहो कखनहुँ कें लाभदायक होइत छैक।

अनदिना अनचोके मे हमर गाम पहुँचब कोनो नव बात नहि रहि गेल छलैक। जे कलकत्ता मे एकसरुआ रहैत छथि आ ताहू मे युवावस्थाक मध्य मे छथि से सब हमरे जकाँ अनदिना हावड़ा जा कए गाड़ी पकड़ि लैत छथि। गाम मे हमरा एलाक कोनो टीका टिप्पणी नहि भेलैक। हम गुप्पे चुप्पे दू टा काज कएल - एक तँ पत्नी कें विश्वास मे लेल, हुनका सब बात बुझाओल आ हुनकर सबटा गहना समेटि लेलहुँ। दोसर जे मंगरू साहु सँ एक हजार टाका सूदि पर लेल। मंगरू स्कूल मे संगी छल, हमर लंगोटिया यार जकाँ। संगे संग बैर तोरी आ संगे संग मास्टर सँ मारि सेहो खाइ। बाप एकटा किराना दोकान चलबैत छलैक। कंजूस एहन जे टी.बी. सँ मरि गेल मुदा पैसा खर्च हेबाक डरें इलाज करबए दरभंगा नहि गेल। मंगरू किराना दोकान कें बढ़ौलक आ पूँजी बढ़ाकए महाजनी सेहो करए लागल। गाम घर मे लोक कें बेगरता पड़ितँहि छलैक। मंगरूक धंधा बढ़ियाँ चलऽ लगलैक। थाड़ी लोटा गहना गुड़िया खेत पथार सब किछु भरना बन्हक रखैत छल ओ। आ बेगरता देखि अठारह सँ तीस प्रतिशत ब्याज पर लहना लगबैत छल।

गामक संगी हेबाक कारण एतबा तँ ओकरा सँ आशा करिते छलहुँ जे बेर कुबेर ओ किछु मदति करत आ बात कें गुप्त राखत। मंगरू कें जखन एक हजार टाकाक बात कहलियैक तँ ओ कने अकचकाएल जरूर। हम कोनो चीज बन्धक सेहो नहि राखए गेल छलियैक।

पत्नीक गहना सँ हमरा कलकत्ता मे बैंकक लोन लेबाक छल। एक हजार टाका बहुत छलैक आ गाम मे कम सँ कम तीन चारि कट्ठा खेत भरना राखए पड़ितैक एहि लेल। हम ओकर शंका समाधान केलियैक "देख मंगरू तों संगी छें। तोरा सँ नुकएबौक की ? एकटा नीक काज करबाक अछि। काज मे एखन किछु भाङठ छैक तें तोरा बता नहि रहल छियौक मुदा एतेक जरूर आश्वासन दैत छियौक जे ई टाका हम रंडीबाजी मे नहि खर्च करबौक। दोसर बात जे जमीन जाल एखन तँ बाबुएक छिएनि, हमरा सबहक तँ भेल नहि तें किछु अमानती सेहो नहि देबौक।" फेर हमरा अपने पर आश्चर्य भेल जे की बाजि देलियैक। सम्भवतः हम कने ग्लानि महसूस करैत छलियैक मंगरू सँ बिना कोनो अमानती के एतेक टाका मंगबा मे। मंगरू कने लजा गेल। हमरा चरित्रक बारे मे एतेक तँ ओकरा जरूर विश्वास छलैक जे बरू हम कलकत्ता मे एकसरे रहैत होइ मुदा बहकल नहि छी। ओ चुपचाप टाका दऽ देलक। हम अपनहि दिस सँ ओकरा अठारहबला रेट बता देलियैक। ओ किछु नहि बाजल। ओकरा ईहो बुझा देलियैक जे सूदि ओकर समय पर भेटि जेतैक मनीआर्डर सँ आ एहि बातक चर्चा गाम घर मे कतहु नहि करए।

गामक हमर ई विजिट प्रायः सबसँ छोट छल। गहना बन्हने आ टाका खोंसने हम अगिले दिन कलकत्ता विदा भऽ गेलहुँ। कोनो तरहें ओ धनखेती हमर भऽ गेल।

जाबत बेटी इन्दिरा स्कूल जाइबाली भेलखिन, विसुनजीक प्रोमोसन भऽ गेल छलनि। आब ओ इनकम टैक्स अफसर भऽ गेल छलाह आ कने बेसी व्यस्त रहए लागल छलाह। कन्याक जन्मक करीब छऽ मास बाद श्रीमती प्राची कंठ फेर गीत संगीतक प्रोग्राम सब मे पूर्ण रूपें लागि गेल छलीह।

ओना तँ मैडमक इच्छा छलनि बेटी कें कलकटा गर्ल्स अथवा ला मार्ट मे पढ़ेबाक मुदा साल्टलेक मे रहैत विसुनजी कें ई बेसी पसिन्न नहि छलनि कारण एबा जेबा मे समय बहुत बेसी लगैत छलैक। बच्चा परेशान भऽ जाइत। ओही समय साल्टलेक मे भारतीय विद्या भवनक स्कूल खुजल छलैक। एकरो टीम टाम बेस छलैक। विसुनजीक अपन इच्छा ओही मे पढ़ेबाक। किछु कलीग सबहक बच्चा सब एहि स्कूल मे पढ़ैत छलनि। अन्त मे मध्यमार्गी

निर्णय ई लेल गेल जे इन्दिरा प्राइमरी तक भारतीय विद्या भवन मे रहतीह तकर बाद पैघ भेला पर हुनका ला मार्ट पठाओल जाएत।

बच्चा कें गणित सिखेबाक भार हमरा विसुनजी शुरुएहि सँ दऽ देलनि। मुदा ईहो गछा लेलनि जे टाका लेबहि पड़त। हमरा ई उत्तरदायित्व बारह साल तक निर्वाह करए पड़ल जाबत इन्दिरा हायर सेकन्डरी पास नहि कऽ लेलनि। विसुनजी अपना कलीग सब सँ पूछि अपनहि सँ एकटा रेट बना लेलनि जे मारवाड़ी घर सब सँ किछु बेसिए छलैक। ओ टाका हमरा हाथ कहियो नहि आएल। किसुनजीक मारफत ओ हमरा खाता मे जमा होइत रहल।

बेबी इन्दिरा पर मायक गुणक प्रभावो छलनि आ हुनकर अभिभावकत्व सेहो। तात्पर्य जे स्कूल सँ बेसी ध्यान हुनकर गीत संगीत शिक्षा पर देल जाइत छलैक। शनि रवि ओ कथक नृत्य सीखए जाइत छलीह। एतेक भार रहितो स्कूलक प्रगति सेहो ठीके छलनि। प्राइमरी पास केलाक बाद एक बेर परिवार मे फेर बहस भेलैक जे आब ला मार्ट पठाओल जाए की नहि। एहि मे हमहूँ परिवारक अंगे रही। बच्चा अपनहि मना कऽ देलखिन कारण हुनकर बहुतो संगी सब छूटि जइतनि। हम अपना अनुभव सँ सेहो तर्क देल जे धीरे धीरे एहू स्कूलक नाम बढ़ि रहल छैक, बच्चा सब आइ.आइ.टी. आ एम्स मे सेहो जा रहल छैक। संगहिं पुरान भेला पर ला मार्ट मे किछु दुर्गुण सेहो आबि गेलैक अछि तें बच्चाक इच्छा कें देखैत एतहि भारतीय विद्या भवन मे रहए देल जाए। अन्ततः सएह प्रस्ताव पारित भेल।

जाबत हम केस्टोपुर मे धनखेतीक मालिक भेलहुँ ताबत दू बेर पिता बनि गेल रही। पहिल बेर एलाह सुशील आ दोसर बेर एलीह सुशीला। दूनूक नामकरण माइए केलखिन आ हमरा हस्तक्षेपक कोनो अवसर नहि भेटल। ओना हम कलकत्ता मे रहैत बंगाली स्टाइल मे किछु नव नव नाम सब सोचने रही मुदा से सोचले रहि गेल। एकर आगू दूनू गोटेक सहमति सँ हम कलकत्ता मे ऑपरेसन करा लेलहुँ। झुट्टो कए बेसी भीड़ बढ़एबाक कोनो काज नहि छलैक आ बदलैत जमाना मे समाज आब परिवार नियोजनक पूर्ण पक्षधर भऽ चुकल छल। हमरा तँ भगवतीक कृपा संतुलित परिवार भेटि गेल छल।

जाबत दूनू भाइ बहिन कें खेलाइ धुपाइक उमेर छलनि ताबत तँ कोनो चिन्ताक बात नहि छल। समस्या आएल पढ़ाइ लिखाइक बेर मे। गामक प्राइमरी स्कूल एही दश पन्द्रह साल मे बहुत बदलि गेल छलैक। मास्टर सब कें जखन तखन बदली भऽ जाइ तें ककरो पढ़बै मे मोन नहि लगैत छलैक। सब कियो स्कूल इन्सपेक्टरक खुसामद मे लागल रहए जे गामक लग बदली करबा ली अथवा गाम लगहक स्कूल सँ बदली रोकबा ली। बच्चा सब नामेक लेल स्कूल जाइ छल। तीसरा चौथा पास कऽ जाए आ ठीक सँ नामो नहि लीखए अबैक। गणितक तँ गपे छोड़ू। एहना स्थिति मे हमरा अपन बेटा बेटी कें गाम मे पढ़ाएब ठीक नहि बुझाइत छल। एहि मादें फेर एक बेर श्रीमतीजी कें बुझेबाक चेष्टा केलहुँ जे बच्चा सबहक भविष्य कें खियाल करैत ओ कलकत्ता चलथि। मुदा एहू बेर हम फेल कऽ गेलहुँ। ओ अपन प्रतिज्ञा तोड़बा लेल तैयार नहि भेलीह। अन्त मे हारि कए हम इएह विचारल जे एखन छोड़ि दैत छिऐक, जखन कने पैघ हेतैक तखन कम सँ कम बेटा कें अपना संगें राखब।

किसुनजी दोसर बेटी कल्पनाक बियाह योजना अनुसारे करबा लेल तत्पर छलाह। पहिले बेर जकाँ जखने इहो बेटी हायर सेकन्डरी मे गेलखिन ओ वर तकबाक प्रयास मे लागि गेलाह। मुदा एहि बेर सफलता एतेक जल्दी नहि भेटलनि। कलकत्ता हावड़ा इलाकाक अतिरिक्त गाम घर दिस सेहो घूमए लगलाह। देरी भेलाक कारणें बेटी जखन हायर सेकन्डरी पास कऽ लेलखिन तँ ओकरा लगैक जयपुरिया कालेज मे बी.ए. मे नाम लिखा देलखिन। घर मे बैसा कए राखब ठीक नहि बुझएलनि। ओ बेचारी अपनहि मोने हिन्दी ऑनर्स लऽ लेलनि।

वर तकबाक काज चलितहि रहलैक। मुदा एहि बेर हुनका किछु विचित्र आ नव अनुभव भऽ रहल छलनि। बेटी कालेज मे पढ़ैत छलनि आ हाथ मे आब किछु टाका सेहो छलनि। तें आब कने नीक श्रेणी मे खोज पुछारि करए लगलाह जेना इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर आदि। एही क्रम मे हुनका एक ठाम सूनए पड़लनि जे इंजीनियर वरो तँ नीक ससुर तकतैक। बैंकक किरानी ओतए के इंजीनियर करतैक बियाह ? चाहे कतबो टाका दौक ने। ओकरो कोनो नीक अफसर ससुर चाही। बेर कुबेर मे सम्बन्धक लोक नीक पद पर रहला सँ मदति भेटैत छैक।

अस्तु, बेटीक भाग्यक बात। वर प्रोफेसर भेटलखिन मुदा मसोमातक पुत्र। मुजफ्फरपर मे एकटा नवका कालेज मे काज करैत छलखिन। माम रहथिन कर्ता धर्ता। टाका पैसा प्रचलित रेटक अनुसारे लगलनि। बियाहक समय तक कल्पना जयपुरिया कालेज सँ बी.ए. पास कऽ गेल छलखिन। विवाह यज्ञ एहू बेर गामहि मे सम्पन्न भेलैक। कल्पना जखन कलकत्ता छोड़ि देलखिन तँ हेदुआक ओहि कोठरी मे जनसंख्या आर कम भऽ गेलैक।

एक तरहें ई काज नीक भेलनि कारण मुजफ्फरपुर मे लागल लागल कल्पना हिन्दी मे एम.ए. कऽ लेलखिन आ अपना पतिक कालेज मे लेक्चरर भऽ गेलीह। कालेज चलि गेला सँ पढ़बाक आकांक्षा जागि गेल रहनि आ तकर ई नीक फल भेटलनि।

केस्टोपुर आबि गेला सँ हम एकसर भऽ गेलहुँ। राजेन्द्र छात्र निवासक संगी लोकनि तँ ओतहि छूटि गेलाह आ हुनका लोकनिक सँग मटरगस्ती करबाक अवसर सेहो आब नहि भेटैत छल। परिणाम भेल जे हमरा किछु समय बचए लागल। हम फेर अपन किताब पढ़बाक हॉबी कें जगाएल। एही समय डायरी जकाँ किछु किछु लिखब सेहो शुरू कएल। जमीन किनबा मे जे कर्ज भऽ गेल छल तकरा सधेबाक लेल हमरा किछु विशेष जोगाड़ करए पड़ल। आब हम दू घंटाक लेल एकटा कोचिंग सेन्टर मे जाए लागल रही। स्कूलक मास्टरी सँ ई काज बेसी नीक छल - पाइयो बेसी आ मेहनतिओ कम। शनैः शनैः गणितक नीक शिक्षक मे हमरो नाम आबए लागल।

सुशील जखन दश बरखक भऽ गेलाह आ पँचमा पास कऽ लेलनि तखन हम हुनका कलकत्ता लऽ अनलिएनि। पढबा मे कमजोर तँ भैए गेल छलाह। आब बेसी समय नष्ट करबाक माने होइत हुनकर जिनगी बर्बाद करब। एतए हुनका कलकटा पब्लिक स्कूल मे हिन्दी मीडियम मे सिक्स्थ मे नाम लिखा देल आ हुनक पढ़ाइ लिखाइ कें सुधारबाक लेल हम अपनो दैनिक प्रोग्राम मे किछु परिवर्तन कएल। केस्टोपुर के ओही कोठरी मे दूनू बापूत रहए लगलहुँ।

एतेक दिन तक भोजनक कोनो स्थायी व्यवस्था नहि कएने रही। आब से आवश्यक भऽ गेल। एकटा कोठरी मे दिक्कत होअए लागल। बोकाइ कें एहि समस्या सँ अवगत कराओल। ओ बेचारे लगले एकटा इन्तजाम कऽ देलनि। अपना घरक एकटा कोनचर कें बढ़ा कए हमरा

लेल एकटा छोट किचेन बनबा देलनि। अपना कोठरी सँ एतए जेबा मे रौद बसातक समस्या तँ छलैक मुदा तत्काल हमरा पैघ डेरा लेबाक विचार नहि छल।

एक बरखक भीतरे सुशीलक पढ़ाइ ठीक रस्ता पर आबए लगलनि। गणित, विज्ञान आदि विषय मे नीक तँ भैए गेलाह, अंग्रेजी मे सेहो नीक प्रगति भेलनि। हम हुनका सँ अंग्रेजी मे गप करब शुरू कऽ देल आ कने मने गणित सेहो अंग्रेजी माध्यम सँ सिखेनाइ प्रारम्भ कएल। हुनकर प्रगति कें देखैत एर्थ मे कलकटा पब्लिक स्कूलक इंग्लिस मीडियम मे हुनकर नाम लिखा देल। आन पैघ स्कूल मे कियो टपौ नहि दितए। मुदा एहि स्कूल मे मैथिल संस्थापक रहला सँ कने नेहोरा मिनती चलि जाइत छलैक। आ विसुनजीक पैरवी सेहो छल। ओ एहि स्कूलक मैनेजमेंटक सदस्य सेहो छलखिन।

दैनिक प्रोग्राम मे परिवर्तन भेला सँ हमरा अपनहुँ पढ़बा लिखबाक समय भेटए लागल। आब हम किछु कविता, किछु लघुकथा आदि सेहो लीखए लगलहुँ। बहुत दिन तक असमंजसक स्थिति मे रही जे मैथिली मे लीखी कि अंग्रेजी मे। इच्छा छल अंग्रेजी मे लिखबाक मुदा कोनो तेहन योग्यता नहि रहला सँ धखाइत रहलहुँ। स्कूल मे अंग्रेजी नीक छल मुदा तकर बाद तँ किछु खास पढ़लहुँ नहि। साहित्य ककरा कहैत छैक से मात्र कर्णजीक पढ़ाओल ‘बुक फोर’ बला संकलनक कविता कहानी सँ आगू नहि बूझल छल। मधुबनीक अंग्रेजी मात्र मनोरंजन लेल छल। एहि ज्ञान सँ कियो अंग्रेजीक लेखक कोना भऽ जाएत? तैयो अन्तस मे कतहु लागि रहल छल जे हमरा प्रयास करबाक चाही, कल्पना कें तँ भाषा नहि चाहियैक तखन पाठक तक अपन कल्पना संप्रेषित करबा लेल एकटा माध्यम जरूर चाही आ ओतेक अंग्रेजीक ज्ञान कर्णजी सँ हमरा भेटि गेल छल। एकरा अनुवादे बूझल जाओ मुदा से सम्भव छैक।

अपन अंग्रेजीक ज्ञान बढ़ेबा लेल हम किताब सब पढ़ब शुरू केलहुँ। उल्टाडांगा मे एकटा लाइब्रेरी खूजि गेल छलैक। हम कोनहुना ओकर मेम्बर भऽ गेलहुँ। आब अंग्रेजीक किताब सब, मुख्यतः पुरान लेखक सबहक उपन्यास आदि, जमि कए पढ़ए लगलहुँ। अपना पढ़बा मे व्यस्त देखि सुशील सेहो बेसी पढ़थि। हमरा जागल देखि ओ कोना सूति रहितथि ?

मैथिली मे जे लीखी से राजेन्द्र छात्र निवास मे रविदिनक 'सम्पर्क' सभा मे श्रोता सब कें सुना दिएनि। किछु लोक कें नीक नहि लगैनि कारण हम अपना कें कोनो प्रकारें 'एकेडमिक' लोक साबित नहि कऽ सकैत छलहुँ। ने साहित्य मे कोनो डिग्री डिप्लोमा आ ने कतहु कोनो एकेडमिक संस्था सँ जोड़ल सूत्र। आइ यदि कोनो स्कूलहुँ मे हिन्दी वा अंग्रेजीक शिक्षक रहितहुँ तँ अधिकार भऽ जाइत साहित्य चर्चाक। हमरा सन छुट्टा आ बेलगाम लोक कोना साहित्यक साधना कए सकैत छल। मुदा सम्पर्क मे एकाध व्यक्ति जरूर छलाह जे हमरा प्रोत्साहित करथि। अस्तु, मैथिली लेखन एहि सँ आगू नहि बढ़ल। छपेबाक तँ कोनो प्रश्ने नहि छलैक। एकाध रचना सम्पर्कक किछु शुभचिंतक व्यक्तिक अनुशंसा पर कोनो कोनो पत्रिका मे पठेबो केलहुँ मुदा प्रतिफल शून्ये रहल। बूझि गेलियैक जे एहू मे अपना टाइपक ब्राह्मणवाद छैक। आ हम छी शूद्र तें अछूत।

जखन मैथिलीक ई हाल तँ अंग्रेजी साहित्य मे कोना प्रवेश करितहुँ? मोन मानए नहि। पता नहि किएक अन्तर्मन कहए जे हम बहुत भटकलहुँ, अपन जिनगी कें बहुत बर्बाद केलहुँ मुदा हमर सद्गति अंग्रेजिए साहित्य मे अछि। एकरा अहाँ सब बतहपनी कहि सकैत छिऐक मुदा हम जतबे एहि बात पर चिन्तन मनन करी हमर विश्वास बढ़ल जाए जे इएह हमर अगिला रस्ता थीक।

उल्टाडांगा लाइब्रेरी जाइत अबैत एकटा प्रोफेसर सेन सँ परिचय भऽ गेल छल जे विद्यासागर कालेज सँ रिटायर भऽ कए काकुरगाछी मे रहैत छलाह। कहियो काल किछु साहित्य चर्चा हुनका संग कऽ लैत छलहुँ। ओ विद्वान लोक आ हम अखरकटुओ नहि। तथापि ओ हमर बात ध्यान सँ सूनथि से हमरा नीक लागए। हमर आत्मविश्वास बढ़ेबा मे प्रोफेसर सेनक महत्वपूर्ण योगदान छनि।

हम अपन कालेजक अनुभव आ कुसमय बियाह सँ नष्ट होइत जिनगी पर एकटा कथा लीखल। ई हमर पहिल रचना छल जकरा डायरी लिखबा सँ कने भिन्न कहि सकैत छलियैक आ प्रायः पाँच पेज मे लिखल छल। हम डराइते डराइते ई रचना प्रोफेसर सेन कें

देखाओल। हुनक प्रतिक्रिया अप्रत्याशित छलनि। ओ हमर पीठ ठोकैत कहलनि जे ई नीक रचना अछि आ एकरा प्रकाशित करबाक प्रयास करू।

एही बीच हमर माय बहुत अस्वस्थ भऽ गेलीह। तमोरिया सँ झंझारपुर आ दरभंगा तक बहुत इलाज करा चुकलहुँ मुदा किछु परिवर्तन नहि बुझाएल। कलकत्ता मे सब कहथि जे अहाँ हुनका एतहि लऽ अनियनु, नीक इलाज भऽ जेतनि। मुदा पत्नीक बिना हुनका आनि कए इलाज कराएब सम्भव नहि छल। गाम जाए पत्नी कें बहुत बुझाओल जे कलकत्ता चलू मायक संग। हुनका ईहो तर्क देल जे एखन अहाँ सासुक सेवा करए जा रहल छी, यदि नहि नीक लागत कलकत्ता तँ माय कें स्वस्थ भेला पर फेर चल आएब गाम। बहुत बुझएला पर ओ कहुना मानि गेलीह। तकर बाद बाबूजी सँ विचार कएल। स्थिति कें देखैत ओहो स्वीकृति दऽ देलनि। समस्या आएल जे गाम मे एकसरे रहला पर हुनकर व्यवस्था कोना होएत ? हमरा सन शहरू लोक तँ अपनहि सँ किछु झरकाएब फरकाएब सीखि लैते छल आ अनोन विसनोन जे होइक रान्हि कए प्राण रक्षा कऽ लैत छल। मुदा गाम मे तँ बाबूजी कहियो सेहन्तो रूपें भनसाघरक मुह नहि देखलनि, किछु रान्हबाक तँ कथे कोन। एक दू दिनक बात नहि छलैक जे पित्ती पितिआइनक आश्रम मे काज चलि जइतैक। अनुज सब जे दिल्ली धेलनि से गाम बिसरिये जाइत गेलाह। बहुत घमर्थन केलाक बाद इएह निर्णय लेल गेल जे बाबूजी सेहो कलकत्ता चलथि। खेत पथार पहिनहि सँ बटाइ लागल छल। माल जाल रहिए नहि गेल छल। तें घर मे ताला लगाएब कोनो एतेक कठिनाह काज नहि छल। भगवती सँ इएह प्रार्थना करैत हम सब गाम छोड़लहुँ जे जल्दीए माय स्वस्थ भऽ जाथि आ सब गोटे गाम घूरि जाथि।

कलकत्ता मे बोकाइ अपन एकटा कोठरी खाली करा देलनि। तत्काल काज चलाबए जोगर भऽ गेल। लागि गेलहुँ डाक्टर लग दौड़ बड़हा करए।

विसुनजीक फेर प्रोमोसन भेलनि। आब ओ भऽ गेलाह एसिस्टेंट कमिश्नर। एकर बाद ओ डेरा बदलि लेलनि आ चल गेलाह इनकम टैक्स ऑफिसर्स क्वार्टर। बेटी इन्दिरा एखन स्कूलहि मे छलखिन। एतए सँ स्कूल मात्र किछु मिनटक रस्ता। एबा जेबा मे आर समय बचए लगलनि

तँ कथक के प्रैक्टिस मे बेसी समय देबए लगलखिन। गीत संगीतक तुलना मे हुनका नृत्य बेसी नीक लगैत छलनि। नीके जोड़ी बूझू - माय गबैया बेटी नचनियाँ। श्रीमती प्राची कंठ संगीत कार्यक्रम मे बहुत व्यस्त रहए लगलीह। घर सम्हारबाक लेल एकटा फुलटाइम नोकर आबि गेल छलनि।

इन्दिराक पढ़ाइ चलैत रहलनि। माता पिता कें स्कूल सँ यदि कोनो बहुत बधाइक पत्र नहि भेटैत छलनि तँ शिकाइतियो नहि अबैत छलनि। एकटा नीक अनुशासित बच्चा जकाँ इन्दिराक अध्ययन चलि रहल छलनि। ओ करीब सत्तरि प्रतिशत अंक सँ विज्ञान लऽ कए हायर सेकन्डरी पास केलनि।

अगिला अध्ययनक दिशा पर फेर एक बेर बहस भेल। इंजिनियरिंग आ मेडिकल कें लक्ष्य सँ हटा देल गेल। मायक इच्छा छलनि बेटी कें नीक विदुषी बनाएब। ई अति उत्तम विचार छलैक कारण समाज टेक्निकल लाइनक पाछू आँखि मूनि कए भागल जा रहल छल। लड़का रहओ वा लड़की, सब इंजिनियरिंग आ एम.बी.ए. करबाक लेल आतुर रहैत छल आ ताहि लेल अभिभावक लोकनि सेहो अपन बच्चा सब कें धरतीक कोनो कोन मे पठबऽ लेल तैयार रहैत छलखिन। केरल के कोनो एकटा गामक खोभारी मे चलैत मैनेजमेंट कालेज मंजूर मुदा साहित्य आ कला पढ़बा लेल पटना जाएब मंजूर नहि। लोक शिक्षाक अर्थ बिसरि रहल छल। कोनो तरहें किछु प्रशिक्षण पाबि नीक नोकरी हथियाबी - शिक्षाक उद्देश्य मात्र एतबे रहि गेल छलैक। विद्यार्थी सब कतेक कष्ट सँ इंजिनियरिंग पढैत छल आ तकर बाद फेर एम.बी.ए. कऽ कए बनैत छल मार्केटिंग एक्जेक्यूटिव आ बेचैत छल तेल साबुन। इंजिनियरिंग पढ़ि इंजीनियरक काज करब हेय भऽ गेल छलैक। बूझू ईहो कोनो शिक्षा भेलैक ?

एहि निर्णय पर हमरा अपना बहुत खुसी भेल जे इन्दिरा शिक्षाक उचित अर्थ बूझि पओतीह। हम विसुनजी कें आ श्रीमती प्राची कंठ कें बहुत बधाइ देलिएनि एहि निर्णय पर। कतेक विकल्प कें कटैत छँटैत अन्त मे यादवपुर विश्वविद्यालयक कम्पेरेटिव लिटरेचर डिपार्टमेन्ट मे इन्दिरा नाम लिखौलनि। ताबत कथक नृत्य मे सेहो निपुणता प्राप्त कऽ लेने छलीह आ छोट मोट एकल प्रोग्राम सेहो करए लागल छलीह।

कल्पनाक बियाहक बाद किसुनजी निर्णय लेलनि जे अफसर बनताह आ यदि कतहु ट्रान्सफर भइयो जानि तँ चल जेताह। एतेक दिन मे इन्स्योरेन्सक बिजनेस मे सम्पर्क बढ़ियाँ भऽ गेल छलनि तें आब आमदनी मे बेसी कमीक डर नहि छलनि। हँ एतेक जरूर कोशिश रहतनि जे कलकत्ताक भीतरे वा आसेपास मे रहथि। ई सब सोचि ऑफिस मे प्रोमोसन नहि लेबाक अपन पहिलुक ऑप्सन आपस लऽ लेलनि।

एकटा आर परिवर्तन भेलैक। आब ओ बेटी सबकें ग्रेजुएसन करेलाक बादे बियाह करेबाक निर्णय लेलनि। आ सबसँ छोट कंकना कें, जे पढ़बा मे सबसँ तेज छलखिन, नाम लिखा देलखिन स्कॉटिस चर्च कालेजिएट स्कूल मे। कोकिला तँ जयपुरिया कालेज पहुँचि गेल छलीह। हिनका हिस्सा मे एलनि मनोविज्ञान ऑनर्स। पाछुए लागल गेलखिन कंजना इकोनोमिक्स ऑनर्स लऽ कए।

संयोग एहन देखू जे कोकिला कें वर भेटि गेलनि कलकत्ते मे। ताबत ओ बी.ए. पास कऽ गेल छलीह आ बी.एड.क जोगाड़ मे लागल छलीह। वर भेलखिन जियोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया अर्थात जी.एस.आइ. मे अफसर। पटना सँ जियोलोजी मे एम.एससी. केने छलाह। हिनका डेरा भेटि गेल छलनि साल्टलेक मे सेन्ट्रल गवर्नमेंट क्वार्टर मे। नीक परिवार। पिता लहेरियासराय मे कलेक्टेरियट मे किरानी छलखिन।

एहि बीच गामहु मे बहुत परिवर्तन भऽ गेल छलैक। पितामहक मृत्युक बाद एकाएक सबटा बँटबारा शुरू भऽ गेल छलनि। बड़का दलान टूटि गेल छलैक। आब ओ ठाठ रहि नहि गेल छलैक। साबिकक आङन मे हिनक एकटा पित्ती रहि गेलखिन आ हिनक पिता कें नवका डीह भेटलनि जाहि पर ढंग के घरो नहि छलैक। कलकत्ता मे किछु पुरान भेला सँ परिचितक सर्किट बढ़ैत गेल छलनि। सब किछु देखि सुनि किसुनजी निर्णय लेलनि जे एहि बेर विवाह कार्य कलकत्ते मे सम्पन्न होअए। वर पक्ष कने विरोध केलखिन मुदा बरियातीक लेल ट्रेन टिकटक व्यवस्थाक आश्वासन पर मानि गेलखिन।

भाड़ाक घर लऽ कए विवाह यज्ञ सम्पन्न भेल। पाँचमे दिन बेटी सासुर गेलखिन। आ दुइए मासक भीतर किसुनजी कें प्रोमोसन आ ट्रान्सफर सेहो भऽ गेलनि। खुसी भेलनि जे अफसर

भऽ गेलाह। पहिल बेर हुनका कलकत्ता सँ बाहर जाए पड़लनि। हुनक पोस्टिंग भेलनि रानीगंज ब्राँच मे। आब मात्र शनि कें संध्या आबथि आ सोम कें भोरे चल जाथि।

कैलासक जेठ बेटा लगन कें एम.बी.ए. केलाक बाद दिल्ली मे एकटा नीक कम्पनी मे मार्केटिंग एक्जेक्यूटिव के नोकरी भऽ गेलैक। आब ओ दिल्लीवासी भऽ गेल।

छोटका मगन कें शुरुएहिं सँ किछु चक्कर छलैक जे हमरा सब बूझि नहि रहल छलियैक। असल मे स्कूलहिं सँ ओ रूपा सँ सिनेह करए लागल छल। रूपा सिकदारक पिता सेहो केन्द्रीय सरकारक सेवा मे रहथि। मगन रूपाक संगहि जयपुरिया कालेज मे नाम लिखौलक - अपने कामर्स ऑनर्स मे आ रूपा पोलिटिकल साइंस ऑनर्स मे। इएह कारण छलैक ओ गोएनका कालेज नहि गेल। जखन ओ गेल आइ.आइ.एस.डब्ल्यू.बी.एम. मे एम.बी.ए. करए तँ रूपा गेलीह बगले मे यूनिवर्सिटी मे एम.ए. करए। ई चक्कर सात आठ साल चललैक। एम.बी.ए. केला पर मगन बिरला सीमेंट मे नोकरी धेलक आ रूपा धेलनि टालीगंजक एकटा स्कूल मे मास्टरी। तें मगन कें कलकत्ता छोड़बाक कनियो इच्छा नहि छलैक।

परिवार मे दूनू बेटाक बियाह करेबाक चर्चा शुरू भऽ गेल छलैक। जेठका पहिनहि सँ टालमटोर करैत छलैक। इंटरनेट पर विज्ञापन देबा लेल राजी नहिए भेल छलैक। तैयो गाम घरक परिचित कलकतिया लोक सब डेरा पर जाए आबए लगलैक। ई सब देखि मगन अगुआ भऽ कए एक दिन माय बाप सँ निवेदन केलक "हमरा बहुत दिन सँ एकटा बंगाली लड़की सँ प्रेम अछि। ओ हमरा संग लाबोनीक के.वी. मे पढ़ैत छल। हम दूनू जयपुरिया कालेज मे सेहो संगहि पढ़लहुँ। ओकर पिता सेहो केन्द्र सरकारक कर्मचारी छथिन। आब हमहूँ नोकरी करैत छी आ ओहो नोकरी करैत अछि। आब हम दूनू बियाह करए चाहैत छी। अहाँ सबहक आशीर्वाद चाही।" ओकरा बुझा गेल छलैक जे आब देरी केला सँ काज मे भाङठ भऽ सकैत छलैक। आब उमेर से भऽ गेल छलैक आ लड़कीक परिवारक दिश सँ बियाह कऽ लेबाक लेल दबाब से बढ़ल जाइत छलैक।

ई प्रस्ताव सूनि कैलास तँ गुम्मे रहि गेल। ओकर पत्नी कने बेसी आवेश मे आबि गेलैक आ बेटा पर बहुत किछु बाजए लागलि। हुनक कहब जे पहिने तरीका सँ जेठक बियाह करेबैक

तखन छोटक बियाह हेतैक। आ कनियाँ हम सब अपनहि ताकब। परेम तरेमक नाटक छोड़ए मगन। हमर बेटा बंगाली सँ बियाह नहि करत।

परिवार मे स्थिति किछु असामान्य भऽ गेलैक। मगन कें माय बाप सँ टोकाचाली बन्द। दू एक दिन मे एकर भनक हमरो लागि गेल। हमर विचार एहि सब स्थिति मे कने उदारवादी रहल अछि। अहाँ कहब जे अपना नहि पड़ल तें उदार बनैत छी मुदा से गप नहि। जमानाक बदलैत क्रम कें कियो गोटे रोकि नहि सकैत छथिन आ आँखि मूनि एकरा झूठ मानि लेब सेहो बुधियारी नहिए भेल। पछबा बसात बहि रहलैक अछि। आब कलकत्ताक के कहए, मिथिलाक छोट कस्बा सब मे लोक जीन्स पहिरैत अछि। आब नाबालिगक बियाह तँ होइत नहि छैक जे माय बापक बात हमेशा चलतैक। जखन लड़का लड़की दूनू बालिग छैक तँ ओकरा अपना निर्णय सँ रोकबाक हमरा सब कें ने कोनो कानूनी अधिकार बनैत अछि आ ने सामाजिक कर्तव्ये। ओना बाप माय कें हरदम लगतनि जे हुनकर 'बच्चा' बच्चे छथिन, भले ओ 'बच्चा' अपनहि किएक ने दू चारि बच्चाक बाप माय बनि गेल होथि। बाइस तेइस सालक नवयुवक आइ.ए.एस. कऽ कए एकटा सवडिबीजनक कानून व्यवस्था सम्हारि सकैत अछि तँ अपन भविष्य कें किएक नहि सम्हारि पाओत ? हम अहाँ जे एतेक कष्ट कऽ कए एकटा कनियाँ आकि वर ताकि आनब सेहो तँ ओकरे सबहक खुसीक लेल ने। यदि से खुसी ओ अपनहि ताकि लेने अछि तँ आर नीके बात ने।

हम एही तर्क लऽ कए कैलास कें बुझेबाक चेष्टा केलियैक। ओकरा अपन ऑफिस मे तँ कतेको एहन घटना भऽ गेल छलैक। से बात तँ भीजल छलैक। तखन मिथिलाक लोक कने हठधर्मी तँ होइते अछि। शिक्षाक प्रवेश देरी सँ भेला सँ रूढ़िगत विचार सेहो लोक कें पकड़ने छैके। पारम्परिक परिवार मे प्रेम विवाह कें सहजहिं स्वीकृति भेटब कठिन छलैक। कैलासक पत्नीक पैघ समस्या छलनि गाम मे लोकक व्यंग्यवाण कोना सहतीह।

मुदा समस्या एतबे नहि छलैक। ककरो कहाँ अन्दाज छलैक जे जाहि रस्ता पर मगन चलल अछि ताही रस्ता पर लगन सेहो अग्रसर भऽ गेल अछि।

कैलासक घर मे जखन ई घमर्थन चलि रहल छलैक जे मगनक बियाहक प्रस्ताव कें कोन तरहें टारल जाए तखन कैलासक पत्नीक विचार भेलैक जे जेठका कें कलकत्ता बजा लेल जाए। अस्तु ओकरा खबरि पठाओल गेल।

लगन आएल तँ जरूर मुदा आगि मिझेबाक बदला एकटा दोसरे आगि लगा देलक। ओ छोटका भाइक समर्थन मे तँ बजबे कएल, संगहि ईहो सूचना देलकै जे ओकरो दिल्ली मे एकटा लड़की सँ प्रेम छैक। ओ लड़की ओकरे ऑफिस मे काज करैत छैक। हरियाणाक जाट थिकैक कुमारी पूनम सिंह। लगन दू टा फोटो सेहो लेने आएल छल: एकटा ओहि लड़की के आ दोसर ओकर घर के जाहि मे पूरा परिवार छलैक - बाप माय तीनटा भाइ आ पूनम के संग लगन सेहो। सुखितगर परिवार छैक बाप कें। गुड़गाँव के पासे मे करीब बीस एकड़ जमीन छलैक जे रियल इस्टेट कम्पनी कीन लेलकै। बाप आब कोनो काज नहि करैत छैक, तीनू भाइ बिजनेस करैत छैक। लड़की देखबा मे नीके छलैक साधारणतः पसिन्न होइबाली।

पूनम बहुत कठिने अपन परिवार कें एहि प्रेम विवाहक लेल राजी केलकए। हरियाणा मे जाट परिवार मे तँ प्रेमक नाम सुनिते लड़का लड़की दूनू कें मरबा दैत छैक। यदि परिवार राजी भैयो जाइक तँ पंचायत मना कऽ दैत छैक। मुदा पूनम भाइ सबहक अति दुलारि बहिन छलैक। तीनू भाइ मीलि कए कहुना बापो माय कें मना लेलक आ पैसाक बल पर पंचायत कें सेहो चुप करबा देलक।

लगनक कहबाक अर्थ जे बात बहुत आगू बढ़ि गेल छैक तें शीघ्रे उचित तरीका सँ बियाह कऽ लेल जाए। लगन दू दिनक बाद फेर दिल्ली घूरि गेल।

हमर पूरा परिवार जखन कलकत्ता आबि गेल तखन हमरा डेरा बदलए पड़ल। हम बोकाइक आभारी छिएनि जे बेर कुबेर अपन घर खाली करा कए हमरा मदति केलनि। मुख्य समस्या छलैक जे सुशील आब नाइन्थ मे पढ़ैत छलाह आ हुनका लेल हमर दूटा रूम बहुत भीड़भाड़बला बुझाइत छलनि। केस्टोपुर मे परिवर्तन होमए लागल छलैक आ एपार्टमेन्ट सब बनए लागल छलैक। हम लगे मे तीन रूमक एकटा फ्लैट भाड़ा पर लऽ लेलहुँ।

करीब एक मास तक माय कें विभिन्न प्रकारक जाँच चलैत रहलनि। तकर बाद डाक्टर कहलनि जे सीरोसिस के बिमारी सँ हुनका लीवर खराप भऽ गेल छनि। बिमारी बहुत आगू बढ़ि गेल छनि। आब जे किछु इलाज हेतनि से अस्पताल मे भर्ती भेले पर। संकेत किछु नीक नहि छल मुदा अपन हाथे की? एकटा दोसर डाक्टर सँ देखा कए विचार लेल। ओहो सएह कहलनि। हमरा बड़ आश्चर्य भेल जे ई बिमारी तँ ताड़ी दारू पिनिहार कें होइत छलैक से हमरा माय कें कोना भऽ गेलैक। डाक्टर साहेब अपना अनुभव सँ हमरा बुझेलनि जे ई बिमारी ओकरो होइत छैक जे उपास बहुत करैत छैक। आ उपास करबा मे गाम मे कोनो स्त्रीगण हमरा माय सँ टक्कर नहि लऽ सकैत छलखिन।

हारि कए मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल मे भर्ती करा देलियैक माय कें। ओतहि आब ओकर इलाज शुरू भेलैक। किछु दिनक बाद ओकरा छुट्टी दऽ देल गेलैक। हमरा सब खुसी भेलहुँ मुदा डाक्टर साहेब कहलनि जे प्रति मास हिनका तीन चारि दिनक लेल भर्ती होमए पड़तनि। यदि एक बरख तक बाँचि जेतीह तँ बूझब जे इलाज सफल भेल।

डेरा एलाक बाद माय आ बाबूजी दूनू गोटे गाम जेबाक जिद्द करए लगलाह। बहुत मुश्किल सँ हुनका सब कें बुझाकए राखल जे फेर तँ पचीस दिनक बाद अस्पताल जाइए पड़तैक। मुदा पन्द्रह दिन होइत ओकर हालत बहुत बिगड़ए लगलैक। खूनक उल्टी बन्दे नहि होइक। फेर अस्पताल मे भर्ती करा देलियैक। दिल्ली दूनू छोट भाइ के खबरि कए देलियैक। बहिन कें खबरि नहि कऽ सकलियैक कारण ओझा गाम मे छलथि नहि आ ओकरा कलकत्ता अनितैक के ? खून चढ़बए पड़लैक। तीन बोतल खूनक जोगाड़ हम कएल अपन आ मित्र सब लगा कए। मुदा सब बेकार गेल। ओ घूरि कए गाम नहिए जा सकल। आर दू दिनक बाद ओ हमरा सब कें छोड़ि चल गेल। बाबूजीक उपस्थिति मे नीमतल्ला मे ओकर दाह संस्कार कएल। अनुज सब कलकत्ता नहि आबि सकलथि से सीधे गाम पहुँचैत गेलाह।

मायक श्राद्धक बाद फेर हम दुइये बापूत कलकत्ता घुमलहुँ। पत्नी बाबूजीक सेवा लेल रूकि गेलीह आ तें सुशीला कें सेहो छोड़ि देलिएनि। हुनक पढ़ाइ गड़बड़ा रहल छलनि कारण आब सिक्स्थ मे चल गेल छलीह आ गामक स्कूलक हाल तँ बुझले छल। दिल्ली पार्टी कियो गाम

मे रहए लेल तैयार नहि। बाबूजी गाम छोड़ि कत्तहु जेबा लेल तैयार नहि भेलाह। हमेशा बाजथि जे जखने हम कलकत्ता अथवा दिल्ली जाएब तखने ओतहि मरि जाएब। आ हमरा गामक बाहर मरबाक नहि अछि। तें आब जे होउक हम रहब गामे मे।

कलकत्ता आबि हम फेर प्रयास केलहुँ जे एतेक बड़का फ्लैट छोड़ि बोकाइक घर मे चलि जाइ। हुनका पुछलिएनि तँ ओ एतबे कहलनि जे एक हप्ताक बाद जहिया इच्छा होअए चलि आउ। घर ओहिना अछि।

घर ठीके ओहिना छल मुदा बोकाइ एकटा गप हमरा नहि कहलनि। ओ एक गोटे कें भाड़ा दऽ देने छलखिन आ किछु एडवान्स सेहो लऽ लेने छलखिन। से व्यक्ति एक हप्ताक बाद अबितथि। हमरा सँ गप भेलाक बाद ओ दोसरे दिन हुनकर एडवान्स आपस पठा देलखिन आ घर हमरा लेल रिजर्व भऽ गेल। बोकाइ हमर एहन भक्त भऽ गेल छलाह से हम बहुत बाद मे बुझलियैक।

अस्तु, हमहूँ शीघ्रे बड़का डेरा खाली कऽ कए चल गेलहुँ पुरना अटारी मे। एकटा रूम आ कोनचरबला भानस रखलहुँ अपना कब्जा मे। पछिला दू तीन मास मे सब काज मे बहुत व्यवधान भेल छल से सबटा सरिआबए लगलहुँ। सुशील सेहो नियमित रूपें स्कूल जाए लगलाह।

लिखबाक कार्यक्रम कें रस्ता पर अनै मे बहुत समय लागि गेल। पहिल कथा एखन तक कतहु छपल नहि छल। कोनो उपाय सेहो नहि सुझा रहल छल कोन तरहें ककरा एप्रोच करी। फेर एहू लेल प्रोफेसर सेनक शरण मे जाए पड़ल। मुदा ओहो कोनो ठोस सलाह नहि दऽ सकलाह। हम लाइब्रेरी मे ताकि हेरि किछु पत्र पत्रिकाक नाम जमा कएल आ सबकें कथाक एक एक प्रति पठा देल एहि आशा मे जे यदि ककरो नीक लागि जाइक आ राखि लिअए।

दुइए हप्ता मे चेन्नइ सँ प्रकाशित ‘हिन्दू’ अखबारक लिटरेरी सप्लीमेंट सँ खबरि आबि गेल जे हुनका सम्पादक कें ई कथा नीक लगलनि आ एकरा एक मासक बाद फलाँ रवि दिन छापल

जाएत। हमर खुसीक हाल की पूछू ? पहिल बेर लागल जे जिनगी सार्थक हेबाक रस्ता पर आबि रहल अछि। हम तखने बाकी सब कें, जिनका कथा पठाओल छल, लिख देल जे एकरा नहि छापल जाए। तकर बाद खबरि केलहुँ विसुनजी कें जे हमर कथा 'हिन्दू' मे छपि रहल अछि। विसुनजी डेरा पर बजओलनि आ हमरा लाख मना करबाक अछैतो कने शैम्पेन चिखाइये देलनि। अतीव खुसीक वेग मे छोटमोट पाप भैए जाइत छैक। अगिला भेंट मे प्रोफेसर सेन कें सेहो ई खबरि सुनाओल। ओ पहिल बेर हमरा अपन डेरा पर लऽ गेलाह आ सन्देश खुओलनि। पहिल बेर लागल जे आब लोक हमरा शूद्र नहि बूझत।

कैलासक डेरा पर जाइ तँ ओतुका वातावरण एतेक भारी लागए जेना ककरो मृत्यु भऽ गेल होइक। कियो ककरो सँ बजैक नहि। हमरा बुझेला पर आ ऑफिस मे अनेको घटनाक साक्षी रहला सँ कैलास स्वीकृतिक दिस मोन बना लेने छल मुदा पत्नी मानै लेल एकदम तैयार नहि रहैक। प्रायः चारि पाँच मास एहन स्थिति रहलैक। दिल्ली सँ फोन आएब बन्द भऽ गेलैक। एक दिन फेर मगन साहस कऽ कए माय कें बुझेबाक कोशिश केलक। ओहि मे एकटा लोभ ईहो देखेलकै जे यदि तोहर इच्छा छौक तँ धीरे धीरे हम ओहि लड़की कें मैथिली सेहो सिखा देबैक आ तकर बाद गाम जाएब सब कियो संगहि। एकटा धमकी सेहो जोड़ि देलकै जे ओकरा आब एहन दमघोंटू वातावरण मे एहि डेरा मे रहब ठीक नहि लगैत छैक तें ओ डेरा अलग कऽ लेत।

एहि लोभक प्रभाव बूझू अथवा धमकीक प्रभाव अथवा दूनूक सम्मिलित प्रभाव, माय कने डोललैक। कैलास अपने तँ मोन बनाइए लेने छल। एक दिन फेर हमरा सँ विचार केलक। हम दूनू कें बुझेलिऐक जे बेसी जिद्द ठीक नहि होएत। बेटा सब बियाह तँ कइए लेत आ अहाँ सब कात भऽ जाएब। फेर जिनगी भरिक लेल ओ सब दूर भऽ जाएत। तै सँ नीक जे सब कें मिला कए काज करी।

अस्तु, देव इच्छा सब कें सद्बुद्धि एलनि। एके मासक भीतर हम सब गुड़गाँव बरियाती गेलहुँ आ सिकदार बाबूक ओतए सेहो। दू जोड़ वर कनियाँक रिसेप्सन एके संग भेलैक साल्टलेक मे। ईहो एकटा नव प्रयोग देखलहुँ।

कैलासक डेरा मगन कें प्राइवेसीक हेतु ठीक नहि बुझाइत छलैक। ओकरो अपन मित्र मंडली छलैक आ रूपा कें सेहो अपन संगी सब। एतेक तरहक लोकक आएब जाएब आ स्वागत सत्कार एहि डेरा मे सम्भवो नहि छलैक। तें सबहक सहमति सँ ओ टालीगंज मे अलग डेरा लऽ लेलक जाहि सँ रूपा कें स्कूल लऽग होइक आ अपने ओ मेट्रो सँ ऑफिस चल जाएत।

जखन हम कथा प्रकाशित हेबाक खुसी मे डूबल रही ताही समय गाम सँ खबरि आएल जे बाबूजी अस्वस्थ रहए लगलाहे। ऊपर सँ दुख बिमारी किछु नहि मुदा यदा कदा अनेरे रद्द भऽ जाइत छनि। कहियो बेचौनी भऽ जाइत छनि। एक दिन अनेरे चौकी पर सँ खसि पड़लाह। तमोरियाबला डाक्टर कहैत छनि माथक एक्सरे कराबए जे दरभंगे मे हेतैक। मुदा बाबूजी जाइ लेल तैयारे नहि छथि। हम सुशील कें छोड़ि गाम दौड़ि गेलहुँ। ओकर भोजनक व्यवस्था बोकाइ अपना घर मे कऽ देथिन।

गाम मे देखलहुँ बाबूजी बहुत लटि गेलाहए। हम पुछलिएनि तँ सोझ उत्तर ‘‘कहाँ किछु होइत अछि। खाली एक दिन मोन कने आउल बाउल भऽ गेल तें रद्द भऽ गेल छल। अनेरे अहाँ कें बजाओल गेल।’’ फेर किछु कालक बाद अपने मोने बरबराए लगलाह ‘‘जे भागमन्त छलीह से तँ पहिनहि भागि पड़एलीह। हम किएक एहि मृत्युभुवन मे कष्ट कटैत रहू ? हमहुँ चल जाएब ओतहि।’’ पत्नी कहलनि जे एहि तरहक बरबरेनाइ आब बेसी भऽ गेलनि अछि। हमरा लगैत अछि बाबूजी भीतर सँ टूटि गेल छथि। हम कतबो चेष्टा करैत छी ओ अपन जिद्द छोड़बा लेल तैयार नहि छथि। मरब आकि जीअब आब गाम छोड़ि कतहु नहि जाएब, दरभंगो नहि। लोक अथबल आकि बेहोस रहैत अछि तँ ओकरा पकड़ि धकड़ि डाक्टर लग आनल जा सकैछ मुदा बाबूजी ताहि स्थिति मे नहि छलाह। भय ईहो जे दरभंगा जाइए अबै मे किछु भऽ जाइनि तँ फेर जिनगी भरिक कचोट। हारि कए हम भगवानेक भरोसे हुनका छोड़ि देल आ कलकत्ता घूरि अएलहुँ।

गामक चिन्ता बनले रहैत छल। लिखबाक क्रम बहुत जोड़ नहि पकड़ि रहल छल। तथापि छोट छीन कएकटा कथा लीखल।

विसुनजीक बेटी इन्दिरा जाबत यादवपुर यूनिवर्सिटी सँ बी.ए. आनर्स आ एम.ए. कऽ लेलखिन ताबत हुनक अपन प्रोमोसन डिप्टी कमिश्नर मे भऽ गेल छलनि। फेर एक बेर परिवार मे बहस भेल जे आगू इन्दिरा की करथि। इन्दिराक अपन आ मायक इच्छा छलनि कतहु विदेश मे पीएच.डी. करए चल जाथि। विसुनजी एहि विचार मे कनियें संशोधन करए चाहैत छलखिन। हुनकर विचार छलनि जे पीएच.डी. करथु जरूर मुदा देशहि मे आ विवाह से कऽ लेथु। एहि बहस मे हमर आब कोनो रोल नहि छल। पीएच.डी. तँ बहुत दूरक गप, हम ग्रेजुएसन सँ आगू मास्टर तक सेहो नहि गेल छी।

बेटी इन्दिरा कें विवाहक विचार बहुत पुरातनपंथी लगलनि। ओ उदाहरण देबए लगलखिन कतेक सीनियर सबहक जे पीएच.डी. केलाक बादो नोकरी तँ करैत छलखिन मुदा विवाह नहि कएने छलखिन। ओ ईहो बता देलखिन जे हुनक हेड साहिबाक कहब छनि इन्दिरा ऑक्सफोर्ड मे पीएच.डी. करथि। ओतए लिटरेचरक अगाध विद्वान सभ छथिन। हेड साहिबा एहि मे मदति करबाक आश्वासन सेहो देलखिन अछि। ऑक्सफोर्डक अतिरिक्त अमेरिका मे बर्कले आ हार्वर्ड लेल सेहो कोशिश करए कहलखिन।

अगिला एक वर्ष एही सब मे बीतल। ताबत अपने विभाग मे नवयुगीन अंग्रेजी साहित्य सँ सम्बन्धित एकटा प्रोजेक्ट मे एसिस्टेंटक काज लऽ लेलनि। कथक के प्रोग्राम सेहो चलैत रहलनि। कलकत्ताक नृत्यकला क्षेत्र मे मिस इन्दिरा कंठक नाम सुपरिचित भऽ गेल छल।

वर्षक भीतरे हुनका ऑक्सफोर्ड आ बर्कले दूनू ठाम सँ एडमिसन ऑफर आबि गेलनि। दूनू एक पर एक नीक जगह। अन्तर एतबे जे बर्कले मे टीचिंग एसिस्टेंटक ऑफर सेहो छलनि मुदा ऑक्सफोर्ड मे से नहि। अर्थात ऑक्सफोर्ड मे खर्चा किछु बेसी। एकटा सन्तान छलनि। खर्चाक लेल विसुनजी पाछू किएक हटितथि ? अन्त मे शिक्षक सबहक विचार सँ ऑक्सफोर्ड चूनल गेल। इन्दिरा चल गेलीह ओतए पीएच.डी. करए। ओही साल विसुनजी डिप्टी कमिश्नर पद पर रहैत सरकारी सेवा सँ अवकाश लेलनि।

किसुनजी रानीगंज गेलाह आ हेदुआ मे रहि गेलखिन पत्नी आ दूटा बेटी कंजना आ कंकना। कंकना शुरुएहि सँ साइन्स रखलखिन। हायर सेकन्डरी मे बहुत नीक नम्बर अनलनि आ

ए.आइ.ट्रिपल-ई. मे सेहो नीक रैंक भेटलनि। एन.आइ.टी. दुर्गापुर मे कम्प्यूटर साइंस मे एडमीसन भऽ गेलनि। कंजना सेहो इकोनोमिक्स ऑनर्स मे नीक सेकण्ड क्लास सँ पास भेलीह। पिताश्री पहिनहि वर तकबा मे लागि गेल छलखिन मुदा एहि बेर हुनका बेटीक किछु विरोधक स्वर सूनए मे एलनि। बेटीक कहब छलनि जे ओ एम.ए. आर पीएच.डी. आदि करतीह, बियाहक एखन कोनो हड़बड़ी नहि।

किसुनजी तारतम्य मे पड़ि गेलाह। योजना छलनि जे बेटी सब कें भसिएलाक बाद एकटा फ्लैट कीनताह बैंक सँ लोन लऽ कए। नोकरीक अवधि सेहो आब बहुत बेसी नहि छलनि। कंजना कें बहुत बुझएबाक चेष्टा केलनि जे जेठ बहिन सब जकाँ बियाहक बादो ओ पढ़ाइ कऽ सकैत छलीह। मुदा से मानए लेल ओ तैयार नहि भेलखिन। आब ने बेटीक उमेर ओहन छलनि आ ने जमाना जे बलजोरी बियाह करा देल जइतैक। अन्त मे किसुनजी हारि मानि लेलनि आ कंजना कलकत्ता यूनिवर्सिटी मे एम.ए. मे नाम लिखौलनि। किसुनजी ताही समय श्रीभूमि मे एकटा फ्लैट बुक कऽ लेलनि। किछु तँ काज आगू ससरओ।

किसुनजी अपने रानीगंज मे, कंकना गेलखिन दुर्गापुर आ हेदुआ के ओहि एकटा कोठरी मे रहि गेलखिन कंजना अपन मायक संग। यूनिवर्सिटी मे कंजना केहन संगति मे पड़लीह से हम सब बूझि नहि सकलियैक मुदा ओ बेसी काल घर सँ गाएब रहए लगलीह। रातिओ मे बहुत देरी सँ आबथि। चेहरा पर किछु टेंसन रहनि। एकाध बेर माय आ बाबूजी पुछबो केलखिन मुदा ओ बात कें टारि देलखिन। एतबे कहथिन जे अहाँ सब अनेरे शक्की स्वभावक भऽ गेलहुँए। हमरा पढ़ाइक काज बेसी भड़िगर भऽ गेल अछि। कखनहुँ माय कें सुना कए बाजथि ‘‘सब अपन अपन पेट पोसए मे व्यस्त रहैत अछि। गरीब लोक आदिवासी लोक सबहक जिनगी कोना चलैत छैक तकर कियो कखनो सुधि लैत छैक ? सब ओकरा सबहक शोषण पर लागल रहैत छैक।’’ एकर अर्थ माय कें किछु नहि बूझऽ मे आबनि।

एहि बीच किसुनजीक दोसर ट्रान्सफर भए गेलनि जलपाइगुड़ी। कतबो कोशिश केलनि जे कलकत्ताक लग चल जाइ मुदा से नहि भऽ सकलनि। आब शनि रवि कें अबै जाइ मे बहुत असुविधा होमए लगलनि। कंजना आब रातिओ कें घर सँ बाहर रहए लगलखिन। भोर मे

यूनिवर्सिटी जाथि तँ माय कें कहि देथिन आइ हम नहि एबौक। माय बेचारे की करतीह। बेटी पाँज सँ बाहर भऽ गेल छलखिन। ओ चुपचाप सूनि लैत छलीह। छुट्टी छाटी मे कंकना दुर्गापुर सँ आबथि तँ कोनो बेर बहिन भेंट भऽ जाथिन आ कोनो बेर नहिओ।

एक दिन कंजना बिना किछु कहने चल गेलखिन आ एक हप्ता तक नहि एलखिन। किसुनजी बहुत परेशान भऽ गेलाह। डिपार्टमेंट मे खोज खबरि लेलखिन मुदा कियो किछु नहि बता सकलनि। फेर अपनहि घूरि एलखिन। बहुत खोधला पर कंजना एतबे कहलखिन जे किछु जरूरी काजें कलकत्ता सँ बाहर गेल रही।

आब लोक कंजनाक बाहर रहबाक अभ्यस्त भऽ गेल। तीन चारि दिन कलकत्ता सँ बाहर रहब सामान्य बात भऽ गेलैक। किसुनजी अपन ई परेशानी अन्त मे बैंकक सीनियर ऑफिसर कें सुनौलनि आ हुनका सँ कलकत्ता ट्रान्सफर करा देबाक अनुनय विनय केलनि। बहुत प्रयासें अन्त मे हुनका बारासात ब्राँच पठा देल गेल।

आब जखन बाबूजी डेरा मे रहए लगलखिन तँ कंजना बेसी साकांक्ष रहए लगलीह। अपन किताब कापी आदि बहुत सम्हारि कए पेटी मे बन्द कऽ कए राखथि। एक दिन जखन किसुनजी बैंक चल गेलाह तँ कंजना अपन किछु जरूरी कपड़ा लत्ता आ किताब आदि लऽ कए घर छोड़ि देलखिन। माय कें एतबे कहलखिन जे हमरा फिरबा मे समय लगतौक, कतेक से एखन कहि नहि सकैत छियौक। माय बेचारी अश्रुपूरित आँखिएँ मात्र देखैत रहि गेलखिन। किसुनजी जखन बैंक सँ घुरलाह तँ कंजनाक चल जेबाक समाचार सुनलनि। मुदा करताह की से किछु नहि बूझल छलनि। बहुत कोशिश केलाक बादो किछु पता नहि चललनि जे कंजना की करैत छलीह आ कतए गेल होएतीह। हमरा सब सेहो कोनो सूत्र नहि बता पबैत छलिएनि। ओ परिवार बहुत शोकाकुल रहए लागल।

हमर जिनगी बाढ़ि मे भसिआइत नाओ जकाँ कखनहु डूबऽ लागए तँ कखनहु उगि कए ठाढ़ भऽ जाए। एहि बीच केस्टोपुर मे बिल्डर सबहक बाढ़ि आबि गेल छलैक आ लगैक जेना एको इंच जमीन खाली नहि बचतैक। महिसबथान पंचायतक कर्ताधर्ता लोकनि सेहो खुसी छलाह

कारण एतेक बिल्डरक बाढ़ि सँ हुनको लोकनिक पाकिट भरिये रहल छलनि। जे कोनो नक्सा पास करा लिअऽ। तीन तल्लाक नक्सा पर पाँच तल्ला मकान ठाढ़ कऽ दियौक।

एही बाढ़ि मे एकटा एजेंट हमरा लग एलाह जमीनक बिक्रीक गप करए। हम हुनका कहलिएनि जे हम ओना नहि बेचब, बिल्डर सँ बात करब कारण हमरा अपनहुँ फ्लैट चाही। तीन चारि टा बिल्डर सँ हम गप कएल। अन्त मे एक गोटे हमरा जमीन पर पाँचतल्ला मकानक नक्सा पास करेबाक गप केलनि जाहि मे नीचा रस्ता पर दूनू कात तीन तीन टा दोकान। बीच मे पाछू पार्किंग मे जेबाक रस्ता आ उपर आठ टा फ्लैट रहतैक। हमरा ओ दूटा फ्लैट आ एकटा दोकान हिस्सा मे देलनि। ई हमरा लेल नीक डील बुझाएल। दुतल्लाबला दूनू फ्लैट हम लऽ लेलहुँ। कैलास कें उपरका एकटा फ्लैट किना देलियैक। ई तीनू फ्लैटक भीतरी काज हम अपने देखरेख मे करौलहुँ। ठीकेदार बिहारेक छल। जेना जे परिवर्तन करए कहलियैक सबटा कऽ देलक। नक्साक हिसाब सँ बेसी बढ़ियाँ भऽ गेल तीनू फ्लैट।

बाबूजी करीब एक साल ओहिना झूलैत रहलाह। कखनहु रद्द तँ कखनहु गैसक दर्द आ फेर कखनहुँ बेहोसी। हुनका लेल कोनो नीक दवाइ तँ छलनि नहि कारण रोगक पता चललैक नहि। पुतोहु सँ जे सेवा होनि से ओ बेचारी तन मन सँ करबे करथिन। अन्त मे एक दिन जे चौकी पर सँ खसलाह से फेर नहिए उठलाह। क्षणे मे प्राणान्त भऽ गेलनि। मृत्युभुवन छोड़ि देलनि ओ। सएह तँ हुनकर इच्छा छलनि। हम दाह संस्कार लेल नहि पहुँचि सकलियैक। हमर एकटा पितियौत जे गाम मे रहैत छलाह सएह दाह संस्कार केलखिन। हम तेसर दिन पहुँचल रही श्राद्धक तैयारी कऽ कए।

बेटीक एहि तरहें गुम भऽ गेला सँ हेदुआ मे किसुनजीक स्थिति बहुत असहज भऽ गेलनि। ओ कोठरी आब काटए लगलनि। पत्नी सेहो कहथिन जे अड़ोस पड़ोसक लोक अनेक तरहक बात बजैत अछि। सबसँ झगड़ा तँ नहि कऽ सकैत छिऐक। तें परिवेश बदलि लेब आवश्यक भऽ गेलनि। श्रीभूमिबला फ्लैट तैयार छलनिए आ बारासात जेबा लेल ओतहि सँ बसक नीक सुविधा। ओहुना आब हेदुआक कोनो काजे नहि रहि गेल छलनि। अन्त मे निर्णय भेल जे श्रीभूमि चल जाइ।

समय पर कंकना दुर्गापुर सँ पास केलनि आ चल गेलीह हैदराबाद। कैम्पस सँ हुनक सेलेक्सन भऽ गेल छलनि सत्यम कम्प्यूटर कम्पनी मे। कंजनाक बारे मे अखबार सँ पता लगलनि जे ओ कोनो नक्सली गैंग मे चल गेलीह आ उड़ीसा झारखंड आदि के जंगल मे कतहु काज करैत छथिन। हुनका सँ सम्पर्क करबाक कोनो साधन नहि।

किसुनजी बारासात ब्राँच मे रहैत सेवा सँ अवकाश लेलनि। कंकना बियाह नहि केलखिन अछि। की मोन मे छनि से बजैत नहि छथिन। आब जमाना बहुत बदलि गेल छलैक। एमहर ओमहर दौड़ि धूपि कए वर तकबाक जमाना नहि रहलैक। वर होउ कि कनियाँ, लोक इंटरनेटैक माध्यम सँ ताकब नीक बुझैत छैक। मुदा कंकना इंटरनेट पर विज्ञापन देबा लेल अनुमति दैए नहि रहल छथिन।

अवकाश प्राप्त भेलाक बाद किसुनजी प्रायः गुमसुम रहैत छथि। भोर कें टहलै लेल जरूर नियमित रूपें आबि जाइत छथि आ हमरा सब कहुना हुनका प्रसन्न रखबाक प्रयास मे रहैत छी।

बाबूजीक श्राद्धक बाद पहिल बेर हम सपरिवार कलकत्ता एलहुँ। गाम छोड़बा सँ पहिने अनुज सबहक अनुरोध पर जमीन जाल डीह डाबर सबटा बाँटि लेलहुँ। पुरना घर मे एक कोठरी हमर हिस्सा देल गेल दू बरखक लेल जाबत हम अलग डीह पर अपन घर नहि बना ली। अपन बक्सा पेटी सब ओही कोठरी मे बन्द कऽ देल। पत्नी कें बहुत खराप लगलनि जे एतेक जल्दी बाँट बखरा भऽ गेल। कालि तक ओ पूरा घरक मालकिन छलीह आ आइ दिल्लीबला सब धकिया कए हुनका एकटा कोठरी मे ढुका देलकनि। मुदा हम एकरा नीके बूझल जे झंझट खतम भऽ गेल।

एक हप्ताक लेल बोकाइक घर मे रहलहुँ। तकर बाद एकटा साधारण पूजा कराकए नवका फ्लैट मे चल गेलहुँ।

सुशीला नौवीं मे छलीह जखन मायक संग कलकत्ता एलीह। हुनका कहुना कलकटा पब्लिक स्कूलक हिन्दी मीडियम मे नाम लिखाओल। ओ पढ़बा मे बेस पछुआ गेल छलीह। सेकन्डरी

मे कहुना पास केलनि। फेर हुनका हिन्दी मीडियम मे आर्ट्स सँ आगू बढ़ौलहुँ। आर कोनो उपाय नहि छल। हायर सेकन्डरीक बाद हुनका फूलबगान के गुरुदास कालेज मे नाम लिखा देल आ लागि गेलहुँ घटकैती मे।

सुशील हायर सेकन्डरी नीक नम्बर सँ पास केलनि। हुनका बायोलोजी सँ विशेष लगाव भऽ गेल छलनि। ओ सेंट जेवियर्स कालेज मे बोटनी ऑनर्स लेलनि। एही बीच घर मे एकटा कम्प्यूटर सेहो आबि गेल आ इंटरनेटक लाइन सेहो। सुशीलक पढ़ाइक लेल आब ई आवश्यक भऽ गेल छलनि। किछु उद्यम सँ लागल लागल हमहूँ कम्प्यूटर एतेक तक सीख लेल जे आब लेखन कार्य मे मदति भेटए।

सुशील बी.एससी. ऑनर्स नीक जकाँ उत्तीर्ण भेलाह। फेर बालीगंज साइंस कालेज सँ एम.एससी. केलनि। एतए फर्स्ट क्लास सेकेण्ड भेलाह। हुनकर ध्यान चल गेल छलनि रिसर्च दिस। कालेजक शिक्षक लोकनि सेहो एहि मार्ग लेल प्रोत्साहित केलखिन। तकर बाद तैयारी करए लगलाह अमेरिका जेबाक पीएच.डी. करबाक हेतु। एक बरखक प्रयासें फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी मे एडमिसन भऽ गेलनि। अपनहि सँ बैंक लोनक व्यवस्था केलनि। हमरा किछुओ ने मेहनति आने खर्च। पीएच.डी. भऽ गेलनि अछि। आब टेक्सास यूनिवर्सिटी मे नोकरी कऽ रहल छथि।

घटकैतीक अनुभव अनका मुहें सुनैत रही। आब भोगि रहल छलहुँ। हम अपन स्थिति देखैत आ सुशीलाक प्रगति कें देखैत कोनो ऊँच कोटिक वरक आश मे नहि छलहुँ। घरो हम साधारणे तकैत रही। तखन बेटी तँ एकेटा छल। पत्नीक इच्छा छलनि आर नहि किछु तँ वर नीक होइतैक, घरक आब कोन मोल छैक। गाम मे रहबे के करैत छैक। इंजीनियर डाक्टर तँ नहिए आ सरकारी नोकरीबला सेहो नहि कारण हिनका सबहक मुह बड़ पैघ। ओतेक टाका हमरा छल नहि।

बहुत चक्कर कटलाक बाद हमरा भेटलाह एकटा वर जे मेकेनिकल इंजिनियरिंग मे डिप्लोमा छलाह आ गुड़गाँव मे मारुति फैक्ट्री मे सुपरवाइजर छलाह। पिता गामहि मे प्राइमरी स्कूलमे शिक्षक छलखिन। वरगुण पता लगबै मे दिल्लीवासी अनुज सब सहयोग केलनि। एहू कथा मे

टाका लगबे कएल। हम दोकान बेचि लेलहुँ। विवाह कलकत्ते मे भेलैक। आब गाम मे रहिये के गेल छल?

जमाय हँसमुख आ व्यवहार बड़ नीक। पत्नी प्रसन्न छलीह। हुनका एही बातक खुसी छलनि जे आर जे किछु होउक ‘वर की होएताह’ तकर कोनो डर नहि छलनि। कम सँ कम सुपरवाइजर तँ छलाह ने। अपन अनुभव बहुत कटु छलनि ने। सुशीला जखन गुड़गाँव गेलीह तखन ओ बी.ए. पास कऽ गेल रहथि। सुखी परिवार छलनि। एके वर्ष मे नाति जन्म लेलनि आ हम सब नाना नानी बनि गेलहुँ।

एक बरखक भीतरे कैलास दू बेर दादा बनि गेल। पहिने दिल्ली गेल एकटा पोता कें देखैक लेल। ओतए सँ घूरल तँ मगन समाद देलकै पोती कें देखबा लेल आबि जाऊ। बर खुसी भेल ओ सब।

मुदा ई खुसी कनिए दिन रहलैक। जेना जेना समय बीतैत गेलैक दूनू बेटा अपना अपना मे एतेक ने व्यस्त रहए लागल जे माय बापक खोजो बन्द भऽ गेलैक। कलकत्ता मे रहितो मगन कहियो केस्टोपुरक डेरा नहि एलैक। कैलासक बंगाली पुतोहु बर चंठ भऽ गेलैक। मैथिली की सीखत ओ उनटे बेटी के सुच्चा बँगला माध्यम सँ पढ़बए लागल। मगन किछु नहि बाजल।

दिल्ली तँ ओहुना दूर छैक। किएक कियो फोनो करतैक। इएह सब कहियो कए हाल चाल पूछि लैत छैक। पहिने इच्छा होइत छलैक साल मे कम सँ कम एक बेर दिल्ली जाइ, किछु दिन ओतए रही, बच्चा संग खेलाइ। मुदा पछिला बेर पुतोहुक व्यवहार बहुत खराप भेलैक। खिन्न मोने घूरि गेल छल ओ दूनू आ फेर दिल्ली नहि जेबाक नियार कऽ लेलक।

सुशील अमेरिका आ सुशीला सासुर। हम दू गोटे कलकत्ता मे। आब हमर लेखनी नीक जकाँ ससरए लागल। एकटा कथा संग्रह तैयार भऽ गेल तकर बाद प्रवासी मैथिलक जन जीवन पर एकटा उपन्यास लिखल जे करीब चारि सौ पेज मे अछि। अंग्रेजीक लेल तँ नीक प्रकाशक चाही। मैथिली तँ छिऐक नहि जे अपने प्रकाशित करू आ संगी साथी मे बाँटि

दियौक। कथा संग्रहक करीब आधा कतहु कतहु छपल अछि। एकटा कथा स्टेट्समैनक रविवारीय परिशिष्ट मे सेहो छपल। एकरा सबहक आधार बनाकए दूनू पांडुलिपि रूपा एन्ड कम्पनी कें पठा देलियैक। प्रोफेसर सेन आब नहि छथि। रूपा लिखलक जे उपन्यास कें रिभ्यूक लेल पठा देल। ई नीक संकेत कारण तुरत्ते रिजेक्ट तँ नहि केलक। दोसर उपन्यास सेहो लगिचा गेल छल। गाम घर बाढ़ि पानि मे बूनल एकर कथा एकटा अनाथ लड़की के छियैक जे जिनगीक प्रत्येक क्षण मे लड़ैत रहबाक लूरि सीखि लेलक अछि आ एखन गामक सरपंच भऽ गेल अछि।

आब लागि रहल छल जे भोलाबाबा हमर दुख हरि लेलनि। तखने एकटा वज्रपात भेल। जमाय कें नोकरी छूटि गेलनि। एकटा हड़ताल मे हिनकर नाम किओ दुश्मनी सँ दऽ देलकनि आ पाँच गोटेक संग हिनको हटा देल गेल। यूनियन केस लड़बो केलकैक मुदा ई अपनहि आगू नहि बढ़लखिन। हमरा सब कें बुझना गेल जे मानसिक संतुलन कने ठीक नहि रहलनि। तकर बाद गुड़गाँव मे परिवार राखब कठिन भऽ गेलैक। अपना मे कलह से बढ़ि गेलनि। मास्टर साहेब पुतोहु पर अंट शंट दोषारोपण करए लगलखिन। अन्त मे हम गुड़गाँव जाकए सब कें बुझा सुझा कए कलकत्ता लऽ अनलिएनि। अपन दोसर फ्लैट, जे भाड़ा पर छल, तकरा खाली करा कए हुनका सब कें रखबौलहुँ आ एकटा मनोचिकित्सक सँ जमाय कें देखौनाइ शुरू कएल।

किछु सुधार भेलनि अछि मुदा एखनहुँ कतहु नोकरी करबाक स्थिति मे नहि छथि। दूनू परिवारक खर्च वहन करैत छी। नाति आब स्कूल जाएबला भऽ गेलाह। हुनका एजूकेयर मे नाम लिखाओल। कतेक दिन एना चलत से नहि जानि।

एखन तक विसुनजीक गाड़ी नीक गतिएँ दौड़ैत रहल छलनि। हमरा सबहक बीच सबसँ भाग्यशाली ओएह छलाह। नीक पद पौलनि। नीक परिवार भेलनि। सन्तान सेहो परिवारक नाम जगमगा देलखिन। पत्नी कलकत्ता शहर मे संगीतक क्षेत्र मे नीक ख्याति पाबि गेलखिन। नीक इलाका मे घर सेहो भऽ गेलनि। एहि सँ बेसी आर की चाही?

मुदा कतहु ककरो नजरि लागि गेल छलनि। ईश्वर कें खुसी देखल नहि जाइ छनि। रिटायर भेलाक बाद ओ दूनू गोटे गेलाह विदेश भ्रमण पर। एक मास मे यूरोप आ अमेरिका देखि अएलाह। तकर किछुए दिनक बाद श्रीमती प्राची कंठ पेट आ पांजर मे दर्दक शिकाइति केलखिन। डाक्टरी जाँच शुरू भेल। एक सँ दोसर, दोसर सँ तेसर टेस्ट चलैत रहल। अन्त मे पता चलल जे बड़का बिमारी छनि। सेहो एडवान्स्ड स्टेज मे। हँसैत खेलाइत घर मे विपत्तिक पहाड़ आबि गेल।

डाक्टरक सलाह पर ओ सब गेलाह मुम्बइ टाटा अस्पताल मे। एकटा ऑपरेसन भेलनि आ केमोथेरैपी चालू करा देल गेलनि। घूरि एलाह ओ सब कलकत्ता कारण केमो एतहु चालू राखल जा सकैत छलैक। सबटा केश उड़ि गेलनि मिसेज कंठ कें। केमोक खोराक पूर भेला पर किछु दिनक लेल लगलैक जे आब स्वस्थ भऽ गेलीह। हँसी खुसी सब घूरि अएलनि। कंठक स्वर मधुर तँ एखनहुँ छलनि मुदा आब ओ आत्मबल कतए जे गीत गओतीह? मुश्किल सँ भजन गाबि पबैत छलीह। मुदा ई तँ एहि बिमारीक चक्र थिकैक। दू तीन मासक बाद फेर हुनकर हालत खराप होअए लगलनि। ऑपरेशन आब करबाक नहि छलैक। एक बेर फेर केमो चालू कराएल गेल। एहि बेर ओ दवाइक कोर्स पूरा नहिए कऽ सकलीह आ विसुनजी कें एकसर छोड़ि चल गेलीह। अन्तिम समय मे मुह देखै लेल बेटी इंगलैंड सँ नहि आबि सकलखिन।

कहबी छैक जे नङटे नहएतीह से गारतीह की ? सएह परि हमर। ने हम नोकरी केलहुँ ने रिटायर हेबाक कोनो काज। मुदा तकर फल ईहो जे ने हमरा पी.एफ. आ ग्रैच्यूटी भेटल आ ने मासे मास पेंसन भेटैत अछि। हमरा एखनहुँ ट्यूशन पर जाइए पड़ैत अछि। बस मे आब चढ़ि नहि पबैत छी। जतेक बस बढ़ैत छैक तै सँ बेसी लोक बढ़ि जाइत छैक। तें आब मात्र साल्टलेक टा जाइत छी। बड़ाबजार के पुरना मरबड़िया सबहक बेटा सब आब एम्हरे रहए लगलै अछि। पुरने परिचय सँ ट्यूशन भेटि जाइत अछि। महगीक संगें ट्यूशनोक रेट तँ बढ़ि जाइते छैक सएह भेल हमरा लेल महगाइ भत्ता। पहिल उपन्यास रूपा दू सालक बाद छपलक जरूर मुदा हरदम शिकाइति जे बिका नहि रहल अछि। तें किछु टाका नहि दैत

अछि। अस्तु, हम लीखब एहि लेल तँ शुरू केलहुँ नहि जे टाका कमाएब। किछु लोक पढ़िए लैत छथि सएह बहुत। तें लेखन कार्य चालू अछिए।

सुशील कखनहुँ बजैत छथि देश आपस आबि रहल छी फलाँ रिसर्च इन्सटीच्यूट मे नोकरी भेटि गेल अछि। फेर किछु दिनक बाद विचार बदलि जाइत छनि। विवाहक लेल तत्पर नहि छथि। जानि नहि आजुक नवयुवक सब कें की भऽ गेलैक अछि जे विवाहक नामे ओहिना पराइत अछि जेना चिरैता पीबए कहैत होइऐक। आ कि हमही सब आब सठिया गेल छी आ नव जमानाक रंग नहि बूझि पबैत छी। पछिला दू बरख सँ एमहर एबो नहि केलाहए। सम्बन्धक नाम पर मात्र कखनहुँ टेलीफोन। पहिने माय बेसी गप करैत छलखिन कहुना विवाहक हेतु रिझबै लेल। मुदा आब ओहो आश छोड़ि देलनि। आब टेलीफोन पर भागिने सँ गप करैत छथि।

हमरा सब कें गाम छूटि गेल अछि। आब ओतए रहिए की गेल अछि ? सब गोटे मातृ पितृ ऋण सँ मुक्त भैए गेल छी। किसुनजीक परिवार बर पैघ छलनि मुदा सबटा बाँट बखरा भेलाक बाद गाम मे मात्र एकटा पितिऔत भाइ रहि गेल छथिन। बाकी सब बाहर, भले ओ दिल्ली पटना होथु की दरभंगा मधुबनी। आश्चर्यक गप ई जे दरभंगा मधुबनी मे जे लोकनि घर बनौलनि से तँ गाम आरो पहिनहि छोड़लनि। हमरा परिवारक कियो नहि छथि गाम मे। दूनू छोट भाइ आ बहिन दिल्लीए मे रहैत छथि। विसुनजीक हाल तहिना। कैलासक एकटा भातिज आ पितियौत सब छैक गाम मे मुदा ओकरा किछु लगैत छैक जे सामाजिक आ बौद्धिक स्तर पर ओ बहुत अलग भऽ गेल अछि। ओ गाम जा नहि पबैत अछि। दूनू बेटा सँ सम्पर्क टुटिए गेल छैक।

स्त्री वियोग भेलाक बाद विसुनजी एकसर मे आब कने बेसी पीबए लगलाहए। पीबैत तँ पहिनहुँ छलाह आ नीक नीक वस्तुक कलेक्सन रखैत छलाह। हमरो जिद्द कऽ कए एक बेर शैम्पेन चिखा देलनि। मुदा ई काज बहुत संयमित रूपें करैत छलाह आ सेहो मात्र संगी साथी वा कलीग सबहक बीच। एकसर कखनहुँ नहि पीबैत छलाह। आब कंट्रोल केनिहार कियो

नहि। ओना भिनसर कें टहलबाक समय हमरा सब कें कहियो एहन आभास नहि भेल अछि मुदा नोकर तँ देखैत छनि ने।

किसुनजी, विसुनजी आ कैलासक संग टहलैत काल हमरा हरदम लगैत रहैत अछि जे एहि तीनू केन्द्र सरकारक मोटगर पेंशनधारी व्यक्ति सबहक बीच हम मात्र एकटा ट्यूशनियाँ मास्टर केहन मिसफिट लगैत छी जेना तासक गड़डी मे जोकर होअए। एक बेर कैलास बाजल जे अहाँ तीनू पढ़ुआबाबूक बीच हम छेनी हथौड़ाबला लोक कतेक मिसफिट लगैत छी जे हमरा संग संग टहलबा मे संकोच होइत रहैत अछि। लगैत अछि जेना जोकर होइ।

एक दिन विसुनजी हमरा सब कें टहलै काल पुछैत छथि ‘‘अहाँ सब ‘मेरा नाम जोकर’ सिनेमा देखने छिऐक?’’ हम तीनू गोटे एक स्वर मे बाजि उठैत छी ‘‘हँ। मुदा ई किएक पूछि रहल छी अहाँ ?’’ ओ अपन व्याख्या देबए लगैत छथि ‘‘हम सब जोकर भए गेल छी। हमरा सब पर विपत्तिक पहाड़ ने किएक टूटि पड़ए, हरदम हँसैत रहब हमरा सबहक मजबूरी भऽ गेल अछि। देखू हमर पत्नी स्वर्गवासी भऽ गेलीह। कैलासजी कें दूनू बेटा सरोकार तोड़ि लेने छनि। किसुनजी कें एकटा बेटी कुमारि पड़ल छथिन आ एकटा कतए गेलखिन से हम सब किछु जनैत नहि छी। अहाँ अरूणजी तेहने स्थिति मे छी। बेटी जमायक भार पोसने छी। कोनो ने कोनो तरहें हमरा सब कें विधाता एक एक डांग मारने जरूर छथि। मुदा हमरा सब छी जे सबटा अंगेजि कए दिनचर्या मे लागल छी।’’

हम सब सत्ते मे जोकर भऽ गेल छी। भेराइटी भेराइटी के जोकर।

दश हाथक दलान

ओहि दिनक बाबूक खुसीक अहाँ सब अन्दाजे कऽ सकैत छलियनि जहिया ओ दलान बान्हल गेल छल। ओ बाजल किछु नहि छलाह मुदा हुनका चेहरा पर करीब पन्द्रह बरखक कष्ट सँ मुक्तिक संतोष छलनि जेना कोनो असाध्य रोग सँ पीड़ित रोगी कें डाक्टर स्वस्थ घोषित कऽ देने होअए। ओ दलान नहि छल बूझू हमरा सबहक लेल प्रतिष्ठाक चिन्ह छल आ समाज मे जिनगी जीबाक लेल एकटा न्यूनतम आवश्यकताक पूर्ति सेहो। कतेक झगड़ा झंझट आ पर पंचौतीक बाद कहुना हमर काका डीह बँटबा लेल तैयार भेल छलाह। हमरा तीनू भाइक मूड़न उपनयन आ बियाहो बीत गेल छल समाजेक दलान सँ काज चला कए। दलान तऽ छलैक मुदा काका भीन भेला पर अपना कब्जा मे कऽ लेलनि। हमरा सबहक जेना कोनो अधिकारे नहि रहि गेल छल। एकाध बेर ओहि दलान पर हमरा घरक पाहुन जखन बैसला तखन हुनका गेलाक बाद काकी मारिते रास उपराग सुना देने छलीह "तोरा घरक पाहुन कें कोनो लूरि नहि छौ, सबटा जगह गन्दा कऽ देलक। जत्र कुत्र पानक पीक फेकलक, काते मे लग्घी कऽ देलक आदि आदि"। आ हमर माय चुपचाप हुनकर साफो दलान कें फेर सँ बहारि कए गोबर सँ नीप अबैत छल।

डीहक बँटबारा भेलाक बाद जे जगह भेटल ताहि मे कतेक जोगाड़ लगा कए दलानक लेल बाबू दश हाथ जगह बनौलनि। ओहि लेल आँगनक रस्ता कने कम कएल गेल मुदा कहुना दश हाथ पुड़िए गेलैक। ओहि दिन कतेक बेर लग्गी लऽ कए बाबू चारू कात नपलनि, दलानक लम्बाइ तऽ कहुना दश हाथ पुड़ि गेलैक, चौड़ाइ मुदा पाँचो हाथ नहि पुड़ैक। हारि कए साढ़े चारि हाथ चाकर दलान एकचारीक रूप मे बान्हल गेल छल। एकटा चौकी कहुना बैसि जाइत छलैक मुदा झटक बसात मे समस्या ठाढ़ भैये जाइत छलैक। तैयो हुनका अतीव संतोष छलनि। झटक बसात सब दिन तऽ औतैक नहि आ यदि एबो करतै तऽ ओही चौकी कें ठाढ़ कऽ कए नीचा अढ़ मे ओछाओन कएल जा सकैत छलैक। गरीब लोक राज दरभंगाक महल तऽ बनाओत नहि।

पहिल बेर दलानक नीक उपयोग भेल छल भातिजक उपनयन मे। पाहुनक संख्या हिसाबें दलान बड़ छोट छलैक मुदा किछु छलैक अपन तऽ छलैक ने। एकर संतोष आ खुसी हमरा बाबू सँ बेसी अहाँ सब कहियो नहि बुझबैक। ई खुसी लाखो टाका मे नहि कीनल जा सकैत छलैक। कारण स्पष्ट छलैक - टाका सँ ओ एक धूर जमीन कीनल नहि जा सकैत छलैक जाहि पर दलान छलैक।

बड़का भैया गामे रहला आ हम दूनू भाइ दिल्लीवासी भऽ गेलहुँ। बाबू दलान पर खुसी खुसी रहऽ लगलाह। तकर बादक घटना सब जल्दी जल्दी एना होइत गेलैक जे दलानक सार्थकता बढ़िते गेलैक। माय अहिबातिए मरि गेल। आ तकर किछुए सालक बाद बाबू सेहो दलान सँ रूसि रहलाह।

बाबूक मुइलाक बाद अन्दाज अन्तिम बेर हुनका श्राद्ध मे ओहि दलान पर जेड़गर पाहुन सब बैसल। तकर बाद जेना जेना बेगरता बढ़ैत गेलै, बड़का भैया दलानक जगहक उपयोग अपना हिसाबें करए लगलाह। परिवार हुनकर छोटे छलनि, जेठ बेटा आ छोट बेटी। बेटा कहुना मैट्रिक नहिए केलकनि आ गामे मे चौक पर पानक दोकान खोलि लेलक। बेटी कें आन घर जेबाक छलैके से समय एला पर ओ चले गेल। कुल मिला कए भैयाक परिवारक आमदनी बहुत बान्हल, कहुना गुजर चलैत। हम दूनू भाइ दिल्ली मे सेहो तहिना छलहुँ, कोनो अफसर मनेजर तऽ नहिए मुदा कनिए नीक। एतेक जरूर जे बच्चा सब कें कने ढंगक स्कूल मे नाम लिखा देने छलियैक।

मझिला भैया गाम कें बिसरिए गेलखिन। बीस गज जमीन पर दिल्ली मे एकटा आवास की ठाढ़ केलनि ओ, बुझलखिन जे गामक आब काजे नहि छैक। आ तहिना जखन बेटाक उपनयनो दिल्लिए मे करबाक विचार केलनि तखन हमरा विश्वास भऽ गेल जे सत्ते हिनका आब गामक कोनो काज नहि छनि। एतेक दिन मे बस एक बेर भतीजीक बियाह मे ओ गाम आएल छलखिन। ओहि बेर हम सब देखने रही जे बड़का भैया एक कोन मे भुस्सीक ढक राखि देने छलखिन। सेहो ढक अलग सँ बनल नहि। दलानेक टाट लगा कए करीब तीन हाथ चाकर आ चारि हाथ नाम जगह ओ ढक लऽ लेलक। दू कात टाट लगा कए लेपि देल

गेल छलैक। माने भेल दश हाथक दलान आब सात हाथक रहि गेल छल। मझिला भैया कें एहि सब सँ कोनो मतलबे नहि छलनि। कहुना तीन दिन बितौलनि आ फेर विदा भऽ गेलाह दिल्ली। हम एक बेर बड़का भैया कें पुछलिएनि जरूर जे एहि ढक कें आँगनक ओसारा पर राखि दितियैक तऽ दलान बाँचि जइतए। भैया संक्षिप्ते जबाब देने छलाह “दिल्लीवासी तों सब आब कोना बुझबहक जे गाम मे लोक कोना जिनगी कटैत अछि”। एकर माने हम नहि बुझने छलिऐक मुदा बेसी बहस हम कइयो नहि सकैत छलहुँ से दू दिनक बाद हमहूँ दिल्ली घूरि आएल रही।

धीरे धीरे हमहूँ दिल्ली मे पचीस गज जमीन कीन कए एकटा रहबा जोग घर ठाढ़ कएल। मुदा साल दू साल पर हम गाम अबैत रहलहुँ। गाम एबाक माने भेल कम सँ कम हप्ता भरिक छुट्टी। दरभंगो जयनगर तक ट्रेन चललैक तैयो दिल्ली सँ गाम पहुँचैत करीब दू दिन भैये जाइत छैक। कलकतिये सब कें नीक छैक। एको दिनक छुट्टी लऽ कए गामक हुड़बा छू सकैत अछि।

गाम अबैत रहलहुँ मुदा सब दिल्लीवासी जकाँ एकसरे। पूरा परिवार आनब माने भेल दश हजारक धक्का, सेहो तीन मास पहिने प्रोग्राम बनाउ, टिकट कटाउ। यदि कनियो हुसलहुँ तऽ फेर दश के बीस बूझू, तत्काल मे टिकट लिअऽ सेहो एजेंट सँ। गुरक मारि धोकरे बुझैत छैक। एकसर मे ओतेक तरद्दुद नहि रहैत छैक, बलजोरियो कोनो स्लीपर कोच मे लोक ढुकि गेल, टीटी सँ चोरानुक्की खेलाइत कहुना एक राति काटि लैत अछि। कतेक परिवारक कनियाँ बहुरिया दश दश बरख तक गाम नहिए गेलीहे।

जतेक बेर गाम आबी सब बेर देखी जे दलान मे किछु ने किछु परिवर्तन भऽ गेल छैक। जेना लोक सड़क दफानैत जाइत अछि तहिना भैया दलान मे किछु ने किछु सामान भड़ए लगलथि। भुस्सीक ढकक बाद आङन सँ पुरना सन्दूक बहार भऽ कए ओतए आबि गेल। जखन पुतोहु एलखिन तखन सन्दूक पर स्टील के बड़का बक्सा रखा गेल। आ बाछीक थैरक कात मे कल गड़ा गेल। एवं प्रकारें दलान सिकुरैत गेल जे अन्त मे मात्र एकटा

एकजनिया चौकी जोगर रहि गेल जाहि पर भैया अपने सुतैत छलाह। हमरा ई खराप लागए। मोन पड़ए कतेक परिश्रम सँ बाबू दश हाथक दलान बन्हने छलाह।

एक बेर साहस कऽ कए हम एकर कारण पुछिए देलिएनि। भैया शान्त भावें उनटे हमरा प्रश्न केलनि ‘‘तों दूनू भाइ दिल्ली मे जमीन कीनलह आ मकान सेहो ठाढ़ केलह। कतेक खर्चा भेलहु?’’ हम एहि प्रश्नक लेल एकदम तैयार नहि रही। अपन खर्चा तऽ हमरा बुझले छल मुदा मझिला भैया कें कतेक खर्चा भेलनि से हमरा नहि बूझल छल। हम तहिना उत्तर देलिएनि ‘‘मझिला भैयाक खर्चा हमरा नहि बूझल अछि मुदा हमरा अपना घर मे सब मिला कए करीब पाँच लाख लागल। ई टाका जोगाड़ करबा मे तीन लाख बैंक सँ लोन लेलहुँ, एक लाख गहना गुड़िया बेच कए भेटल आ किछु हथपैंच अछि’’। भैया फेर अगिला प्रश्न केलनि ‘‘कहियो ईहो सोचलहक जे गाम पर जे दू कोठरीक भीतघर छैक तकरा की भेलैक ? बाबू ई दू कोठरीक भीतघर बना गेलखुन आ एकटा छोट एकचारी जकर आधा भाग मे भनसाघर आ आधा मे एकटा गाय आकि बाछीक जगह रहलैक। एहि डीह पर एकरा विस्तार करबाक कोनो गुंजाइसो नहिए छैक ने। से सोचलहक जे भैया कोना रहैत छथि ? आब जमाना बदलि गेलैक, लोक घरे घरे पैखाना बनबए लागल। बहरी निकासक कोनो गुँजाइस नहिए रहि गेलैक। हम पैखाना कतए बनाउ ? तों सब दिल्ली हिसाबें सोचौत छहक जे डीह चालीस पचास गज जमीन छैक। ठीके मुदा ओहो छोटका आँगन जँ नहि रहतैक तऽ जेहो दू मुट्ठी अन्न अबैत अछि से कतऽ लारचार करू? पक्का भऽ गेला सँ लोक छते पर पथार सुखबैत अछि मुदा भीतघरक चार पर धान गहूम सुखेतैक ? दाउन आब लोक नहि करैत अछि, थ्रेसर भऽ गेलैक मुदा अन्न राखत तऽ घरे मे।’’

हम निरुत्तर भेल रही। किछु वर्ष पहिने एक बेर बड़का भैया चर्चा केने छलखिन जे किछु टाका होइतैक तऽ भीतघर कें पक्का करबा दितियैक। फेर उपरो कोठरी सब तैयार कएल जा सकैत छलैक। भीत मे बहुत जगह मारल छैक। पक्का भऽ गेला सँ सटा कए एकटा पैखाना सेहो बना दितियैक। मुदा एहि प्रस्ताव पर हम दूनू दिल्लीवासी कोनो कान बात नहि देने छलिऐक। ई सत्त छलैक जे हम सब दिल्लीवासी भऽ गेल छलहुँ मुदा अपन पुरना सामान

एकटा घर मे रखनहि छलहुँ। भैया एतबा केलनि जे हमरा दूनू भाइक सामान एक कोठरी मे सरिया कए राखि देलखिन। ई हम सब कहियो नहि सोचलियैक जे पुतोहु आबि गेलाक बाद ओहि दू कोठरीक भरल अजबारल घर मे कोना काज चलतैक। सोचलनि भैया, केलनि व्यवस्था अपन आ बेराबेरी घर खाली करैत सामान दलान पर रखैत गेलाह।

हमरा प्रश्नक उत्तर मे भैया फेर अपनहि बाजए लगलाह ‘‘दिल्लीक जमीन मकान मे हम कोनो हिस्सा नहि माँगि सकैत छियहु मुदा गामक एहि जगह पर तऽ सबके हिस्सा छहु ने। यदि कालि तों दूनू गोटे हिस्सा लेल बात उठेबहक तऽ हम कोना मना करबहु ? डीह बाँटल कोना हेतैक, ककरा हिस्सा मे की भेटतैक से तऽ बादक बात मुदा यदि एहि दश हाथक दलान कें तीन हिस्सा लगतैक तऽ तीनू मे खाली एकजनिया चौकिए टा अँटतैक ने। बूझह जे हम ओही एकजनिया चौकी पर अपना हिस्सा मे रहैत छी। रहल बात सामान सब के से जहिया बँटबारा हेतैक तहिया अपने फेका जेतैक’’।

एहि तरहक बात हमरा दिमाग मे कहियो नहि आएल छल। दिल्ली मे हम दूनू भाइ अपना अपना आवास मे सुखी छलहुँ। जतबेटा छलैक लोक गुजर कैये लैत छल। गरिबहाक दिल्ली बीस गज के मकानक भीतरे बसल छलैक। जे कने बेसी टनमनाएल से तीस पैंतीस गज कीनलक आ कि दू गल्लीक कोनबला प्लॉट कीनलक। ओहि गरीबहाक बीच ओएह धन्ना सेठ। ओही मे लोक दुतल्ला तीनतल्ला बान्हिए लैत छल आ बेर बेगरता पर दू चारि हजार आमदनीक लेल नीचा तल्ला कि उपर तल्ला भाड़ा पर सेहो लगाइये दैत छल। जगहक हिसाबें गाम पर भैया कें ओहि सँ बेसिए जमीन छलनि मुदा पक्का मकान नहि छलैक सएहटा। दोसर बात ईहो छलैक जे गाम मे दिल्ली स्टाइलक घर नहि बान्हल जा सकैत छलैक आ कि ओहि तरहक घर सँ काज नहि चलितैक। बाछी कतए रहतैक ?

यदि गामक डीह बाँटि लेब तऽ ककरो किछु नहि भेटतैक। हम भैया कें आश्वासन दैत कहलिएनि ‘‘मझिला भैयाक बात हम एखन नहि कहब, अपन बात हम कहि सकैत छी, एहि डीह कें बँटबाक कोनो बात हम सब कहियो नहि सोचलियैक अछि। तखन एतेक जरूर छैक

जे गाम पर पक्का मकान बनेबाक सामर्थ सेहो एखन नहि अछि। आ ई दश हाथक दलान तऽ बाबूक निशानी छियैनि, एकरा तीन भाग करब तऽ कखनो सोचलो नहि जा सकैत छैक''।

भैया कने उत्साहित होइत बाजल छलाह ''बहुत नीक गप कहलऽ। कम सँ कम एको भाइ कें एतेक तऽ खियाल एलहु जे एहि छोट डीहक टुकड़ी सम्भव नहि छैक। तखन एकटा आर विचार जे दलान कें तीन हाथ छोट कऽ कए कोन मे एकटा कच्चा पैखाना बैसा दितियैक। पुतोहु कें दिशा फराकति मे बड़ दिक्कत होइत छनि। कच्चे बनेबैक कारण पक्काक पाइये नहि अछि आ कहियो विचार बदलि गेला पर हटाओलो जा सकतैक''।

हम की बजितहुँ ? पैखानाक आवश्यकता कें नकारल नहि जा सकैत छलैक आ जतेकटा डीह छल हमरा सबहक ताहि मे ठीके बिना पक्का घर भेने ढंगक पैखाना बैसाएब सम्भव नहिए छलैक। मुदा यदि दलाने तीन हाथ छोट भऽ जेतैक तऽ बाबूक निशानी नष्ट भैए जेतनि।

हमरा लागल छल जे एक हिसाबें मझिले भैया नीक केने छलाह। परिस्थिति कें देखैत गाम कें बिसरब हमरा सब सन गरीब लोकक नियति भैए गेल छलैक। ओहि बेर गाम सँ घुरबा काल लागल जे हमरो लेल गाम छुटिए रहल अछि। बाबूक निशानी ओहि दश हाथक दलान कें अन्तिम बेर हम प्रणाम केने छलहुँ।

बाँझ

पचासक उमेर लगिचा गेल हेतैक ओकर। बेटा बेटी दूनूक बियाह दान भऽ गेलै आ बच्चा सेहो। आ फेर घरबाला ट्रेन दुर्घटना मे मरि गेलै। ओ एतेक दिन सँ बेटाक संग रहैत छल। जे कमाइ छल ओकरे हाथ कें दैत छलैक। लेकिन अदना बात पर पुतोहु ओकरा अपना खोली सँ बहार कऽ देलकै। कनियो नहि सोचलकै जे ई बुढ़िया कतऽ रहतै। ओ घर सँ बहार भेल तऽ बेटा बौक भेल ठाढ़। लगबे नै केलै जे ओकरे माय छिऐ ओ। दू कौर अन्नक चिन्ता ओकरा नहि छलैक कारण एतेक पैरुख एखनो छलैक जे तीन चारि फ्लैट मे काज कऽ लैत छल मुदा माथक उपर छत सेहो चाही आ मुम्बइ सन शहर मे ओ के देतैक?

करीब तीस साल पहिने छऽ मासक बेटी कें कोरा मे लेने आ दू सालक बेटा कें आँगुर पकड़ने घरबालाक संग ओ बिजली सिंह चालक एही खोली मे ढुकल छल। दश फुट नाम आ आठ फुट चाकर ई खोली ओकरा कोनो राजमहल सँ नीक बुझाएल छलैक। आ छूटि गेल छलैक कोसिकन्हाक अपन गाम। छलैहे की ओतए ? घर घरारीक नाम पर दू धूर मे बनल खोपड़ी। ताहू जगह पर बिसेसरा आँखि गड़ौने। गामो मे घरे घर काज करैत छल तखने पेट मे दू साँझ दाना पड़ैत छलै। जखन ओहो खोपड़ी कोशी मैयाक पेट मे चल गेल छलैक आ सासु ससुर दूनू बाढ़ि मे भासि गेल रहै तखन ओ करीब दू मास तक सरकारी राहत शिविर मे रहल छल। ओ कष्टक जिनगी ! एखनहुँ देह सिहरि जाइत छैक। ओहि शिविर सँ जंगले नीक होइत हेतैक। जुआन जहान छौंड़ी मौगीक लेल मनसा सब जेना गिद्ध जकाँ मड़राइत। ठीकेदारक तीन टा गुंडा मिल कए साँझे राति मे सुधिया कें उठा कए लैए गेल छलै। लेकिन तकर बाद मौगी सब अपनहिं मिल कए अपन रक्षाक भार उठा लेने छल। जखन एक हप्ता बाद फेर ओ सब आएल छलै तऽ तीनटा मनसा पर तीसटा मौगी लुधकि गेल छलैक। मारि पीट कए भगौने छल सब गोटे ओहि राक्षस सब कें।

ओही बीच ओकर घरबाला आबि गेल छलैक ओकरा मुम्बइ लऽ जेबा लेल। ओकरा लागल छलै जेना बाघ सिंहक मुह सँ बहरा कए भागि रहल हो। ओकर घरबाला एकटा ट्रक कम्पनी मे बोरा उठबै लदै के काज करै छलै। कहुना मालिक सँ उधार लऽ कए पचास हजार मे ई

खोली लेने छल ओ। भाड़ा सौ टाका महिना उपर सँ। मालिक मासे मास सूदि के पाँच सौ काटि लैत छलैक। तैयो मुम्बइ मे ठौर भेटि जाएब बड़का बात छलैक। सएह ठौर छलैक भयंदर टीसन लग बनल ई बिजली सिंह चाल के एकटा खोली।

तकर बाद बिजली सिंह चालक इएह पचासटा खोली ओकर गाम टोल सबटा भऽ गेल छलैक। सबटा मजदूर लोकक बस्ती। तमिल, मलयाली, बंगाली, मराठी आ यूपी के भैया सबहक बीच ओ कहिया ने बिसरि गेल अपन कोसिकन्हाक गाम कें। सुख दुख मे संग देनिहार लोक सब धीरे धीरे भेटि गेल छलैक। करीब एक साल लागि गेल छलैक ओकरा मुम्बइ के रंग ढंग बुझबा मे, बोली सिखबा मे। ताबत ओ भरि दिन खोलिए मे रहए। देखै जे सब खोली के मौगी सब काज पर चल जाइ। इच्छा ओकरो होइ जे काज करए मुदा छोट बच्चा कें ककरा पर छोड़तै ? एक दिन मरियम्मा ओकरा पुछलकै "तोरा यदि काज करबा लेल बाहर जेबाक छौ तऽ बेटा बेटी कें हमरा लग छोड़ि दे। देखै नै छिही दश खोलीक बच्चा कें हम सम्हारने रहैत छिऐ ? जकरा जे जुड़ै छै से दऽ दै छै। हम ने ककरो कहलियै एतेक टाका महीना दे आ ने कियो हमरे पुछलक। दश टाका, पाँच टाका कि पचास टाका, जे दऽ दै छै से हम राखि लैत छिऐ। हमरा लेल बच्चा सब ईशू भगवान छथि"। पहिल बेर ओ बुझने छलै मरियम्मा ईशूक पूजा करै छै आ क्रिश्चियन छिऐ।

पहिल काज मरियम्माक बेटिए धरा देने छलैक। आ तकर बाद ओ बहरा गेल छल। धीरे धीरे खोलीक भाड़ा आ कर्जक किस्त ओ अपना कमाइ सँ देबऽ लागल छलैक। जखन मुम्बइ मे दंगाक बाद लोकल ट्रेन मे ब्लास्ट भेल छलैक आ ओकर घरबाला मरि गेल छलैक तखन ओकरा बाबूभैयाक कमीशन कटैत पचास हजार टाका भेटल छलै। ओ सबटा टाका कर्ज सधबै मे दऽ देने छलै आ खोली अपन भऽ गेल छलै। ताही खोली सँ आइ बेटा पुतोहु बेदखल कऽ देलकै ओकरा।

गाम घर एहन भऽ कए छुटलै जे कहियो घुरिओ कए नहि गेल। कतए जइतए ? दियाद बाद सब बिलटि गेलै। जाति पाति बिसरा गेलै। एतहि सब मजदूरक बीच ओकरो मजदूरक जाति भेटलै, मजदूरे दियाद भऽ गेलै। फल ई भेलै जे बेटा एकटा बंगाली छौंड़ी कें उठा अनलक

आ बेटी एकटा मराठी छौंड़ाक संग भागि गेलै। यदि ओकरा पुछियो कए ओ सब एना बियाह करितए तऽ ओ मना नहिए करितै मुदा आबक धियापूता बेकहल जे भऽ गेलै ? बेटी चल गेलै नासिक। पहिने कहियो काल आबि जाइत छलै। पछिला पाँच छऽ साल सँ कोनो खबरि नहि। खिसिआएल छलैक ओकरा पर जे बापक मरला पर जे टाका भेटलै तै मे हिस्सा किएक नहि देलकै। आ जै काज मे पैसा लगेलक तकरो फल नहि भेटलै ओकरा। जै खोली कें अपन बुझलक ओही सँ भगा देल गेल ओ।

ओ तऽ धन्य कही रजनीबाइ कें जे ओकरा अपना खोली मे जगह दऽ देलकै। रजनीबाइक बेटा चल गेलैक दुबइ। आइ दस बरख भेलै, घुरि कए नहि एलैक। खोली मे एकसरे रहैत छल रजनीबाइ। ओ देखने रहै दू साल पहिने जखन पारवती कें सेहो बेटा पुतोहु घर सँ बहार कऽ देने रहै तऽ रजनीबाइ अपना खोली मे राखि लेने रहैक। पारवती तैयो भागमन्त छल। तीने दिनक बाद बेटा माफी माँगि अपना खोली लऽ अनलकै।

से रजनीबाइ ओकरो जगह देलकै मुदा ओकर भाग कहाँ चमकलै जे दुइयो हप्ता बाद बेटा अबितै आ घुरा कए लऽ जइतै।

दू हप्ता पर ओकर आश टूटि गेल रहै। ओही राति रजनीबाइ सुतै काल ओकरा पुछने रहै ‘‘पेट भाड़ा पर लगेमे सुजाता ?’’ ओ कोनो माने नै बुझने रहै। ओकरा भेलै जे रजनीबाइ ओकरा लैमिंगटन रोडक कोठा सब पर पहुँचाबए चाहैत छैक। ओ खिसिया गेल छल आ रजनीबाइ कें डाँटि देने छलैक ‘‘ऐ उमेर मे तों हमरा कहलें कोठा पर बैसै लेल ? हमर रहब बड़ भाड़ी लगलौ ने, राति भरि रहए दे, कालि भोरे हम चल जेबौ’’।

तखन रजनीबाइ ओकरा बुझेने रहै ‘‘एँ गै सुजाता, कोना सोचलिही एहन बात ? एतेक दिन सँ हम एही चाल मे रहैत छी, ककरो मुहें सुनने छलही कोनो बात जे हम मौगी सब कें कोठा पर पहुँचबैत छिऐक ? तोहर तँ आब उमेर भऽ गेलौ, से करबाक रहितै तँ छौंड़ी सब कें नै फँसबितियै ?’’ सुजाता नाम रजनीबाइए राखि देने छलै। गाम मे सब सुनरी कहै मुदा मुम्बइ मे ओ नाम नीक नहि लगै छलै।

फेर कने अफसोसो भेल रहैक ओकरा अपना तामस पर। आ अवसर देखि रजनीबाइ ओकरा बुझेने रहै “ई दोसर बात छिऐ। हम तों एहि दुख कें कहियो नहि बुझलियै। भगवान हमरा तोरा माय बना देलनि। हम एकेटा जनमेलौं, तों दूटा जनमेलें मुदा माय बनि गेलौं ने दूनू गोटे। आ जे मौगी बाँझ छैक आ कि कोनो एहन बिमारी भऽ गेल छै जे ओकरा बच्चा नहि हेतैक तकरा बारे मे सोचलही कहियो ? पहिने कोनो उपाय नहि छलै, लोक पूर्व जन्मक कर्मक दोख मानि लैत छल। आब डाक्टरी लूरि बुद्धि बढ़लै, आब एहन उपाय भेलै जे बच्चाक अंडा बाहरे मे तैयार कऽ लेतै आ कोनो स्वस्थ महिलाक पेट मे ओ अंडा पारि देतै। ई एकटा मामूली ऑपरेसन जकाँ होइ छै। अंडा तँ अनकरे रहतै, बच्चा कोनो दोसराक पेट मे बढ़तै आ जनम भेलाक बाद बच्चा माय बाप कें भेटि जेतैक। नौ मास जे तों पेट मे रखबही तकरा लेल तोरा टाका देतौ। तकरे कहल जाइ छै पेट भाड़ा पर लगाएब। हमरा नैयर अस्पतालक एकटा नर्स कहलक, हम तऽ तैयार भऽ गेलियै मुदा जाँच मे हम छँटा गेलहुँ। दू लाख टाका हाथ सँ निकलि गेल। तें तोरा पुछलियौ”।

आ तकर बाद भरि राति ओकरा निन्न नहि भेल छलै। कतेक तरहक बात सोचैत रहि गेल छल ओ। ऐ उमेर मे पेट देखि कए लोक की कहतै ? आ बेटा पुतोहु लाजें कतौ मुह देखबैबला नहि रहतै। जरूर लोक कहतै जे मौगी मे पहिने सँ किछु गड़बड़ छलै तें ने बेटा घर सँ बहार कऽ देलकै आ एकरा ढीढ़ भऽ गेलै। मुदा तखने ओकरा दिमाग मे अबै दू लाख टाका आ ओहू सँ बेसी एकटा बाँझ मौगीक सहायता करबाक विचार। सत्ते ओ बाँझ नहि छल से ओहन लोकक दुख की जानए गेलै। जहिना कहबी छैक बाँझ की जानए प्रसव के पीड़ा तहिना ईहो सत्य जे मातृत्वक सुख सँ तृप्त जनानी बाँझक मोन मे उठैत चीत्कार कोना सुनतैक?

फेर ओ सोचए लागल। लोक बहुत किछु बजैत छैक अनेरो। ककरो मुह बन्द करब सम्भव नहि छैक। आ जकरा जे मोन होइ छैक से करबे करै छैक। ओ नै तैयार हेतै तऽ दोसरे कोनो मौगी तैयार भऽ जेतै। एतेटा मुम्बइ शहर मे लोकक कमी छै कोनो ? रजनीबाइ अपने यदि छँटैतै नहि तऽ की ओकरा हाथ ई अवसर अबितै ? आ रजनीबाइ कें पेट देखि कए

लोक की की ने बजितै ? ओ तऽ ओहुना कने स्वच्छन्द टाइपक लोक छल। कतेक बेर चाल मे ओकरा बारे मे की की अफवाह ने उड़ल छलै मुदा दुइये चारि दिनक बाद सब शान्त भऽ जाइ छलै जेना किछु भेले नै होइ। चैत मासक बिर्ड़ो जकाँ, उठैत उठैत बिला गेल।

भोरबा मे कने आँखि लगलै तऽ सपना देखने रहए जे जौआँ बेटाक जनम भेलै। ओकर मोन हर्षित भऽ गेल रहै। एहन होइतै जे एकटा बच्चा दऽ दितैक आ दोसर ओ अपने पोसितए। नौ मास जकरा पेट मे पोसलक से ओकरे बेटा भेलै, अंडा ककरो रहै। नीन टुटला पर सपना मोन पाड़ि कए हँसी सेहो छूटल रहैक ओकरा। जकरा सँ दू लाख टाका लेतै तकरा बच्चा नै देतै से कोना सम्भव छै ? आ जौंआ किएक हेतैक ? पानि मे माछ आ नौ नौ कुटिआ बखरा।

भोर मे सुजाता रजनीबाइ कें अपन स्वीकृति दऽ देने रहै। रजनीबाइ ओकरा लेने अस्पताल गेलै। ओतए ओकर जाँच भेलै। डाक्टर दूटा दवाइ देलकै खाइ लेल आ कहलकै एक हप्ता बाद फेर अस्पताल चल आबै।

एक हप्ताक बाद फेर रजनीबाइक संग ओ अस्पताल गेल छल। फेर ओकर जाँच भेलैक आ डाक्टर ओकरा स्वस्थ आ माय बनै जोग घोषित कऽ देलकै। तकर बाद शुरू भेलैक ठीकाक कागत सब पर दसखत करबाक चक्कर। एहि मे ओ कने घबड़ा गेल। कागत मे लिखलाहा सबटा बात तऽ ओ बुझैत नै छलैक। ओही ठाम ओकरा भेंट भेलैक ओ नवयुवक नवयुवती सैं-बहु जकरा लेल ओ पेट भाड़ा पर लगबै छल। केहन देखै मे राजकुमार आ राजकुमारी सन लगै छलै दूनू ! भगवान एहन किएक केलखिन जे एकरा अपना कोखि मे बच्चा नहि भेलै ? ओकरा इच्छा भेलै जे ओहि मौगी सँ एकान्त मे गप करए। ई बात रजनीबाइ कें ओ कहलकै। ओ मौगी तुरत्ते मानि गेलै।

ओतहि अस्पताले मे एकटा कोठरी मे करीब पन्द्रह मिनट ओ दूनू गप केने रहए। ओ मौगी, जकर नाम छलैक कोकिला, ओकरा कहलकै जे ओ सब बहुत कोशिश केलक। तीन बेर गर्भ रहलैक आ तीनू बेर तीने मासक भीतर खतम। तकर बाद डाक्टर कहि देलकै जे आब

ओकरा अपना कोखि सँ बच्चा नहि हेतैक। कोनो बिमारीक नाम तऽ ओ कहलकै मुदा से ने ओ बुझलकै आ ने ओकरा ओ नामे मोन रहलै। अपन खिस्सा कहैत कोकिला कें आँखि नोरा गेल छलै।

एहि गप पर ओकरा कोकिला पर बड़ दया आबि गेलैक। ओकरा अपना बेटीएक उमेरक बुझेलै ओ। आइ यदि ओकरे बेटी कें बियाहक दश साल तक बच्चा नै भेल रहितै तऽ ओ अपनहु कतेक परेशान भऽ गेल रहितए। ओकरा सन गरीब मजदूर कें कतऽ सँ एतेक टाका अबितैक जे एहन महग इलाज करबितए। फेर ओ सोचलक जे भगवान गरीबक शरीरो दोसरे ढंग सँ बनबै छथिन। ओकरा चाल मे पचासटा खोली छै। जहिया सँ एतए रहऽ लागल, ओ देखने छै ओहि मे माय बेटी सासु पुतोहु मिला कए नहि बेसी तऽ तीन चारि सौ बेर तऽ बच्चा जनम भेले हेतैक। विरले ककरो ऑपरेसन कऽ कए बच्चा जनमलै। सब अन्त समय तक काज करै मे लागले रहैत छल। किए छुट्टी लेतै कियो ? आ छुट्टी लऽ लितै तऽ पेट कोना चलितै ?

ओमहर देखू फ्लैट मे रहनिहार मेम सब कें। पूर मास अबै सँ दू मास पहिनहि सब काज राज छोड़ि जेना ओछाओन धऽ लैत छलै। अधिकतर मेम कें सुनै जे ऑपरेसने सँ बच्चा भेलै। जेना भगवान पेट सँ बच्चा निकालैके शक्तिए नै देलखिन ओकरा सबकें।

कोकिलाक आँखि मे नोर ओकरा देखल नहि गेलै। ओ कोकिला कें आश्वस्त केलकै जे चिन्ता नहि करए। यदि डाक्टर कहै छै तऽ भगवान पर भरोस राखए, बच्चाक सेहन्ता जरूर पूर हेतैक। ओ मोने मोन सोचने रहए जे यदि हमरा माध्यम सँ एकरा बच्चा आबि जेतैक तऽ ई बड़का धर्मक काज हेतैक। ककरो घर मे एकटा छोट बच्चा एनाइ कतेक खुसीक गप होइत छैक से ओ अपनहि नीक जकाँ बुझैत छलैक। ई काज बिनु टको लेने ओ स्वीकार कऽ सकैत छलै।

ओ कोकिला कें इहो पुछने रहै जे एहि मे डाक्टर अस्पताल सब मिला कए कतेक खर्चा एतैक। कोकिला सब बात फरिछा कए तऽ नहिए कहलकै मुदा एतेक जरूर बुझा देने छलैक

जे अस्पतालक खर्च तऽ जे लगतै से लगबे करतै, संगहि सुजाताक लेल पौष्टिक आहार आ आरामदायक रहन सहन के व्यवस्था सेहो ओ करै लेल तैयार छै।

ओकरा अपना तऽ बियाहक साल बीतैत बीतैत कोखि भरा गेल छलैक आ फेर जल्दीए बेटीक जन्म भेल रहैक। मुदा ओकर जेठकी दियादनी कें चारि बरख सँ बेसी लागि गेल छलैक। एही चारि बरख मे लोक सब की की ने बाजऽ लागल रहै। सासु ओकरा हरदम गरिअबै आ एकरा खूब मानै कारण जल्दीए बच्चा जे भऽ गेल छलै।

कोकिला सँ गप केलाक बाद ओ ठीकाक कागत पर अनेरे सबटा दसखत कऽ देने रहै, आगू पाछू सोचबाक कोनो काजे नै रहै आब। मुदा दूटा बात स्पष्ट कऽ देलक ओ - ओ रहत अपने चाल मे रजनीबाइक संग जहिना एखन ओ रहैत अछि, आ काज जहिना ओ करैत अछि तहिना करिते रहत। हँ, कोकिला कें यदि इच्छा होइ तऽ खेनाइ पिनाइ लेल मदति कऽ सकैत छै। रजनीबाइ सेहो एहि बात पर कोनो विरोध नहि केने छलै।

ठीकाक कागत तैयार भऽ गेलाक बाद डाक्टर सब अपना काज मे लागि गेल छल। ओकरा बीच बीच मे अस्पताल बजा चेकअप होइत रहलैक आ करीब तीन हप्ताक बाद एकटा छोट ऑपरेसन जकाँ भेलैक। तकर बाद ओकरा करीब पन्द्रह दिन अस्पताल मे रहनाइ जरूरी भऽ गेलै। ओकरा अपनहुँ बुझा गेलै जे शरीर मे किछु परिवर्तन शुरू भऽ रहल छलै।

कोकिला आ ओकर पतिक इच्छा रहैक जे ओ डाक्टरक देखरेख मे अस्पताले मे रहए, खर्चा ओ सब देबा लेल तैयारे छलै। मुदा सुजाता कें अपना नीक नहि लगै। ओ मजदूर वर्गक लोक सदिखन खटैबाली सब कोना अस्पताल मे अनेरे पड़ल रहितए? डाक्टर ओकर प्रगति कें देखैत आ ओकर साहस कें बुझैत ओकरा छुट्टी दऽ देने रहैक।

अस्पताल मे ओकरा सन दूटा आर जनानी छलैक जे अपना पेट मे अनका लेल बच्चा पोसैत छलैक। ओकरा दूनू सँ गप मे सुजाता कें पता चलल रहै जे एहि तरीका सँ बच्चा करबै मे खतरा बेसी छलैक, कतेक बेर अंडा पारबा मे डाक्टर सब कें सफलता नहि भेटैत छलैक। तें ओ सब एके बेर मे तीन चारि टा अंडा पेट मे राखि दैत छलैक। कोनो तऽ बढ़तै आ

पोसेतै। तकर फल ई जे अधिकांश लोक कें जौआँ बच्चा जनमि जाइत छलैक। एकाध बेर तऽ तीनोटा बच्चा जनमल रहैक।

ई सुनि बेर बेर सुजाता कें पहिल रातुक सपना मोन पड़ि जाइक। ओकरा विश्वास बढ़ए लगलैक जे कम सँ कम जौआँ बच्चा तऽ हेबाके छलै। एकर चर्चा एक राति ओ रजनीबाइ सँ सेहो केने छल आ ओकरो पुछने छलैक: ''की ई सम्भव हेतैक जे ओ एकटा बच्चा राखि लिअए अपने पोसै लेल''। रजनीबाइ कें बड़ हँसी छूटल छलैक। ओ कहने रहै ''सुजाता, तों बताहि भेल जा रहल छें। सोचही कोन निसाफ तों करबही ओहि बच्चाक संग। एहन चाल मे राखि कए आ पोसि कए कोन बड़का लोक ओकरा तों बना सकबही ? ओकर असली माय बाप कें एतेक पैसा छैक जे स्कूलो मोटरगाड़ी सँ पठौतै। डाक्टर इंजीनियर बनौतै। आ तों की करबही ? दोसर गप जे जाबत ओ बच्चा पैघ हेतौ आ तोहर कोनो सहायता करबा जोगर उमेर के हेतौ ताबत तों की जीबिते रहमे ? अपन वयसक खियाल कर ने''।

पालन पोषणक बात तऽ ठीके कहने रहै। ओकरा तैयो रजनीबाइक कहब अनुचिते लागल रहै। ओ सोचए जे रजनीबाइ अपने बाजी हारि गेल अछि तें ओकरा एना भटका रहल छै। ई कियो नहि बूझि रहल छलैक जे बच्चा पर ओकरो अधिकार छैक। पेट भाड़ा पर जरूर लगौलक ओ मुदा ई काज खोली भाड़ा लगाएब जकाँ नहि छैक ने। नौ मास बच्चा पेट मे पोसेतैक, ओकरे शरीरक रक्त सँ। लाभी ओकरे पेट मे लागल रहतैक। बिना कटने आ शोणित बहौने बच्चा कें कोना अलग कऽ लेतै कियो ? तखन एकरा आन वस्तुक भाड़ा सँ किएक मिलेबैक ? अहाँ हमरा पेटक भाड़ा देलहुँ, अहाँ बाँझ छी, अहाँ कें बच्चा चाही। ठीक, लिअऽ एकटा बच्चा। जौआँ मे दोसराक अधिकार अहाँक कोना भऽ गेल ? ने हम दुन्ना भाड़ा मँगलहुँ आ ने अहाँ कें दोसर बच्चा देब। ओकरा लगै जे यदि कोर्टो मे मोकदमा होइ तऽ ओ अपन अधिकार साबित करा सकत। मुदा से सब तखन ने जखन जौआँ जनमतैक। ओ अपना मोनक ई बात फेर ककरो दोसरा सँ चर्चा करब ठीक नहि बुझलक।

समय बीतैत गेलैक आ ओकरा पेट मे बच्चा बढ़ैत गेलैक। ओकरा विचित्र आनन्दक अनुभूति भऽ रहल छलैक। अपन जे बेटा बेटी पेट मे एलै से कि एना बुझलकै ओ ? ओ तऽ हँसी

खेलाक बीच भऽ गेल छलै। सब छौंड़ी कें बियाहक बाद बच्चा होइते छलैक, ओकरो भेलैक। मुदा एहि बेर तऽ नियार भास कऽ कए पेट मे अंडा पाड़ल गेलै। कखनो कए ओकरा डाक्टर सबहक लूरि पर आश्चर्य होइ। कतेक विचित्र बात जे कोना बाहरे मे मौगी आ पुरुखक संयोग करा अंडा बना देलकै आ ओकरा पेट मे पाड़ि देलकै ? आ ओहि अंडा कें सेबि रहल छल एकटा बाँझ जनानी कें मातृत्व सुख देबा लेल। धर्मक काज।

जखन पेट देखार होमए लगलैक तखन चाल मे खोलिए खोली कनफुसकी शुरू भऽ गेलैक। अन्त मे एक दिन पारवतिए रजनीबाइ कें पूछि देलकै "सुजाता कें बेटा घुरा कए नहिए लऽ गेलै। की बात छलै जे तोहूँ अपना खोली मे रखने छिही आ ककर पाप कें ओकरा पेट मे पोसैत ओकर रखबारी कऽ रहल छिही ?" रजनीबाइ बात कें टारए चाहलक मुदा जखन पारवती सुना देलकै जे सुजाताक बेटा बजै छलै माय के खून करबा देतै तखन ओकरा असली बात बाजहि पड़लैक। एहि पूरा अध्याय मे ओकरो अपन भूमिका छलैक। पारवती कें रजनीबाइ दू लाख टाकाक बात नहि कहलकै मुदा खूब जोर दऽ कए बुझा देने छलैक जे ईहो धर्मक बड़का काज छैक। बाँझ जनानीक दुख बुझनिहार पूरा बिजली सिंह चाल मे एकोटा मौगी नहि छल। सुजाता पुण्यक काज कऽ रहल छल। रजनीबाइ सुजाताक बेटा पुतोहु सँ अपनहुँ गप केलक आ सब बात बुझेलकै। सुजाताक जान जेबाक खतरा तऽ टलि गेलैक मुदा बेटा पुतोहु सँ बाजा भूकी बन्दे रहलैक।

दोसर दिन पारवती ईहो सुना देने छलै जे बेटी कें सेहो पता चलि गेलै। ओ एतबे बाजल रहै जे हमरा लेल माय कहिया ने मरि गेल। ई सूनि ओकरा दुख जरूर भेल छलैक मुदा कोकिलाक नोर फेर ओकरा आँखिक सोंझाँ आबि जाइ। ओकरा अपना निर्णय पर कोनो अफसोस नहि होइ। कखनो कए सोचए जे यदि दू लाख टाका बेटा बेटी मे बाँटि देत तऽ दूनू कें फेर मना सकत। दूनू टके लेल ने नराज भेल छलै। फेर सोचए जे ई ओकर अन्तिम मोटगर कमाइ हेतैक, पहिने अलग एकटा खोलीक जोगाड़ करत। तखन जे बचतैक तकरे बाँटत। ओ आर बहुत किछु सोचैत छल, अपना लेल, कोकिला लेल, होइबला बच्चा लेल।

आठम मास चढ़ला पर कोकिला आ डाक्टर सेहो कहने रहैक काज छोड़ि अस्पताल मे भर्ती भऽ जाइ लेल। ओकरा अपन मोन तऽ नहिए मानै मुदा ई सोचि जे एहि पेट पर ओकर अपन अधिकार नै छै, ओ काज छोड़ि देने छल। अस्पताल चल गेला सँ अपना चालक चर्चा सेहो आब नहि बुझैत छल। कहियो कए रजनीबाइ भेंट करए आबि जाइ, जे सुना दैक सएह बुझए। एखनहुँ बेटा पुतोहुक व्यवहार मे कोनो नरमी नहि आएल छलैक।

जहिया सँ ज्ञान परान भेल छलैक, पहिल बेर निट्ठाही बैसारीक एहन जिनगी सुजाता बिता रहल छल। गाम मे जखन बेटा बेटीक जन्म भेल छलैक तखन कहियो ओकरा ई सोचबाके अवसरे नहि एलैक जे आराम करए। ओकरे टा नहि, पूरा टोल मे एहिना होइत आएल छलै। बच्चा बिआएब कोनो विशेष बात नहि बूझल जाइत छलैक। ककरो इनार पर पानि भरै काल दर्द उठलै, ककरो साँझ मे रोटी बेलैत काल आ घंटा दू घंटा मे सबटा फारिग, बच्चाक चेहों चेहों सँ घर आङन आनन्दित। एकाधे बेर एहन भेल रहए जे चमैन बुते नहि सम्हरलै आ जच्चा मरि गेल रहैक। मुदा एखन ओकरा अस्पताल मे रोजे जाँच होइत छलैक। डाक्टरक ढेर निर्देश जे एना रहए, एना सूतए, ई नहि करए, ओ नहि करए। ओकरा ई जिनगी जहले बुझा रहल छलैक।

एखन कोकिला सेहो अस्पताल रोजे अबैत छल जखन ओकर जाँच होइत छलैक। कहियो एकसरे कहियो पतिक संग सेहो। एक दिन जखन जाँचक बाद ओ विदा भऽ रहल छलैक, ओ कोकिला कें पकड़ि लेने छलैक ‘‘हमरा किछु कहबाक अछि’’। आ बिना कोनो अनुमति के एके साँस मे कोकिला कें अपन योजना सुना देने छलैक ‘‘बच्चाक जन्म भेलाक बाद हम किछु दिन अहाँक संगे रहब, बच्चाक सेवा, आ सब सँ जरूरी ओकरा दूध पिएनाइ रहतैक। हमरा विश्वास अछि जे दूध हेबे करत। हम आरो टहल टिकोरा कए देब। एकटा बाइ के काज सम्हारि लेब। हमरा बदला मे किछु नहि चाही। खाली दू बेर जे जूड़ए से खेबा लेल दऽ देब, बस एतबे। कम सँ कम छऽ मास तक बच्चा कें मायक दूध चाही तकर बाद अहाँ ओकरा जेना रखबैक से अहाँ उपर रहत। हम अपन खोली मे घूरि जाएब’’। ओ कहए चाहैत रहए जे जौआँ भेला पर एकटा बच्चा हम राखए चाहब मुदा साहस नहि भेल रहैक।

मोन मे धुकधुकी रहैक, जौआँ हेतैक तखन ने, अनेरे पानि मे माछ नौ नौ कुटिया बखरा करबाक कोन काज ?

कोकिला ओकर भाषण चुपचाप सुनि लेने रहैक आ एतबे बाजल रहैक ‘‘समय एला पर देखल जेतैक’’। ओ निराश भऽ गेल छल। ओहि सुधंग लोक कें कतए सँ ज्ञान एलैक जे कोकिलाक पति बच्चाक लेल सबटा इन्तजामक संग ओकर सेवाक लेल एकटा नर्स सेहो राखि लेने छैक।

ओकर जहलक जिनगी खतम हेबाक समय आबि गेलैक जखन डाक्टर अपने मोने निर्णय लेलक जे आइ ओकर ऑपरेसन करबाक छैक। ओकरा बुझा देल गेलैक जे एहि विधि मे खतरा रहला सँ जच्चा कें अन्त समय तक दर्द उठैक लेल प्रतीक्षा करब सम्भव नहि छैक। ओहि दिन कोकिला अपन पतिक संग सजि धजि कए बहुत आशाक संग अस्पताल आएल छल। आइए तऽ ओकर परीक्षाक रिजल्ट बहरेबाक छलैक।

ऑपरेसनक समय ओ होशे मे छल। डाक्टर कें बजैत सुनने रहैक जे जौआँ बच्चा छैक। ओ बहुत उत्तेजित भऽ गेल छल। अवसर आबि गेल छलैक जे कोकिला सँ एकटा बच्चाक माँग करए। ओ बहुत किछु नियारने छल। मुदा ऑपरेसनक बाद ओ जाबत बच्चाक आवाज सुनैत ताबत बेहोश भऽ गेल छल। ओकरा निन्न आबि गेल छलैक।

होश एला पर ओ लग पास मे ककरो नहि देखने रहए। बच्चाक खोज पुछारी केला पर अस्पतालक नर्स ओकरा एतबे कहने रहैक ‘‘जुड़वाँ लड़का हुआ पर एक नहीं बचा। दूसरा बच्चा नियोनटल वार्ड में है, वहाँ तुमको जाने का परमीसन नहीं है। कल तुमको डिस्चार्ज किया जाएगा, उसी समय तुम्हारा चेक मिल जाएगा’’। ओकरा लागल रहै जेना कियो ओकरा ऊँच पहाड़ सँ नीचा धकेलि देने होइ आ ओकर अंग अंग थकुचा गेल होइ। ओ बुझिए नहि पाबि रहल छल जे कोना दोसर बच्चा मरि गेलै। ओकर अपना हिफाजति मे कहियो कोनो कमी नहि एलै। डाक्टर सब दिन जँचिते छलैक आ कहियो कोनो तरहक शिकाइति नहि केलकै। ओकरा पेट मे सेहो कहियो एहन नहि बुझेलै जे कोनो तरहक गड़बड़ी भऽ रहल छै।

ओकर सब विचारल बात धएले रहि गेल छलैक। जरूर विधाता कें ओकर योजना पसिन्न नहि छलैन।

ओ नर्स सँ बहुत विनती केलकै एक बेर, बस एक बेर बच्चा कें देखा देबऽ लेल मुदा नर्स एतबे कहलकै जे डाक्टर आ कोकिला मैमक परमीसन नै छै। ओ कानऽ लागल छल तै पर नर्स ओकरा डाँटि देने रहैक।

कोकिलाक पता अस्पताल मे किओ देबा लेल तैयार नहि भेल छलैक। बहुत खोधला पर फेर ओएह नर्स ओकरा सुना देने छलै "कोकिला मैम बहुत गुस्सा में है। तुमने उनके एक बच्चे को मार दिया। अब वे तुमसे कभी नहीं मिलेगी"। ओकरा सबटा बात सूनल नहि गेलै। लगलै जेना पएरक ठीक नीचा भूकम्प आबि गेलै। चक्कर आबि रहल छलै। ओ माथ पकड़ि कए ओतहि बैसि गेल छल।

दोसर दिन डिस्चार्ज हेबाक समय ओकर बेटा सेहो आबि गेल रहै आ बलजोड़ी ओकरा सँ चेक छीन लेने रहै, आगू मे दश हजार टाका फेकि देने रहै आ एकटा कागत पर दसखत सेहो करा लेने रहै। ओकरा एतेक तागति नहि रहैक जे दश हजार टाका सम्हारितए। कहुना अस्पताल सँ बाहर आबि गेल छल ओ। मुदा जाएत कतए ? आइ रजनीबाइ सेहो भेंट करऽ नहि आएल छलैक। ओकरा लगलै जे सब किछु लुटा गेल छलै। जकरा नौ मास तक पेट मे पोसलक तकर एक नजरि तक देखबाक भाग नहि भेलैक ओकर। ओकरा आश्चर्य लगलैक जे दूधो नहि उतरि रहल छलैक। की केलकै डाक्टर ? पेट सँ बच्चा निकालि ओकरा बेहोश करा देलकै आ तकर बाद ओकर दुनिया उजाड़ि देलकै।

अस्पताल सँ बाहर आबि ओ दौड़ल गेल छल बिजली सिंह चाल के ओहि खोली मे जतए रजनीबाइ रहैत छल। ओहि मे ताला लागल छलैक। अपना बेटाक खोली मे जेबाक कोशिश केलक तऽ पुतोहु डाँटि देने रहैक जे एहन कुकर्मी लोक कें ओ देखए नहि चाहैत अछि। पूरा चाल मे जेना ओकरा कियो चिन्हैत नहि रहैक तेहना सन बुझना गेलैक। जखन घूरए लागल तखन अढ़ मे जा कए मरियम्माक बेटी कहने रहै जे रजनीबाइ सँ ओकर बेटा बहुत

झगड़ा केने रहै आ पूरा चाल मे सबकें सुना देने रहै जे कियो ओकरा माय कें आश्रय नहि दैक। रजनीबाइ झगड़ा सँ दुखी भऽ कए चाल छोड़ि चल गेल रहै।

ओकरा लागल छलै जे कोकिला बाँझ सँ पुत्रवती भऽ गेल छल आ ओ ... ?

आइ कालि अहाँ सब देखैत हेबैक भयंदर टीसन पर एकटा बताहि बुढ़िया कें चिचियाइत "..... हौ बाउ सब हौ बाउ सब ..... चारि टा बच्चा जनमा कए हम बाँझे रहलियै हौ बाउ सब ...... "

हमहूँ जेबै गाम

“प्रकाश, हम गर्मी छुट्टी मे गाम जा रहल छियौक।” समीर ओकरा कहलकै।

“गाम मे की छैक ?”

“आहि रे बा, सेहो नहि बूझल छौ ? गाम मे गाछी कलम छैक। पापा कहैत छलखिन एहि बेर आम खूब फड़ल छैक। गाछी मे कटहर आ जामु के गाछ सब सेहो छैक। फेर अपन पोखरियो छैक, कने अपनहुँ बनसी सँ माछ मारबैक आ फेर जाल खसबे करतैक। दू साल पहिने जखन गाम गेल छलियैक तखन बनसी सँ माछ मारब सिखने रहियैक। की मजा अबै छैक ? अपने माछ मारू, एकदम टटका टटका जीबैत छटपटाइत माछ सब, छोट पैघ सब प्रकारक। मम्मी कहै छलै छोटका माछक चोखा बनेतैक रोटी संग खाइ लेल। ई सब दिल्ली मे कहाँ भेटैत छैक ?”

“कहिया जेबही?”

“भरि जून रहबै तखन ने पाकल आम सबटा भेटतैक। मामागाम सेहो जेबै, नाना नानी सँ भेंट करबै। किछु दिनक लेल दरभंगा मे मौसाक डेरा आ पटना मे मामाक डेरा पर सेहो रहबै। खूब मजा एतै। पापा कें तँ छुट्टी नहिए हेतनि, बाबा औथिन गाम सँ हमरा आ मम्मी कें लेबा लेल। सबहक टिकट कटा गेल छैक, एसी टू टायर मे। जूनक अन्त मे पापा जेथिन हमरा सब कें अनै लेल।”

“मुदा स्कूल तँ बीस जून कें खूजि जेतैक। फेर पढ़ाइ नहि हर्जा हेतौक?”

“कने मने जे छुटतै से बाद मे तैयार कऽ लेबै। पापा कहलखिन प्रिंसिपल सँ बात कऽ लेथिन छुट्टीक लेल।”

“एखन मार्चो नहि बीतलैक अछि, तों सब जूनक टिकट कोना कटा लेलही ?”

“वाह रे बकलेल ! अरे लोक चारि मास पहिने सँ टिकट कटा रहल छैक। रेलवे तेहने नियम बना देने छैक। आब की टिकट भेटबो करतैक?”

प्रकाश आश्चर्य सँ समीरक गप सूनि रहल छल।

प्रकाश आ समीर करीब दश बरख उमेरक बच्चा। दूनू स्प्रिंगडेल पब्लिक स्कूल विकासपुरी मे कक्षा चारिक छात्र छल। मार्चक अन्त मे ई सब कक्षा पाँच मे चल जाएत।

प्रकाश गरीब रिक्शाचालकक बेटा मुदा पढ़बा मे खूब चन्सगर। विकासपुरीक एहि पब्लिक स्कूल मे ओकरा गरीबक लेल आरक्षित इ.डब्लू.एस. कोटा मे एडमिसन भेलैक। एडमिसन टेस्ट मे टॉप केने छल ओ।

समीरक पापा दिल्ली हाइकोर्ट मे सीनियर वकील। विकासपुरी मे अपन बंगला छनि। गाम पर सेहो नीक जमीन जथा, पोखरि झाँखरि, गाछी बिरछी सब किछु। समीरक एडमिसन ओहिना भेलैक जेना एकटा धनिक बच्चाक होइत छैक, मोटगर डोनेसन पर। स्कूल समीरक बंगला सँ मात्र आधा किलोमीटर, तैयो ओ कार सँ स्कूल अबैत जाइत छल।

प्रकाशक पापा उत्तमनगर सँ विकासनगरक बीच रिक्शा चलबैत आ विकासनगरक अन्तिम छोड़ पर एकटा झुग्गी मे रहैत।

एतेक अन्तर रहितो समीर आ प्रकाश मे दोस्ती छलैक। तकर दूटा कारण - समीर कें प्रकाशक बाजब भूकब सँ अन्दाज लागि गेल रहैक जे ईहो मिथिलेक लोक छी। आ तेज विद्यार्थी रहला सँ होमवर्क, क्लासवर्क मे मदति सेहो भेटि जाइत छलैक। आर्थिक असमानताक विकार एखन एहि दूनू बालमनक बीच प्रवेश नहि केने छलैक।

कार मे चढ़ै सँ पहिने समीर पुछि देलकै ‘‘तों की सोचलही ?’’

प्रकाश की उत्तर दितैक ? आइ तक गामक कोनो चर्चा ओ पापा मम्मीक मुहें नहि सुनने छल। एतबे कहलकै ‘‘पापा सँ पुछबनि।’’ आ विदा भऽ गेल छल पयरे अपन झुग्गी दिश। सब दिन स्कूल सँ किछु हटि कए ओकर बाप रिक्शा लेने ठाढ़ रहैत छलैक। स्कूल लग नहि अबैत छलैक। स्कूलक बच्चा सबकें ई तँ बूझल छलैक जे प्रकाश इ.डब्लू.एस. कोटा सँ आएल अछि मुदा ई नहि बूझल छलैक जे ओकर बाप रिक्शा चलबै छैक। ई बात ओ

अनेरे सब कें बुझबए नहि चाहैत छल तें बाप रिक्शा लऽ कए कने दूरे मे ठाढ़ रहैत छलैक। स्कूल सँ ओकर झुग्गी दू किलोमीटर सँ बेसी दूर। कहियो काल बाप नहियो अबैक तँ पूरा रस्ता पयरे चलऽ पड़ै ओकरा। कहियो बीच रस्ता पर सेहो भेटि जाइ।

आइ रिक्शा पर चढ़ैत देरी प्रकाश बाप कें पूछि देलकै ‘‘हमरो सबहक गाम छै ने ?’’

मोहन कें ई प्रश्न एकाएक चौंका देलकै। गाम ? ओ बूझिए नहि सकल जे एहन प्रश्न आइ ई किएक केलक। आन दिन रिक्शा पर चढ़ैत देरी प्रकाश पापा कें सुनबऽ लगैत छल किलासक खिस्सा पिहानी सब, कोन बच्चा होमवर्क नहि केने छल, ककरा टेस्ट मे कतेक नम्बर एलैक, ककरा पनिस्मेंट भेटलैक आदि बात करैत करैत ओ दूनू बापूत झुग्गी पहुँचैत छल। प्रकाश आन स्पोर्ट्स मे भाग नहि लैत छल मुदा दौड़ैक जतेक कम्पीटिसन होइ सब मे जरूरे भाग लैत छल आ किछु ने किछु इनाम जितबे करैत छल। एकरो चर्चा पापाक संग रिक्शा पर ओ करैत रहैत छल। मुदा आइ एकदम बदलल लगैत छल।

मोहन पहिने इसकुलिया गपसप नहि बूझैक। मुदा प्रकाशे सँ सुनैत सुनैत आब कने मने बूझऽ लागल छलैक। तहिना ओकरा अपना बेटा सँ पापा मम्मी सूनब नीक नहि लगै, ओकर इच्छा होइ ई बाबू माँ कहितए मुदा स्प्रिंगडेल पब्लिक स्कूलक बच्चाक लेल से सम्भव नहि भेलैक, अन्त मे ओ सब हारि मानि लेलक।

बच्चाक आकस्मिक प्रश्न जेना मोहन कें गाढ़ निन्न सँ जगा देलकै। ओ अपनहि जेना बच्चा भऽ गेल आ सुनबए लगलै ओकरा ‘‘हँ बौआ, गाम छै ने। मधुबनी जिलाक कनकटोली थाना मे माहीपुर गाम छै। एक कात कमला मैयाक धार आ दोसर कात हुनके छोटकी बहिन भुतही बलानक धार। धार मे खूब चुभकै छलियै हम सब। आ माछो मारैत छलियै। आसिन कातिक मास मे खेत सब सँ डोका बीछि अनैत छलियैक। डोकाक मासु बड़ स्वादिष्ट, तेल मसल्ला सेहो कमे लगैत। कतहु जाउ, नाओ पर चढ़िए कए जाउ। पहिने कनकटोली तखन लौकहा कि जयनगर। नाओ पर चढ़ै मे सेहो खूब मजा छलैक। माँगि पर ठाढ़ रहू आ किनार अबिते कूदि जाउ। सुखमास मे भुतही बलान पर लोक बाँसक चचरीक पुल बना दैत

छलैक मुदा बाढ़ि एला सँ पुल भासि जाइत छलैक। आब सुनै छिऐक कमला पर पुल बनि गेलैक अछि। गाम आ दिल्ली मे कतेक अन्तर छैक !''

प्रकाश सुनैत रहल मुदा समीरक मुहें गामक जे वर्णन सुनने छल ताहि सँ एकदमे भिन्न वर्णन एकर पापा कऽ रहल छलैक। किछु बात तँ बुझबो नहि केलकै। तैयो साहस कऽ कए बाजल ''हमहूँ जेबै गाम।''

मोहन एहि पर कोनो उत्तर नहि देने छलैक। गुमसुम भेल रिक्शा हँकैत झुग्गी पहुँचि गेल छल आ प्रकाश कें उतारि फेर चल गेल अपन काज पर।

प्रकाश गाम जेबाक बात फेर अपन मम्मी कें सेहो कहने रहै। मुदा ओहो परतारि कए छोड़ि देने छलैक।

राति मे जखन मोहन घर आएल तखन फेर बेटा एकर चर्चा केलकै। तै पर ओ पुछलकै ''ककरा मुहें सुनलही गाम जेबाक बात?''

ओ बता देलकै जे समीर ओकर संगी छैक, ओएह आइ कहै छलै जे गर्मी छुट्टी मे ओ गाम जेतै। ओकरा गाम मे आमक गाछी छैक, पोखरि छैक। ओ पोखरि मे माछ मारत आ जाल सेहो खसाओल जेतैक।

मोहन पुछलकै ''समीरक पापा की करै छथिन?''

''से तँ हमरा नहि बूझल अछि मुदा ओ कार सँ स्कूल अबैत जाइत अछि।''

''ओ सब धनिक लोक छैक, ओकरा सबहक देखौंस नहि करबाक चाही ने।''

''हम ओकरा सबहक देखौंस कहाँ करैत छी ? हम तँ अपन गाम जाए चाहैत छी।''

''अच्छा सोचबैक, एखन सूति रहऽ।''

''समीर कहै छलै जे ओकर पापा टिकट कटाइयो लेलखिन, आब टिकट भेटबो नहि करतैक।''

“ओकर गप छोड़ऽ ने। हम सब बड़का लोक जकाँ थोड़बे यात्रा करबै ?”

तखन बात एतहि खतम भऽ गेल छलैक आ प्रकाश सूति रहल छल मुदा ने मोहनक आँखि मे निन्न आ ने ओकर घरबालीक आँखि मे निन्न। एकटा एहन चिन्ता ओकरा दूनू कें झकझोड़ि देने छलैक जकरा बारे मे ओ सब पछिला दश बारह साल सँ सोचबे छोड़ि देने छल।

मोहन टूअर छल, एकटा पितिआइनि पोसने छलैक। ओकरा अपना कियो नहि, मोहने कें बेटा जकाँ पोसलकै। जहिया सँ हाथ पएर चलबैबला भेल मोहन, कतहु ने कतहु कोनो ने कोनो टहल टिकोड़ा करितहिं रहल। कने पैघ भेला पर लागि गेल गामेक जानकीबाबूक महींस चराबए। जानकीबाबूक ओतए दूनू साँझक बुतात आ किछु जलखै भेटि जाएल करै आ फाटल पुरान पहिरै ओढ़ै लेल। नगद नहि।

बाप माय मरबा सँ पहिनहिं ओकर बियाह करा देने छलैक। फेर जहिना बच्चे मे एकर बाप माय दूनू मरि गेलैक तहिना कनियाँक माय सेहो मरि गेलैक। ओकरा बापे पोसलकै।

पैघ भेल तँ नगदक काज पड़लैक। ओ चल गेल कनकटोली बजार पर बोड़ा उठबै लेल। ओतए नगद भेटि जाइ। कहुना बुतात काटि कए किछु बचा लैते छल।

अपनहु पैघ भेल आ कनियो समर्थ भेलैक। ससुर समाद देलकै गौना करा कए लऽ जाइ लेल। ओएह पितिआइनि सब जोगाड़ लगा देलकै आ एक दिन ओ अपना कनियाँ कें लेने चल आएल गाम। काज ओहिना ओ कनकटोली बजार मे करैत रहल। घरबाली घसबाहि कऽ कए आनि दैक, ओ घास बजार मे बेचि आनए। एक्काक घोड़ा लेल घास बिकेबा मे दिक्कत नहि होइक। किछु दिन एहिना चललैक। एहि बीच आबि गेलै एकटा बेटी।

भूमिहीन मजदूर परिवारक लेल गाम मे जिनगी काटब ओतेक आसान नहि छलैक। एहि बीच सुनलक बहुत लोक दिल्ली पंजाब जा रहल छलैक। ओ घरबाली आ बेटी कें सासुर पठा देलक आ अपने विदा भऽ गेल। कोनो ठेकनाएल जगह तँ रहैक नहि। पंजाब मे लोक खेती करबै, सुनने रहैक जे मालिक सब हफीम खोआ दैत छैक आ मजदूर सँ काज बेसी लैत छैक। ओ दिल्लीक टिकट कटेलक।

दिल्ली पहुँचबा मे कतेक कष्ट भेलैक, कोना पाकेटमारी भेलैक, बिना टिकट पकड़ा गेल, पुलिसक चक्कर मे पड़ल, कोना सिरीलाल देवदूत बनि कए एलैक, ओकरा छोड़ौलकै आ फेर कोना ओकरे बलें ओ रिक्शाबला बनि गेल तकर बड़काटा खिस्सा छैक। तकर बाद फेर सिरीलालेक संग ओ पहुँचि गेल उत्तमनगर।

उत्तमनगरक पाछू हस्तसाल गामक खेत मे लोक बसि रहल छलै। छिटफुट घर सब बनब शुरुए भेल छलैक। कने हँटि कए किछु गरीब सब झुग्गी सेहो बना रहल छल। लोक कें आधा पौना घंटा चलि कए उत्तमनगर आबए पड़ैक बस पकड़बाक लेल जे दिल्ली मे कतहु काज करै लेल जाएत। एहन जगह मे रिक्शाक सवारीक मांग नीक छलैक। सिरीलाल मोहन कें लेनहि आबि गेल एही नव इलाका मे आ दूटा झुग्गी ठाढ़ केलक, एकटा अपना लेल आ दोसर मोहन लेल। एहि बस्तीक नवका नाम पड़लैक विकासनगर। धनिकहाक विकासपुरीक कात मे गरिबहाक विकासनगर। झुग्गी भऽ गेलाक बाद मोहन गाम गेल आ परिवार कें लऽ अनलक। दिल्ली आबि गेला पर ओकर घरबाली सेहो विकासपुरीक फ्लैट सब मे काज करऽ लगलैक। गुजर जोगर आमदनी भऽ जाइत छलैक।

प्रकाशक जन्म दिल्लिए मे भेलैक। तकर बाद घरबाली मना कऽ देलकै। साफे कहलकै ‘‘एकसरुआ लोक हम कोना सम्हारब, कोना छऽ मास बैसि जाएब ? के सम्हारत छोट बच्चा आ कोना हम काज पर जाएब ?’’ मोहन मानि गेल रहैक। अपने जा कए ऑपरेसन करा लेलक। जेठकी बेटी कें डेंगू के बोखार धेलकै से नहिए छुटलै। बिना पैसा के कोनो अस्पताल भर्ती करै लेल तैयारे नहि भेलैक। सरकारी अस्पताल सब मे नीचा मैदान तक मरीज सब पसरल, कियो ककरहु देखनिहार नहि। बहुत बच्चा मरि गेलैक आ ओकरो बेटी नहिए बचलैक। तखन बेटा बड़ छोट छलैक।

गाम जेबाक बात सुनि कए मोहनक मोन जेना घबरा गेल छलैक। ओ एक दिन महेशबाबू कें पुछने रहनि ‘‘अहाँ सब गाम जाइतो छिऐक की?’’ महेशबाबू विकासनगर मे बीस गज जमीन मे दुतल्ला बना कए रहैत छलाह आ करोलबागक कोनो दोकान मे काज करैत छलाह। पूरा विकासनगर मे एहने बीसगज्जा घर मे रहनिहार लोक सब। कमे लोक पैघ घर मे रहैत।

पैघ घर मे रहनिहार मैथिल लोक सब आँगुर पर गनैबला। महेशबाबू यदाकदा ओकरा रिक्शा पर बैसैत छलखिन, खास कऽ कए साँझ कें घुरबा काल कहियो लेट भऽ जानि आ बड़ थाकल रहथि तखन। गोर बीसेक एहन मैथिल पसिंजर छलैक मोहन कें। गप सप सँ कने हेम छेम भऽ गेल छलैक ओकरा, भेंट भेला पर इहो कुशल छेम पुछि लैत छलनि ओ ओहो सब एकर हालचाल पुछि लैत छलखिन, खास कऽ कए प्रकाशक खबरि जानि लैत छलखिन।

महेशबाबू अपनहुँ मोहनक एहि प्रश्न पर चौंकि गेल छलाह। पछिला दश साल मे परिवारक संग एको बेर गाम नहि गेल छलाह, दू बेर एकसरे गेल छलाह - एक बेर भातिजक उपनयन मे आ दोसर बेर भगिनीक बियाह मे। से ओ उनटे मोहन कें पूछि देलखिन ‘‘एना किएक पुछै छह आइ ?’’ मोहन कने सकपका गेल, किछु कालक बाद कहलकनि ‘‘ओहिना बुझै लेल, की कहू प्रकाश एखन जिद लगा देने अछि जे गरमी छुट्टी मे गाम चलू’’।

‘‘बच्चाक बात छिऐक, अनठा दहक। गाम जाएब आब बड़ कठिनाह, खर्चा तँ जे से, कष्टो भोगि लेबह तैयो गाम पर अनचिन्हारे जकाँ रहबऽ आ सब एतहु ठकै लेल। गाम पर लोक कें लगै छै जे दिल्ली सँ जे अबैत अछि से रुपैयाक बोरा उठेने अबैत अछि। दिल्ली मे लोक कोना हाड़ पाँजर तोड़ि कए गुजर करैत अछि से तों अपनहि जनैत छऽ आ हमरो सब कें देखिते छह। गरीब लोक जे गाम छोड़ि दिल्ली आएल तकरा लेल दूनू ठाम आश्रम राखब कोना पार लगतैक ? धनिक लोकक बात अलग छैक, से एहन कतेक धनिक हेताह दिल्ली मे जे दूनू ठाम नीक बास रखने छथि ? आँगुर पर गनैबला। सेहो ततबे काल जाबत कि हुनकर बूढ़ा बूढ़ी जीबैत छथिन आ गाम सम्हारने छथिन। जखने ओ सब उठि जेथिन, हुनको लेल गाम बिलटि जेतनि से निश्चिते बूझह’’।

मोहन ई सब बात अपनहुँ बुझिते छल। अपना मोनक संतोषक लेल सुनि लेलक महेशबाबूक गप। लेकिन प्रकाश जिद पकड़ि लेने छलैक। दू दिन तीन दिन पर टोकि दैक ‘‘की विचार केलियै पापा ?’’

मोहनक चिन्ता बढ़ले जाइ। गाम छुटिए नहि गेलैक, सब सँ सम्पर्को टूटि गेलैक ने। ओहो बुढ़िया पितिआइनि जीबैत छैक की मरि खपि गेलैक सेहो खोज नहि लैत रहलैक। सएह हाल

सासुरोक। जाही बरख बेटी मरलैक, ओकर ससुर सेहो मरि गेलखिन। सराध मे गेल छल। तकर बाद पार नहिए लगलै। पहिने पावनि तिहारक अवसर पर सौ दू सौ पठा देल करै ओहि पितिआइन कें। सेहो किछु बरख पहिने छूटि गेलैक।

ओकरा देखले छैक आब कतेक गोटे उपनयन बियाह सबटा दिल्लिए मे कऽ रहल छथि। की बड़का लोक, की छोटका लोक ? ओकर एहने पसिंजर छथिन हरखूबाबू। एतहि विकासनगर मे दवाइक दोकान करैत छथि। तीनू भाइ आ एकटा बहिन सब दिल्लिए मे रहैत छथि। हुनको एक दिन पूछि बैसल ‘‘अहाँ सब तऽ गाम जाइत अबैत हेबैक बेसी काल ?’’ हरखूबाबू हँसऽ लगलखिन। फेर पुछलखिन ‘‘की बात जे गाम मोन परि गेलऽ आइ ?’’ मोहन की बजितए ? कहलकनि ‘‘ओहिना प्रकाश बजैत छल एहि बेर गाम जाइ, हम तँ बहुत दिन सँ नहि गेलहुँ गाम, कोन गाड़ी, कोन रस्ता से सब बिसरि गेलियैक। सोचलहुँ अहाँ सँ कने जानकारी लऽ ली।’’

‘‘जानकारी लेला सँ की भेटतहु ? ओना ट्रेन तँ आब दरभंगाक आगू मधुबनी जयनगर तक जाइत छैक मुदा गाम जाएब बहुत कठिन छैक।’’

‘‘अहाँ सब कतेक दिन पहिने गेल छलियैक ?’’

‘‘मोहन, तों बड़ सुधंग लोक छह। सूनह, दिल्ली मे अपना मिथिलाक सैकड़ा पाँचोटा एहन लोक नहि अछि जे दुइयो तीन साल पर गाम जाइत हो। बहुत भेलैक तँ काज उदेम मे एकसरे चल गेल। भागमन्त ओ अछि जकर पूरा परिवार दिल्लिए मे रहैत छैक। जकरा कोनो लत्ती गाम पर लागल छैक से कहबा लेल बढ़ा चढ़ा कए खूब कहतहु मुदा असली बात जे ओहो कनिते रहैत अछि। हम अपन की कहबहु ? सब गोटे तँ दिल्लिए मे छी। भागिनक उपनयन सेहो एतहि केलहुँ। गामे सँ चारि पाँच गोटे आबि गेल छलाह। आब तहिना होइत छैक। बूझह गंगा उनटे बहि रहल छथि।

मुख्य कारण छैक गाम मे एखनहु पर पैखानाक इन्तजाम एक्का दुक्का लोक केलक अछि। दिल्ली जकाँ ठाम ठाम पर सुलभ शौचालय तँ बनल छैक नहि। से धीयापूता एकदम्मे तैयार

नहि होइत अछि जेबा लेल। लोक गाम मे पैखाना बनाओत कि दिल्ली मे चूबैत छत ठीक कराओत ? दिल्ली मे कमे जगह मे जेना सब किछु बनि जाइत छैक तेना गाम मे बनबो नहि ने करतैक। फैल डीह चाही। कतऽ सँ औतैक ? आर बहुत बात छैक, की की कहबहु, आब हम सब मानि लेलियैक गाम माने दिल्लिए। देखिते छहक कतेक उल्लास सँ लोक आब एतहि सबटा पावनि तिहार कऽ लैत अछि। दिल्लीक छठि तँ आब पटनो सँ बेसी नामी भऽ गेलैक।

दिल्ली मे लोकक कोनो कमी छैक ? कोनो जातिक रहओ, ककरो बेटा बेटीक बियाह आब एतए भैए सकैत छैक। भैए रहल छैक। किछु बकलेल एखनहुँ गाम दिस दौड़ैत छथि वर अथवा कनियाँ तकै लेल मुदा खर्चा देखि ओहो पछतेबे करैत छथि।''

मोहन आरो बहुत किछु सुनलक। मार्च सँ मइ आबि गेलैक। बेटाक रिजल्ट बहरेलैक, किलास मे सेकण्ड केलक ओ, बहुत खुसी भेलैक। एहि दू मासक बीच ओ बहुत लोक सँ पूछा आछी केलक। सब विभिन्न तरहक जानकारी देलकै गामक बारे मे मुदा एतेक धरि सब बुझा देलकै जे गाम जेबाक विचार बतहपनी छैक, ओकरा त्यागि देबे नीक।

एहने बात पर मुकेशजी बाजल छलखिन ''हौ कोन बरबिघबा जोत अछि गाम पर जे दौड़ैत रहब ? से रहितए तँ किएक गाम छोड़ि दिल्ली अबितहुँ ? धन्य दिल्ली जे कहुना लोक कें गुजर चलैत छैक। तों रिक्शा चलबै छह आ हम सरकारी ऑफिस मे ड्राइवरी करैत छी। कोनो अन्तर नहि छैक। गामक दर्द ककरा नहि होइत छैक ? तखन जहिना हफीम खा कए लोक दर्द बिसरैत अछि तहिना काजक बोझ बना लोक गाम कें बिसरबाक कोशिश करैत अछि। ऑफिसक ड्यूटी खतम भेला पर बलजोरी मेगाकैबक ड्यूटी करैत छी। किएक ? ई नहि जे टाका बेसी भेटैत अछि, बस बाझल रहैत छी आ राति कें बारह बजे ततेक ने थाकल घुरैत छी जे निन्न आबि जाइत अछि, गाम घर सोचबाक झंझटि सँ बाँचि जाइत छी। हँ, रिटायर भेलाक बाद गामे रहबाक विचार अछि। पेंसन भेटत, बुढ़ारी गामे बिताएब।''

किछु एहने बात श्यामजी सेहो कहने छलखिन ''हौ गाम मे जनमलहुँ, पढ़लहुँ लिखलहुँ से गाम कोना बिसरबैक ? मुदा एखन बूझह जे नोकरीक बोझ सँ ततेक ने दाबल छी जे सबटा

भावना कें पीरी लागि गेलैक अछि जहिना कोनो ढेंगक तर दाबल दूबि कें होइत छैक। कहिया हरियेतैक से के कहलक ? गाम सँ हमहूँ सब बूझह भूमिहीने भऽ कए बहराएल छी। जेहो खेत पथार छल से कोसीक पेट मे। ओकर कोन आश ? आब कोसी पर बड़का पुल भेलैक, फोर लेन बनलैक तँ जरूरे गाम मे किछु विकास हेतैक। रिटायर भेलाक बाद गामे मे बसबैक।'' श्यामजी सेहो नेहरू प्लेस मे कोनो सेठक खाता बही सम्हारैत छथि।

मोहनक प्रश्न पर सबसँ बेसी भावुक भऽ गेल छलखिन सतीशबाबू। गामक चर्चा हुनका व्यथित कऽ देने छलनि। विवशता एहन जे दिल्ली छोड़ि नहि सकैत छलाह। एकेटा बेटा सेहो थलासीमियाक रोगी। हप्ता दू हप्ता पर ओकरा खून चढ़ैक। एहन स्थिति मे गाम कोना जेताह ? कहने छलखिन ''गाम कते हमरा भीतर तक पैसल अछि तकर वर्णन की करियहु ? दिल्ली मे हम तों ओहिना छी जेना पाकिस्तान सँ भागि आएल रिफ्यूजी सब। परिस्थितिए ओकरो अपन भूमि छोड़बा पर बाध्य केलकै आ हमरो तोरा। ओकरा लेल राजनीतिक परिस्थिति छलैक, हमरा तोरा लेल रोजगारक अभावक लचारी। कतबो सुखी लोक रहए दिल्ली मे, के अछि एहन जकरा गामक लेल कोंढ़ नहि फटैत छैक ? एतए मैथिली गीतनादक प्रोग्राम होइत छैक, जाइत छी, सुनैत छी मुदा ''स्वर्ग सँ सुन्दर मिथिला धाम'' बोल सुनैत हमरा रहल नहि जाइए, कानए लगैत छी। कहाँ गीतकार बोल बदलि दैत छथिन ''स्वर्ग सँ सुन्दर दिल्ली भेल''।

एहने एकटा प्रोग्राम मे एक बेर गेल रही। दरभंगा सँ एकटा नामी गबैया आएल छलाह। ओ नीक स्वर मे गौलनि ''आब छोड़ि ससुसारि कहाँ जेबै यौ सरकार, रामजी रहि जइयौ मिथिला नगरिया मे....''। तोंही कहऽ दिल्ली मे आ कि कलकत्ता मुम्बइ मे एहि गीत कें गेला सँ केहन लगतैक ? मिथिलाक कोनो गाम कोनो शहर मे गाओल जइतैक तँ छजितैक। मिथिला नगरियाक लेल आग्रह दिल्ली मे ! लोक कें सुनबा मे नीक लगैत छैक, कने कालक लेल लोक उड़ि कए गाम पहुँचि जाइत अछि, बस एतबे। गीत नादक प्रोग्राम शेष भेल आ सब गोटे स्वर्ग सँ च्युत भऽ कए खसि पड़लहुँ दिल्लीक प्रदूषण भरल सड़क पर।

सबटा छूटि गेल छैक लोक कें। गाम मे रही तँ भोर मे सब कोन सँ परातीक स्वर सुनबा मे आबए। तोंही कहऽ गाम मे भोर मे महींस पर जाइत छलह तँ पराती गबैत छलह की नहि ? आ दिल्ली मे कहियो रिक्शा पर पराती गाएल पार लगलहु ?'' बजैत बजैत सतीशबाबूक स्वर आर्द्र भऽ गेल छलनि। मोहन कें लागल छलैक जे आँखि सेहो नोरा गेल छलनि हुनकर, कारण जेबी सँ रुमाल बहार कऽ कए आँखिक कोर पोछने छलाह ओ।

सतीशबाबू दिल्ली मुन्सिपालटीक स्कूल मे टीचर छथि। साँझ कें दौड़ैत रहैत छथि जनकपुरी आ विकासपुरी मे ट्यूशन करै लेल। बेटा कें अस्पताल मोहनेक रिक्शा पर लऽ जाइत छथिन। एतेक भावुक विचार मोहन अनका मुहें नहि सुनने छल। आ ओकरा अपनहुँ गाम छोड़बा पर ग्लानि होमए लगैक। सत्ते पराती बिसरिए गेल ओ।

सतीशबाबू एकटा नीक बात जोड़ि देने छलखिन ''गाम हम जाएब मुदा रिटायर भेलाक बाद। दिल्लीक घर बेचि कए गाम मे नव डीह पर घर बान्हब आ तखन ओतुका बच्चा सब कें मुफ्त मे पढ़ेबैक''। ई बात मोहन कें नीक लागल रहैक।

एक दिन धखाइते फेर ओ सतीशबाबू कें पुछने छलनि ''देखियौ एतए पंजाब हरियाणाक लोक सब केहन सुखितगर अछि, हमरा सब सँ काज करबैत अछि आ अपने मालिक बनल मौज करैत अछि। गामो घर मे भीतर तक सुन्दर सड़क छैक। किएक नहि हमरो मिथिला मे एहन सम्भव छैक ? ओतए जँ विकास होइतैक तँ हम सब निश्चिते गाम घुरि जइतहुँ''।

सतीशबाबू किछु काल गुम्म रहलाक बाद बाजल छलाह ''सबटा स्वार्थी राजनीतिक लोकक कारण भेल छैक। तोरा नहि बूझल हेतहु जाबत हरियाणा पंजाब प्रान्तक भाग छल ताबत ई मिथिले जकाँ गरीब इलाका छल। एतुक्का लोक आन्दोलन केलक आ पंजाब सँ अलग हरियाणा राज्य बनलैक। लोक कहैक हरियाणा मे लोक भूखें मरि जेतैक मुदा से नहि ने भेलैक। आइ देखहक हरियाणाक दशा - की खेती बारी, की उद्योग धंधा, सब मे अव्वल।

एहन नहि जे एमहर स्वार्थी लोक नहि छैक, छैक मुदा समाजक काज सेहो भऽ जाइत छैक। हमरा मिथिला मे ढंग के नेता कियो नहि, सब छुटभैया। ककरो पटना दिल्ली मे हल्ला

करबाक साहस नहि छैक। यदि मिथिला राज बनि जाइ तँ सुधार सम्भव छैक मुदा ओहू लेल पैघ आन्दोलन करऽ पड़तैक। तकरा लेल जे राजनीतिक जागरण चाही से नहि भऽ रहलैक अछि। किछु लोक जगलाह अछि जरूर मुदा जाबत पूरा क्षेत्रक जनता नहि जागत आ सबहक सहयोग नहि हेतैक ताबत ई कोना सम्भव छैक ?''

मोहन कने मने हुनकर बात बुझने छल। ओकरा लागल छलैक जे यदि कोनो जोगाड़ लगितैक तऽ ओ गाम घुरिये जइतए।

दिल्ली मे मोहनक गौआँ सब बहुत छैक मुदा आन इलाका सब मे। तीन चारि गोटे ओकरे जकाँ रिक्शा चलबैत छैक दूर दूरक इलाका मे। लोचना आ दुखना रोहिणी मे, आ सुनरा बदरपुर इलाका मे। राति मे फोन केलकै सुनरा कें मोहन। हाल चाल बुझलाक बाद पूछि देलकै ''विचार होइत अछि एक बेर गाम देखितियैक। बहुत दिन भऽ गेल। चलमे तोहूँ ?''

''भाँग तँ ने पीने छें रे मोहना ?''

''से की ?''

''हमरा तोरा लेल आब कोनो गाम नहि छैक, एत्तहि खटबै आ एत्तहि मरबै। गाम गेनाइ मामूली बात बुझै छिही की ? पन्द्रह दिनक कमाइ मे टिकटो ने हेतौ। हम रिजर्व सीटक गप नहि कहैत छियौ, जेनरल डिब्बा के। फेर रस्ताक आन खर्च। तखन जयनगर सँ बसक भाड़ा। आ रहमे कतए ? एहन विचार कखनहु नहि आन मोन मे। कहबी पड़ि नै कर जे सब सखी गेलै झुम्मड़ि खेलाए लेल, लुल्ही कहलकै हमहूँ खेलेबै''। सुनरा एतेक जरूर बता देलकै जे मोहनक पितिआइनि बुढ़िया जीबैत छैक।

मोहन कखनहुँ कए सोचए जे बेकारे गाम छोड़लक। गामो मे कहुना गुजर चलिए जइतैक। खटए तँ कतहु पड़तैक लोक कें मुदा गाम मे तैयो बहुत ऐल फैल छलैक। सरकारी सस्ता अनाज आब भेटिते छलैक। बाध बोन अपन नहियो रहौ मुदा खुला जगह तँ छलैक, एना दिल्ली जकाँ साँस लेबाक तकलीफ तँ नहि ने छलैक ककरो। आ गरीब लेल ने अस्पताल

दिल्लीए मे छलैक आ ने गाम मे। आङ समाङ भेला पर गरीब लोक सब ठाम मरबे करैत छल, गाम रहओ कि दिल्ली। आब की गाम घूरल पार लगतै ?

सुनने रहै लोचना सँ जे आब गामो मे सड़क सब सुधरि रहलैक अछि आ ओतहु बहुत लोक टेम्पू चलबऽ लागल अछि। एहि बात सँ ओकरा गाम जाएब जरूरी बुझाए लगलैक। सोचलक जे देखि सुनि लेत तँ फेर ठीक सँ विचार कऽ सकत। प्रकाशक पढ़ाइ गड़बड़ेबाक डर छलैक मुदा पहिने देखि बूझि तँ लिअए।

पछिला दू साल सँ ओ किछु टाका जमा कऽ रहल छल जे बैंक लोन मिला कए टेम्पू कीन लेत। आब विकासनगरक विकास भऽ गेलैक, सड़क सब बनि गेलैक तँ सैकड़ो टेम्पू दौड़ए लगलैक। आब रिक्शाक ओतेक धंधा नहि रहि गेलैक, खाली बूढ़ आ बीमार छोड़ि कए कियो रिक्शा पर चढ़ए नहि चाहैत छल।

यदि गाम जाएत तँ ओही जमा पूँजी सँ निकालए पड़तैक। घरबाली एकर विरोध करैक। ओकरा लेल गाम जाएब बेकारेक झंझट बेसाहब छलैक। ने ककरो बियाह दान ने कोनो पावनि तिहार, ने आम ने कटहर, अनेरे हुड़बा छूबा लेल किएक लोक गाम जाएत? आ रहत कतए ओ सब ?

मइ के तेसर हप्ता मे प्रकाश फेर एक बेर चर्चा केलकै। आब स्कूल मे छुट्टी छलैक। यदि ओकरा सब कें गाम जेबाक छलैक तँ जल्दीए प्रोग्राम बनबए पड़तैक, स्कूल खूजि गेला सँ पहिनहि ओकरा घूरि जेबाक छलैक। ओकरा किछु नहि बूझल छलैक जे केहन गाम देखत। एतेक तँ निश्चित छलैक जे समीरक गाम जकाँ आम जामु कटहर नहिए भेटतैक मुदा की भेटतैक सेहो नहि बूझल छलैक। ओतए ओकरा झुग्गिए मे रहए पड़तैक की कोनो दोसर ढंगक घर छलैक तकरो कोनो अंदाज नहि छलैक। फेर पापा जे नदी सबहक चर्चा केलकै से केहन छैक ? नाओ पर चढ़बाक अवसर भेटतैक की नहि ? एही सब अनुभव लेबा लेल ओ गाम देखऽ चाहैत छल।

एक हप्ता तक घर मे एहि बात पर घमर्थन चलैत रहलैक। मोहन मोन बनबैत छल मुदा घरबाली नकारि दैक। अन्त मे मोहन अपन वीटो लगेलक आ अगिले दिन विदा हेबाक निश्चय केलक। पितिआइनिक लेल सारी किनलक। अपन सामानक छोटछीन मोटरी बन्हलक, प्रकाश अपन किताब सब सेहो लऽ लेलक। घरबाली बटखर्चाक सामान तैयार केलकै। अगिला दिन सबेरे विदा भऽ गेल नई दिल्ली टीसन कें कारण जेनरल डिब्बा लेल लाइन लगैत छलैक।

टीसन पर लोकक करमान लागल। मोहन अपनहुँ करीब दश बरखक बाद टीसन आएल छल। बेटा तँ पहिले बेर आएल छलैक। टिकट कटेलक। ओतेक भीड़ मे तीनू गोटे सम्हारि कए एक संगें रहब मुश्किल भऽ रहल छलैक। सूचना भेटलैक जे जयनगरक गाड़ी तीन नम्बर प्लैटफार्म सँ जेतैक।

लाइन मे तँ लागि गेल मुदा धक्कामुक्की चलिते छलैक। कहुना अपन जगह सम्हारने छल। ओ प्रकाशक हाथ पकड़ने आ प्रकाश दोसर हाथ सँ माय कें पकड़ने।

प्लैटफार्म पर गाड़ी लगबा सँ कनिये पहिने सूचना देल गेलैक जे गाड़ी तीन नम्बर पर नहि, सात नम्बर पर लगतैक। सुनैत देरी हड़बिड़रो मचि गेलैक। सब लोक दौड़ि गेल सात नम्बर प्लैटफार्म दिस, पुल पर चढ़ि कए जेबाक छलैक। विशाल रेला। धड़फड़ी मे पहिने एकाध टा बूढ़ पुरान खसलैक, ताहि सँ रस्ता सिकुड़ि गेलैक, किछु लोक तँ ओकरा छोड़ैत आगू बढ़ल मुदा पाछूक रेला एतेक जोड़गर छलैक जे के देखए नीचा मे की पड़ल छैक। लोक कें सम्हारैक लेल पुलिस आबि कए लाठी चलबए लगलैक। परिणाम उनटे भेलैक। बड़का भगदर मचि गेलैक। एही रेलमपेल मे मोहनक हाथ सँ प्रकाशक हाथ छूटि गेलैक। तकर बाद की भेलैक से कियो नहि बूझि सकल। तीन नम्बर प्लैटफार्म सँ सात नम्बरक बीच करीब सैकड़ो लोक नीचा मे खसल, कतेक अधमरू भेल, किछु के प्राण उड़िओ गेल, आ हाड़ पाँजर टुटलाहा घायलक तँ गिनतीए ने छलैक। लोक अपना समाङ कें ताकत कि गाड़ी पर चढ़त ? जेनरल डिब्बा मे बहुत कमे लोक चढ़ि पौलक। आनो डिब्बा मे हाल बेहाल छलैक। गाड़ी कें रोकि देल गेलैक।

मोहन बौआए लागल बेटा आ घरबाली कें तकै लेल। करीब एक घंटाक चक्कर लगेलाक बाद भेटलैक दूनू मुदा घरबालीक टाँग टूटि गेल रहैक, ओ चिचिआइत पड़ल छल आ बेटा डरें हबोढकार कनैत। ओकरा कने मने चोट लागल छलैक धक्कामुक्की मे ततबे। मोहन घरबाली कें उठेबाक कोशिश केलक मुदा ओ उठि नहि सकलैक। कोशिश करै तँ आर चिचियाए लगैक दर्द सँ। सब पसिंजर अपना अपना कें सम्हारबा मे लागल, सब ठाम आर्तनाद। करीब एक घंटाक बाद किछु एम्बुलेन्सक लोक, किछु रेलवेक कर्मचारी आ किछु स्वयंसेवी संस्थाक वोलन्टियर सब एलैक। घायल सब कें उठा कए नजदीकक अस्पताल मे पठबऽ लगलैक। मोहनोक घरबाली कें अस्पताल पहुँचा देल गेलैक।

जाँच भेला पर पता चललैक ओकर दहिना जाँघक हाड़ टूटि गेल छलैक। डाँड़ सँ नीचा पूरा पलस्तर कऽ देल गेलैक आ कहलकै घर लऽ जाइ लेल। दू मासक बाद पलस्तर कटतैक।

कहुना सब गोटे घुरैत गेल विकासनगरक अपन झुग्गी मे। प्रकाश एहि घटना सँ बहुत डरा गेल। ओ मायक दुर्घटना लेल अपना कें दोषी बूझऽ लागल। ओकरा मानसिक आघात लगलैक जेना। रहि रहि कए ओ कानऽ लागए। ओ कनैत कनैत बाप कें एतबे कहलकै ‘‘पापा, आब हम गाम नहि जेबै।’’ मोहन कें बच्चाक ई कहब फेर भीतर तक हिला देलकै। ओकर स्वर आर्द्र भऽ गेलैक। ओ प्रकाश कें छाती सँ सटा लेलक आ परतारैत बाजल ‘‘जेबै बौआ, जरूर जेबै गाम, कने तों पैघ भऽ जाह, तोरा गाम मे रहि ओकरा सुधारबाक छहु ने।’’

लेखक परिचय



जन्म: लौफा गाम (मधुबनी जिला) मे अक्टूबर 1948 मे।

भारत सरकारक परमाणु ऊर्जा विभागक अवकाशप्राप्त उत्कृष्ट वैज्ञानिक वर्तमान मे मैथिली लेखन आ गाम मे स्कूली छात्र-छात्रा कें प्रायोगिक विषयक प्रशिक्षण तथा कैरियर सम्बन्धी दिशानिर्देश मे समय बिता रहल छथि। जनसाधारण लेल सरल भाषा मे विज्ञान विषयक लेख हिनक विशेषता छनि। एकर अतिरिक्त ई उपन्यास, कथा, नाटक, हास्य-व्यंग्य, यात्रा वर्णन आदि लिखैत छथि। साहित्यक विभिन्न कृति कें मैथिली सँ अंग्रेजी आ अंग्रेजी सँ मैथिली मे अनुवाद सेहो करैत छथि। सम्प्रति एक दर्जन पुस्तक प्रकाशित छनि जाहि मे मणिपद्म लिखित भारतीक बिलाड़िक अंग्रेजी अनुवाद (Bharti's Cat) तथा अंग्रेजी मे मिथिलाक लोककथा (Folktales of Mithila) आ गोनूझाक खिस्सा (Gonu Jha of Mithila) सेहो सम्मिलित अछि।

हैदराबादक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा 'तिरहुत साहित्य सम्मान', साहित्यिकी सम्मान आ चेतना समिति, पटनाक सुलभ समाज सेवा पुरस्कार सँ सम्मानित छथि।